फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 315 प्रभात जयपुर, मंगलवार 17 जून, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBIT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

Takhta-i yakh, Parcha-i yakhi, Shaffaf, Sard, Khunuk kardan

Mukhlis recalls that when the Mughal Emperor Bahadur Shah (r. 1707-12) was in Lahore and went hunting in the early morning, he would find frozen water, and 'his eyes sometimes would catch the cracks in sheets of ice. On this, he used to wait and learn a moral.'

इज़रायल का ''आयरन डोम'' डिफेंस सिस्टम ईरान के ''मल्टीलेयर्ड'' हवाई हमलों के सामने असफल रहा

''आयरन डोम'' की इस पराजय से भारत में अचानक ''खतरे की घंटियाँ'' बज उठीं

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जून। ईरान द्वारा आयरन डोम में सेंध लगाना इस इज़राइली रक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता और मजबूती पर गंभीर सवाल खड़े करता है, विशेष रूप से ऐसी स्थिति में, जब उस पर तकनीकी रूप से सक्षम और समन्वित हमले किए जाएं। यह पहला अवसर था, जब आयरन डोम स्पष्ट रूप से व्याकुल सा नज़र आया। ईरान का सही तालमेल से किया गया हमला, जिसमें बैलिस्टिक मिसाइलें, क्रूज़ मिसाइलें और ड्रोन शामिल थे, इसके लेयर्ड डिफैन्स को चकमा देकर तेल अवीव के किरिया कंपाउंड सहित, कई शहरी और सैन्य लक्ष्यों को निशाना बनाने में सफल रहे।

कई सैन्य विश्लेषकों ने इस क्षण को एक ''रणनीतिक परिवर्तन बिंदु'' कहा है, अर्थात वह समय, जब किसी सिस्टम या संगठन को ऐसे बदलाव का सामाना करना पड़े, जो उसके भविष्य की दिशा व सफलता को प्रभावित कर दे। पर इसका मतलब यह नहीं कि आयरन डोम पूरी तरह विफल हो गया,

- भारत ने सदा इज़रायल के ''आयरन डोम'' सिस्टम पर पूरा भरोसा कर, इस सिस्टम के कई अवतार, जैसे, बराक सरफेस-टू-एयर मिसाइल सिस्टम, स्पाइडर एयर डिफैंस सिस्टम, आदि, खरीदे थे तथा शत्रु देश के हवाई हमले को घटिया मानते हुए चैन की नींद सो रहा था।
- ''आयरन डोम'' में छेद होने से यह भी साबित हुआ कि किसी भी ''डिफैंस सिस्टम'' पर पूरा भरोसा करके निश्चिंत हो जाना, कोई अक्लमंदी का काम नहीं है।
- प्रभावशाली सुरक्षा के लिए आयातित डिफैंस सिस्टम, (जैसे आयरन डोम) चाहे कहीं से, विदेश से, इज़रायल, अमेरिका, रूस आदि से आयातित हो, उसका स्वदेशी ''आर.एण्ड डी.'' वैपन सिस्टम से समन्वय होना जरूरी है। उदाहरण के लिए, डी.आर.डी.ओ. द्वारा भारत में विकसित आकाश व क्यू.आर.एस.ए.एम. डिफैंस सिस्टम ने पाकिस्तान के हवाई हमले, जिसमें लड़ाकू विमान व ड्रोन भारी संख्या में शामिल थे, को नाकाम किया था।
- निरंतर आर.एण्ड डी. ही भारत को कुछ सुरक्षा प्रदान कर सकती है।

इसने अब भी बड़ी संख्या में हमलों को विफल किया, लेकिन इसकी एक प्रमुख कमजोरी उजागर हो गई है, वो यह कि यह प्रणाली मूलतः छोटी रेंज के, कम मात्रा में होने वाले रॉकेट हमलों से निपटने के लिए बनाई गई थी, जो कि हमास और हिज़्बुल्लाह द्वारा किये जाते हैं, न कि ईरान जैसे बड़े राष्ट्र द्वारा किए जा रहे उच्च मात्रा और बहु-दिशात्मक हमलों से।

भारत, ने इज़राइल से कई रक्षा प्रणालियाँ, जैसे सतह से हवा में मार करने वाली, मिसाइल प्रणाली बराक, एयर डिफेंस सिस्टम स्पायडर, हेरोन यूएवी, हारोप लुटेरिंग म्यूनिशन और फाल्कन एडब्ल्यूसीएस खरीदी हैं, यह एक गंभीर पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता पैदा करता है। भारत के समक्ष भी इज़राइल की तरह जटिल सुरक्षा खतरे हैं, जिनमें परमाणु संपन्न पड़ोसी चीन और पाकिस्तान तथा कई अतिवादी समूह शामिल हैं। यह सेंध दर्शाती है कि इज़राइली प्रणालियाँ, भले ही ''एसिमेट्रिकल'' (असंयमित या असंतुलित) युद्ध में प्रभावी रही हों, परंतु तकनीकी रूप से सक्षम शत्रु के साथ पूर्ण युद्ध में वे पूर्ण सुरक्षा नहीं दे सकतीं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आरएएस मुख्य परीक्षा स्थगित करने की याचिका पर सुनवाई नहीं हुई

जयपुर, 16 जून। आरपीएससी की ओर से मंगलवार से शुरु होने वाली आरएएस मुख्य परीक्षा-2024 को हाईकोर्ट में याचिका दायर कर चुनौती दी गई। आकाश मिश्रा व दो अन्य ने याचिका दायर कर मुख्य परीक्षा को स्थगित करने की गुहार की है। याचिकाकर्ताओं ने अवकाशकालीन न्यायाधीश मनीष शर्मा के समक्ष प्रकरण की सुनवाई सोमवार को ही करने की गुहार की थी, लेकिन अदालत ने सुनवाई से इनकार कर दिया।

याचिका में अधिवक्ता तनवीर अहमद ने बताया कि आरपीएससी से 17 और 18 जुलाई को आरएएस भर्ती-

- याचिका में कहा गया है कि 2023 की भर्ती प्रक्रिया पूरी नहीं हुई। उसके पूरे होने तक 2024 की परीक्षा स्थगित की जाए।

2024 की मुख्य परीक्षा का आयोजन कर रही है, जबकि अभी तक आरएएस भर्ती-2023 की भर्ती प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है। वर्तमान में, इस परीक्षा के साक्षात्कार चल रहे हैं। ऐसे में, बीते साल की इस परीक्षा की प्रक्रिया पूरी होने तक आरएएस-2024 की मुख्य परीक्षा को स्थगित किया जाए।

याचिका में यह भी कहा गया कि प्रदेश के दोनों उपमुख्यमंत्री, एमएलए और एमपी मुख्य परीक्षा को स्थगित करने की सिफारिश कर चुके हैं। इस आधार पर परीक्षा स्थगित होने के निर्णय की प्रतीक्षा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रंप, इज़रायल-ईरान के बीच में भी युद्ध विराम कराने को लालायित

पर, ईरान कतर व ओमान को मध्यस्थ बनाना चाहता है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जून। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने रविवार को कहा कि वह ईरान और इज़रायल के बीच जारी युद्ध को समाप्त करने के लिए मध्यस्थता के अपने प्रयासों को लेकर आशावादी हैं, ठीक उसी तरह, जैसे उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच शांति प्रयास किए थे। इस बीच, ईरान ने ओमान और कतर जैसे क्षेत्रीय देशों से मध्यस्थता के लिए संपर्क किया है।

ईरान और इज़रायल के बीच सैन्य टकराव शुरू होने के लगभग 48 घंटे के भीतर, सीमित लेकिन केंद्रित कूटनीतिक प्रयास शुरू हो चुके हैं, जिनका उद्देश्य इस टकराव को और बिगड़ने से रोकना और अंततः कोई समाधान निकालना है।

अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने घोषणा की,

''इज़रायल और ईरान के बीच जल्दी ही शांति होगी'' और दोनों देशों को ''समझौता करना चाहिए, और वे करेंगे भी।''अपने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में ट्रंप ने कहा, ''इस समय बहुत सारे कॉल और बैठकें हो रही हैं। मैं बहुत कुछ

- जैसा कि विदित है, ट्रंप ने दावा किया था कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान के बीच ''सीज़फायर'' करवाया था।
- सऊदी अरब भी परोक्ष रूप से मध्यस्थता के प्रयास में जुड़ना चाह रहा है।
- ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने भी विदेशी राजदूतों से बातचीत करते हुए कहा कि ईरान ''नेगोशिएटिंग टेबल'' पर आकर, जैसा कि ट्रंप ने कहा है, अपनी न्यूक्लियर गतिविधियों पर नियंत्रण करने को तैयार है। मगर, अमेरिका को इज़रायल के हवाई हमलों को भी रोकना पड़ेगा।

करता हूं लेकिन मुझे कभी श्रेय नहीं मिलता, कोई बात नहीं, लोग तो समझते हैं। मिडिल ईस्ट को फिर से महान बनाएंगे।''

इस बीच, जैसे ही इज़रायल ने ईरान पर अपने हमलों का दायरा बढ़ाया, तेहरान ने कतर और ओमान से राजनयिक माध्यमों के जरिए संपर्क किया है और क्षेत्रीय मध्यस्थों से हस्तक्षेप कर बातचीत फिर से शुरु कराने का अनुरोध किया है। यह जानकारी रविवार को कई इज़रायली मीडिया संस्थानों ने इज़रायली सरकारी सूत्रों के हवाले से दी है। उन्हीं इज़राइली सरकारी सूत्रों के अनुसार, ईरान ने कतर और ओमान से अमेरिका तक यह संदेश पहुंचाने को कहा है कि वह संघर्षविराम पर बातचीत के लिए तैयार है, या फिर अमेरिका इज़रायल को हमला रोकने के लिए कहे। वहीं, सऊदी अरब भी कथित तौर पर इस संघर्ष को शांत करने के लिए गुप्त कूटनीति में सक्रिय है।

ईरान के विदेश मंत्री अब्बास

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सोनिया गांधी अस्पताल में भर्ती, हालत स्थिर

सोनिया गांधी को रविवार की रात पेट की तकलीफ के कारण सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराया गया था

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जून। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को रविवार रात पेट संबंधी समस्या के चलते सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती कराया गया था। सोमवार को उनकी स्थिति स्थिर बताई गई। डॉक्टरों की विशेष निगरानी में उनका इलाज चल रहा है और फिलहाल चिंता की कोई बात नहीं है। इससे पहले, उन्होंने शिमला में अपनी नियमित मैडिकल जाँच करवाई थी।

सर गंगा राम अस्पताल के चयरमैन डॉ. अजय स्वरुप ने इस बात की पुष्टि की तथा कहा, ''श्रीमती सोनिया गांधी को रात 9:00 बजे सर्जिकल गैस्ट्रोएंटरोलॉजे विभाग में पेट की समस्या के कारण भर्ती किया गया। फिलहाल उनकी हालत स्थिर है और डॉक्टरों की टीम उनकी सावधानीपूर्वक निगरानी कर रही है।''

अठहत्तर वर्षीय वरिष्ठ नेता

- सर गंगाराम अस्पताल के चैयरमैन डॉ. अजय स्वरूप ने कहा कि सोनिया गांधी को रात में सर्जिकल गैसट्रोएन्टेरोलॉजी विभाग में भर्ती कराया गया था। डॉक्टर्स की टीम उनकी निगरानी कर रही है, फिलहाल उनकी हालत स्थिर है।
- गत दिनों जब सोनिया गांधी शिमला में थीं तब भी उनकी तबियत कुछ बिगड़ गई थी और उन्हें जाँच के लिए शिमला के इंदिरा गांधी मैडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ले जाया गया था, तब उनका ब्लड प्रैशर बढ़ा हुआ पाया गया था।

सोनिया गांधी, जो अब भी कांग्रेस पार्टी में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, ने इससे पहले हिमाचल प्रदेश में चिकित्सीय सलाह ली थी। 7 जून को उन्हें मामूली अस्वस्थता के बाद शिमला के इंदिरा गांधी मैडिकल कॉलेज और अस्पताल (आईजीएमसी) ले जाया गया था, जहाँ उनका नियमित स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

मुख्यमंत्री के प्रमुख सलाहकार (मीडिया) नरेश चौहान ने उस समय स्पष्ट किया था कि उन्हें एहतियात के तौर पर आईजीएमसी लाया गया था।

उन्होंने कहा, वे कुछ मामूली समस्याओं के कारण, नियमित जाँच के लिए आई थीं। डॉक्टरों ने उनकी जाँच की और सब कुछ सामान्य पाया।''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मई में बेरोजगारी दर बढ़कर 5.6 प्रतिशत हुई

नयी दिल्ली, 16 जून। देश में मई 2025 में बेरोजगारी की दर बढ़ कर 5.6 प्रतिशत हो गयी है।

केंद्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय ने सोमवार को यहां जारी श्रम बल सर्वेक्षण - मई 2025 में कहा कि अप्रैल 2025 में बेरोजगारी की दर 5.1 प्रतिशत रही थी

- सोमवार को जारी लेबर फोर्स सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, अप्रेल में बेरोजगारी दर 5.1 प्रतिशत थी जो बढ़कर 5.6 प्रतिशत हो गई है।

जो मई में बढ़ कर 5.6 प्रतिशत हो गयी है।

मंत्रालय ने बताया कि संबंधित सर्वेक्षण में 15 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों को शामिल किया जाता है। मई 2025 के सर्वेक्षण के लिए 7511 गांवों और उप नगरों को शामिल किया गया। इसमें 89 हजार 372 परिवार रहे। कुल तीन लाख 79 हजार 600 लोगों से बात की गयी।

1,500 कश्मीरी विद्यार्थी तेहरान के ''वॉर ज़ोन'' में फंसे हुए है

ये विद्यार्थी, तेहरान में मैडिकल की पढ़ाई कर रहे हैं, डॉक्टर बनने के लिए

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जून। पश्चिम एशिया में इज़राइल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव और युद्ध की स्थिति के बीच, भारत ने ईरान में फंसे लगभग 1,500 कश्मीरी छात्रों, जिनमें अधिकांश तेहरान और उसके आसपास मैडिकल की पढ़ाई कर रहे हैं, की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए तत्काल राजनयिक प्रयास शुरू किए हैं।

अधिकारिक सूत्रों के अनुसार, ईरानी सरकार ने भारत को आश्वासन दिया है कि संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में फंसे भारतीय नागरिकों, विशेष रूप से छात्रों के लिए, सुरक्षित निकासी का मार्ग तैयार किया जा रहा है। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास ईरानी अधिकारियों के साथ मिलकर निकासी और अस्थायी आश्रय की व्यवस्था में सक्रिय रूप से जुटा है।

इस संकट ने जम्मू-कश्मीर में परिजनों के बीच गहरी चिंता पैदा कर दी है। नेशनल कॉन्फ्रेंस के लोकसभा सांसद आगा सैयद रूहुल्लाह ने सैकड़ों चिंतित

- भारत सरकार इन विद्यार्थियों की हिफाज़त व उन्हें वहाँ से सुरक्षित निकालने के लिए प्रयासरत है।
- ईरान ने भी भारत सरकार को विश्वास दिलाया है कि ईरान भी पूरी तरह इसी कोशिश में लगा हुआ है कि कैसे इन विद्यार्थियों के लिए ''सेफ पैसेज'' की व्यवस्था करें, जिससे वे अपने देश पहुँच सकें।

अभिभावकों की ओर से भावनात्मक अपील की है और भारत सरकार से अनुरोध किया है कि वह राजनयिक प्रयास तेज़ करे और हर संभव कदम उठाए, ताकि फंसे हुये युवाओं की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने कहा, ''सरकार को तुरंत सक्रिय हो जाना चाहिए। ये छात्र घर से दूर, एक युद्ध क्षेत्र के बीच फंसे हुए हैं और उनकी सुरक्षा राष्ट्र की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।''

प्राप्त जानकारी के अनुसार, अधिकांश छात्र तेहरान के पास स्थित हुज्जत दोस्त अली छात्रावास में रह रहे हैं, छात्रावास ऐसे क्षेत्र के पास स्थित है, जो सैन्य कार्यवाही तेज होने पर प्रभावित हो सकता है। चिकित्सा छात्रों के अलावा, कई कश्मीरी युवा उद्यमी और व्यापारी भी ईरान में हैं, जो विभिन्न व्यावसायिक और शैक्षिणक गतिविधियों में लगे हुए हैं।

खासतौर से कश्मीर घाटी के श्रीनगर और अन्य हिस्सों में छात्र परिवारों में गहन चिंता का माहौल है। अभिभावक बता रहे हैं कि वे अपने बच्चों के साथ नियमित संपर्क में हैं, लेकिन संचार में बाधाएं, आपूर्तियों की कमी, और हवाई हमलों की आशंका के चलते छात्रों का भय बढ़ता जा रहा है। श्रीनगर-निवासी एक अभिभावक मुश्ताक अहमद ने कहा, ''हम हर दिन अपने बेटे से बात करते हैं, लेकिन उसकी आवाज़ में डर बढ़ता जा रहा है। हम सरकार से अपील करते हैं, कृपया हमारे बच्चों को घर वापस लाएं।''

विदेश मंत्रालय ने इस संकट को स्वीकार किया है और सूत्रों के अनुसार, एक आपातकालीन योजना पर काम किया जा रहा है, जिसमें वहाँ से निकलने के लिये सुरक्षित मार्गों की पहचान, आवश्यकता पड़ने पर भारतीय नागरिकों की एयरलिफ्टिंग, और क्षेत्र में सहयोगी देशों से समन्वय शामिल हैं। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास ने भारतीय नागरिकों तथा विद्यार्थियों के लिए एडवाइज़री भी जारी की है, जिसमें घर के अंदर रहने, भीड़-भाड़ वाले स्थानों से बचने, और दूतावास से लगातार संपर्क में रहने की सलाह दी गई है।

चूँकि भू-राजनीतिक स्थिति अस्थिर बनी हुई है, आने वाले दिन निकासी अभियानों के लिए निर्णायक होंगे। भारत की प्रतिक्रिया न केवल उसकी राजनयिक दक्षता की परीक्षा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्र.मंत्री मोदी को मिला सायप्रस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान

निकोसिया, 16 जून। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सोमवार को यहां साइप्रस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से अलंकृत किया गया। साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलिडेस ने राष्ट्रपति महल में प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत किया और द्विपक्षीय बैठक के बाद एक संक्षिप्त

- सायप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलिडेस ने ''द ग्रैंड क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ मकारियोस-3'' से मोदी को अलंकृत किया।

समारोह में साइप्रस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'दि ग्रैंड क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ मकारियोस-3' से अलंकृत किया।इस मौके पर मोदी ने कहा कि यह किसी नरेन्द्र मोदी का नहीं बल्कि 140 करोड़ भारतीयों का सम्मान है और वह भारत के नागरिकों की ओर से पूरी विनम्रता से इस सम्मान को स्वीकार कर रहे हैं।

'बार-बार निरुत्साहित करने के बावजूद वरिष्ठ अधिवक्ता क्यों ग्रीष्मावकाश में सुप्रीम कोर्ट पैरवी करने आते हैं?'

सुप्रीम कोर्ट ने वरिष्ठ अधिवक्ताओं के इस आचरण पर भृकुटि तानी व कटाक्ष किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 16 जून। सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर वरिष्ठ अधिवक्ताओं से अपील की है कि वे गर्मी की छुट्टियों के दौरान कोर्ट में पेश न हों, ताकि युवा वकीलों को केस लड़ने का अधिक अवसर मिल सके। सोमवार को कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ताओं की उपस्थिति पर असंतोष जताया।

न्यायमूर्ति संदीप मेहता और न्यायमूर्ति प्रसन्ना बी वराले की अवकाश पीठ ने यह टिप्पणी उस समय की, जब वरिष्ठ अधिवक्ता मुकुल रोहतगी आज ऐमटैक समूह के प्रवर्तक अरविंद धाम की ओर से अदालत में उपस्थित हुये। धाम ने मनी लॉण्डरिंग केस में अन्तरिम जमानत दिये जाने का अनुरोध किया था।

कोर्ट ने सुनवाई के दौरान, इस प्रकरण में

- सुप्रीम कोर्ट का मानना है कि ग्रीष्मावकाश के दौरान जब कोई मुकदमा सुप्रीम कोर्ट की ''वैकेशन बैंच'' में लगता है, यह मौका होता है, युवा वकीलों, एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड को बहस करने का, पर, वैकेशन बैंच के समक्ष अगर, फिर वरिष्ठ अधिवक्ता ही आते हैं तो वो युवा वकीलों का ''मौका'' छीनते हैं, जो उचित नहीं है।
- वैकेशन बैंच ने सोमवार को यह टिप्पणी उस समय की, जब, मुकुल रोहतगी अपने क्लाइंट को जमानत दिलवाने के लिए बैंच के सम्मुख पेश हुए।
- बैंच ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय बैंच जमानत के लिए दायर इस अर्ज़ी को पहले ही रद्द कर चुकी है। अतः, अब वरिष्ठ अधिवक्ता वैकेशन बैंच के समक्ष पुनः अपनी अर्जी पेश कर रहे हैं, यह उचित नहीं है।
- मुकुल रोहतगी ने अपनी जमानत की अर्जी वापस लेने का प्रयास किया।

रोहतगी की उपस्थिति के सिलसिले में मौखिक रुप से कहा, ''हमें समझ नहीं आता कि छुट्टियों में वरिष्ठ वकील क्यों पेश हो रहे हैं। इस कोर्ट ने पहले भी इस पर टिप्पणी की है।''

यह पहला अवसर नहीं है, जब सुप्रीम कोर्ट ने वरिष्ठ वकीलों से अवकाश काल में मामलों की बहस से दूर रहने की बात कही है।

जून 2023 में न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की पीठ ने कहा था कि ग्रीष्मकालीन छुट्टियों के दौरान, एडवोकेट-ऑन-रिकॉर्ड या जूनियर वकीलों को अपने केस प्रस्तुत करने का, तथा उनमें बहस करने का अवसर मिलना चाहिए।

मई 2024 में भी न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति संजय करोल की पीठ ने यही भावना दोहराई थी तथा कहा था कि वरिष्ठ वकीलों को कोर्ट के अवकाश के दौरान, बार के युवा सदस्यों को मुकदमों में बहस करने को अवसर देना चाहिये। जस्टिस करोल ने उस समय कहा था, ''हम चाहते हैं कि युवा बार आगे बढ़े, अवकाश का उद्देश्य भी यही था - युवा अधिवक्ताओं को मंच देना।''

पिछले महीने भी न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति एससी शर्मा की पीठ ने यही राय व्यक्त की थी कि वरिष्ठ वकीलों को गर्मियों की छुट्टियों में कोर्ट में होने वाली सुनवाइयों व बहस से दूर रहना चाहिए।

हालांकि सोमवार को कोर्ट ने वरिष्ठ अधिवक्ता रोहतगी की उपस्थिति पर सवाल उठाया और कहा कि वे कोर्ट के अवकाश के दौरान, केस में बहस करने क्यों आये हैं, लेकिन अंततः कोर्ट ने उनकी संक्षिप्त दलीलें सुन लीं।

रोहतगी ने कहा कि उनके मुवक्किल पिछले 11 महीनों से हिरासत में हैं और उनकी नियमित जमानत याचिका फरवरी 2025 से दिल्ली

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

करोना संक्रमण से 11 मरीजों की मौत

नयी दिल्ली, 16 जून। देश में पिछले 24 घंटों के दौरान करोना संक्रमण से 11 और मरीजों की मौत होने से इस वायरस से मरने वालों की कुल संख्या 108 पहुंच गयी और 119 सक्रिय मामले घटने के साथ कुल सक्रिय मामले 7264 हो गये हैं। इससे

- इसी बीच एक अच्छी खबर यह है कि करोना के एक्टिव केसों में मामूली गिरावट आई है। रविवार को करोना के एक्टिव केस 7383 थे जो सोमवार को घटकर 7264 रह गए।

पहले रविवार को करोना के एक्टिव केसों की कुल संख्या 7383 थी।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से आज जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले 24 घंटों में कोराना के संक्रमण से केरल में सात,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

असफलता नहीं, अपितु निकृष्ट ध्येय ही अपराध है। –जे. आर. लावेल

हादसा-दर-हादसा, न कोई जिम्मेदार न किसी को सजा

गत चार दिनों में देश में तीन बड़े हादसे हुए– पहला, 12 जून 2025 को अहमदाबाद से लंदन जाने वाले एयर इंडिया के विमान के क्रैश होने से 241 यात्रियों एवं लगभग 60 अन्य व्यक्तियों की दर्दनाक मौत, दूसरा हादसा केदारनाथ जाने वाले हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने से पायलट समेत सात यात्रियों की मृत्यु और तीसरा हादसा पुणे शहर में पुल के टूटने से लगभग 30 पर्यटक नदी में बहने का, जिनमें से तीन के मृत्यु की पुष्टि। आइए, हम इन पर एक-एक कर विचार करें।

12 जून 2025 को अहमदाबाद से लंदन जाने वाला एयर इंडिया का विमान एआई 171 बोइंग ड्रीम लाइनर 787 उड़ान भरने के 2 मिनट बाद ही दुर्घटनाग्रस्त होकर क्रैश हो गया और इसके कारण विमान में सवार 242 व्यक्तियों में से 241 की मृत्यु हो गई। इसके अलावा मेडिकल हॉस्टल और उसके आसपास के क्षेत्र में रहने वाले लगभग 60 लोगों की भी मृत्यु हो गई। ये मलबे में दबकर अथवा विमान में लगी आग के कारण जलने से मौत का शिकार हुए।

न्याय संहिता के अनुसार एक व्यक्ति की हत्या करने पर दोषी को आजीवन कारावास अथवा फांसी की सजा होती है। इस विमान हादसे में लगभग 300 व्यक्तियों की मृत्यु हुई, किंतु किसी को दोषी माना जाकर सजा दी जाने की संभावना, पूर्व अनुभव के आधार पर नगण्य है। भारत सरकार ने इस हादसे की जांच के लिए उच्च स्तरीय समिति बना दी है जो तीन माह में अपनी रिपोर्ट देगी। ऐसा ही हर हादसे के समय होता है। जांच होती है, मुआवजा दिया जाता है, रिपोर्ट आती है, किंतु न किसी की जिम्मेदारी तय होती है और न किसी को सजा मिलती है। लोग अगले हादसे के इंतजार में लग जाते हैं।

विमान हादसे में मारे गए डॉ प्रतिक जोशी का पूरा परिवार था जो लंदन में बसने के लिए इस विमान से जा रहा था। इसी हादसे में भाई-बहन शुभ और शगुन मोदी भी मृत्यु के शिकार हो गए, जो घूमने के लिए लंदन जा रहे थे। एक व्यक्ति जिसकी कोर्ट मैरिज दो दिन पहले ही हुई थी वह भी हादसे का शिकार हो गया, जबकि उसकी शादी कुछ समय बाद समारोह पूर्वक होनी थी। मारे गए प्रत्येक परिवार की एक दर्दनाक कहानी है जिसे उनके परिजन जीवन पर्यन्त कभी भूल नहीं पाएंगे। हां, यह अवश्य है कि सरकार द्वारा इसे भी अन्य हादसों की तरह एक और हादसा साबित कर दिया जाएगा जिसके लिए कोई दोषी नहीं ठहराया जाएगा एवं न किसी को सजा दी जाएगी। यही वह कारण है जिससे ऐसे हादसे रुकते नहीं हैं।

जिम्मेदारी तय न होने वाले कुछ हादसों का उल्लेख करना उपयुक्त होगा।

बिजली के झूलते तारों से संपर्क में आने पर बसों में करंट से अनेक लोग झुलसने से मर गए, किंतु इसके लिए किसी को दोषी नहीं ठहराया गया एवं न किसी को सजा दी गई। इसे हादसा माना जाएगा या किसी विद्युत अभियंता के द्वारा की गई हत्या क्योंकि उसने अपना कर्तव्य का निर्वहन नहीं किया?

मोटरसाइकिल पर जाने वाला व्यक्ति सड़क पर बैठे हुए किसी सांड से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो जाए और उसकी मृत्यु हो जाए तब भी किसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा, न नगर निगम के किसी व्यक्ति को इसके लिए सजा मिलेगी।

सड़क पर स्ट्रीट लाइट के अभाव में प्रकाश व्यवस्था न होने से अंधेरे में वाहन चलाते हुए यदि कोई वाहन चालक खड्डे में गिरकर चोटिल हो जाए या मर जाए तो भी उसके लिए कोई जिम्मेदार नहीं है। यही कहा जाता है कि यह विधि का विधान है और परिजन भी इसे अपना भाग्य मानकर, थक- हार कर बैठ जाते हैं।

अस्पताल में किसी व्यक्ति को गलत ब्लड ग्रुप का खून चढ़ाने से उसकी मृत्यु हो जाए फिर भी डॉक्टर, कर्मचारियों या अस्पताल प्रशासन को दोषी मानकर किसी को सजा दी गई हो, ऐसी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

लगभग दो साल पहले जयपुर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भांकरोटा के पास गलत कट देने के कारण टैंकर और बस में टक्कर के कारण विस्फोट होने से कई व्यक्ति झुलस कर मर गए। यह जानकारी नहीं है कि इस लापरवाही के लिए किसी की जिम्मेदारी निर्धारित की जाकर उसे दंडित किया गया हो।

लंबे समय तक सड़क चौड़ी करने के बाद, तारों को हटाने के बाद भी कई महीनों तक खंभे, बीच में ही गड़े रहते हैं। इन खंभों से अंधेरे में टकराकर यदि कोई व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त होकर अपनी जान से हाथ धो बैठे, तो क्या उसके लिए किसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए? जिम्मेदार नहीं ठहराए जाने की यही प्रवृत्ति ऐसी दुर्घटनाओं को प्रोत्साहित करती है।

हाल ही में जयपुर में एक ज्वेलर की फैक्ट्री के सेफ्टी टैंक में सफाई कर रहे श्रमिकों में से चार की जहरीली गैस के कारण मौत हो गई। इसे प्राकृतिक आपदा नहीं कहा जा सकता। इसके लिए क्या उन जिम्मेदार व्यक्तियों जिन्होंने अपने मजदूरों को सेफ्टी टैंक में उतरने के लिए बाध्य किया, के विरुद्ध हत्या का प्रकरण दर्ज नहीं होना चाहिए?

एयर इंडिया के दुर्घटनाग्रस्त वायुयान के वॉइस रिकॉर्डर से मिली प्रारंभिक जानकारी से पता लगता है कि चालक ने यह संदेश दिया था–मे डे... मे डे....मे डे..नो पावर...नो थ्रस्ट...गोइंग डाउन..."। क्या इस प्रकार की स्थिति आने के लिए विमान कंपनी या मेंटेनेंस करने वाले किसी व्यक्ति की कोई जिम्मेदारी नहीं है? लगभग ढाई सौ लोगों को इतनी लंबी यात्रा पर ले जाने के पहले क्यों नहीं सभी प्रकार के सुरक्षा मानदंडों की जांच की गई?

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि विभिन्न हादसों में किसी उच्च अधिकारी या मंत्री की जिम्मेदारी तय न किया जाना ही इस प्रकार के हादसे को रोकने में असफल होने का प्रमुख कारण है। आशा की जानी चाहिए कि इस बार ऐसा नहीं होगा और उच्च स्तर पर बैठे दोषी व्यक्तियों की जिम्मेदारी तय की जाएगी एवं उन्हें हत्या के आरोपी की तरह दंडित किया जाएगा। जांच रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाएगा।

यह उल्लेखनीय है कि एयर इंडिया को डायरेक्टर जनरल, सिविल एविएशन द्वारा गत साल में सुरक्षा के पूर्ण उपाय न करने एवं पायलटो की उपयुक्त ट्रेनिंग नहीं होने और विभिन्न तकनीकी खामियों के लिए एयर इंडिया के सी ई ओ कैंपबेल विल्सन को अनेक बार नोटिस दिए गए। संतोष जनक जवाब न मिलने के कारण एयर इंडिया पर जनवरी 2024 में 30 लाख रुपए, मार्च, 2024 में 80 लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया गया। यदि सुरक्षा मानकों की पूर्ति न होने के कारण डीजीसीए द्वारा इस एयरलाइंस का लाइसेंस निलंबित या रद्द कर दिया जाता तो फिर आधी-अधूरी सुरक्षा व्यवस्था के साथ यह विमान अहमदाबाद से उड़ान नहीं भर पाता और तब शायद यह हादसा नहीं होता। किसी यांत्रिक कमी के कारण कोई उपकरण समय पर सही तरह काम नहीं करे तो इसके लिए विमान कंपनी को दोषी माना जाना चाहिए। यदि विमान के उड़ान से पूर्व सुरक्षा मानकों की पालना सुनिश्चित नहीं की गई, तो उसके लिए जिम्मेदार लोगों को दोषी क्यों नहीं करार दिया जा सकता?

यह बताया गया कि एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया, डायरेक्टर, जनरल सिविल एविएशन एवं इनके अधीनस्थ विभागों में में अनेक पद रिक्त पड़े हैं, जिनके कारण आवश्यक सुरक्षा जांच में कोताही होना स्वाभाविक था। यही ड्रीमलाइनर हवाई जहाज उसी दिन प्रातः दिल्ली से अहमदाबाद आया था और उसके बारे में यात्रियों ने शिकायत की थी कि एयर कंडीशनर और प्रकाश व्यवस्था उपयुक्त नहीं थी। कहा जा सकता है कि इन कमियों का सुरक्षा से कोई संबंध नहीं है, किंतु यह तो स्पष्ट है कि उड़ान से पूर्व विमान की सारी व्यवस्थाओं की जो जांच हो जानी चाहिए थी, उसमें कहीं लापरवाही बरती गई थी। सरकारी संस्थाओं में जिनके ऊपर पर्याप्त संख्या में कर्मचारियों को लगाने की जिम्मेदारी है, क्या उनकी कोई जिम्मेदारी नहीं है? गृहमंत्री अमित शाह ने तो दुर्घटना स्थल पर यह कह दिया कि यह मात्र दुर्घटना है। हमें यह अंतर समझना होगा कि मानव द्वारा बरती गई लापरवाही के कारण होने वाली दुर्घटना, दुर्घटना नहीं है। वह हत्या की श्रेणी में आता है, जिसके लिए दोषियों को कड़ा दंड दिया जाना चाहिए।

सरकार ने जांच समिति को तीन माह में रिपोर्ट देने हेतु कहा है। तीन माह का समय बहुत लंबा होता है। तब तक शायद इस दुर्घटना को भुला दिया जाएगा। केवल उन परिवारों को यह दुःख जीवन भर सालता रहेगा, जिन्होंने अपने परिजनों को इसमें खोया है।

15 जून, 2025 को केदारनाथ में हेलीकॉप्टर क्रैश होने के पीछे यही कारण था कि हेलीकॉप्टर चलाने वाली कंपनियों ने न सुरक्षा का कोई ध्यान रखा, न पायलट कितने घंटे काम कर रहे हैं, इस पर सरकार की एजेंसियों ने कोई ध्यान दिया। हेलीकॉप्टर चलाने वाली कंपनियों का उद्देश्य केवल मात्र यात्रियों से अधिकाधिक पैसे वसूल करना रहा। 3000 रुपए के टिकट के लिए 25000 तक दलालों के माध्यम से वसूल किए जा रहे थे। यदि इसके लिए कोई एस ओ पी (स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर) होता और उसकी पूरी पालना की जाती, तो निरंतर होने वाली ऐसी दुर्घटनाएं नहीं होतीं और पर्यटकों को बेमौत नहीं मरना पड़ता। इसे भी संभव है, एक हादसा बता कर हेलीकॉप्टर कंपनी फिर पैसे कमाने में जुट जाएगी।

15 जून को ही पुणे में इंद्रायणी नदी पर बने पुल के टूटने से अनेक लोग बह गए जिनमें से चार की मौत हो गई। इस पुल को बहुत पुराना और जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होना बताया गया है। यदि वह पुराना था और चलने लायक नहीं था तो, उसे बंद क्यों नहीं किया गया? क्या इसके लिए कोई जिम्मेदार नहीं है?

हादसों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है, एक वे, जो मनुष्य के नियंत्रण से बाहर हैं एवं केवल पूरी तरह प्राकृतिक आपदा हैं जैसे भूकंप, आकाश से बिजली गिरना आदि। दूसरे वे, जो मानव निर्मित हैं जैसे सड़क में खड्डे होना, बिजली के झूलते तार होना, किसी भी वायुयान की समय पर सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त और पर्याप्त जांच न होना, व्यक्ति को सेफ्टी टैंक में उतारना, नाव में बैठे व्यक्तियों का लाइफ जैकेट के अभाव में डूब कर मर जाना। इनके लिए जिम्मेदार व्यक्तियों का कृत्य किसी भी दृष्टि से क्षम्य अपराध नहीं हैं। ऐसे प्रकरण में व्यक्ति विशेष की जिम्मेदारी तय की जाकर उसे दंड दिया जाना आवश्यक है। केवल छोटे कर्मचारियों, अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराने से भी काम नहीं चलेगा। इसके लिए जब तक बड़े अधिकारियों और मंत्रियों आदि को जिम्मेदार मानकर कर उनको दंडित नहीं किया जाएगा, तब तक इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकना संभव नहीं होगा।

नैतिकता तो वैसे भी आजकल के राजनीतिज्ञों में बची ही नहीं है। आजकल लाल बहादुर शास्त्री जैसे नेता तो है नहीं, जिन्होंने केवल एक रेल दुर्घटना के कारण रेल मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। यहां तो देश के सबसे बड़े हादसे में 300 व्यक्तियों के मारे जाने के बावजूद न तो सिविल एविएशन मंत्री ने इस्तीफा दिया एवं न इस महत्वपूर्ण अवसर पर प्रधानमंत्री ने देश को संबोधित कर कड़ी कार्यवाही का आश्वासन दिया।

ऐसे विमान हादसों में जिम्मेदारी से बचने का सबसे आसान तरीका यह होता है कि पायलट को दोषी बता दिया जाए, क्योंकि पायलट की तो मृत्यु हो चुकी है। उसका कोई बयान भी नहीं आ सकता। ऐसा करके मामले को रफा-दफा कर दिया जाता है।

यह उल्लेखनीय है कि एयर इंडिया का अधिग्रहण टाटा ग्रुप ने रतन टाटा के जीवन काल में किया था किंतु कुछ ही समय बाद रतन टाटा का स्वर्गवास हो गया। इस बात का केवल अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि रतन टाटा जीवित होते तो क्या वे सुरक्षा मानकों में इस प्रकार की कोताही बर्दाश्त करते?

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि विभिन्न हादसों में किसी उच्च अधिकारी या मंत्री की जिम्मेदारी तय न किया जाना ही इस प्रकार के हादसे को रोकने में असफल होने का प्रमुख कारण है। आशा की जानी चाहिए कि इस बार ऐसा नहीं होगा और उच्च स्तर पर बैठे दोषी व्यक्तियों की जिम्मेदारी तय की जाएगी एवं उन्हें हत्या के आरोपी की तरह दंडित किया जाएगा। जांच रिपोर्ट को सार्वजनिक किया जाएगा। कहीं ऐसा न हो कि फिर वही कहानी दोहराई जाए कि हादसा हुआ, जांच हुई, मुआवजा मिला और फिर उसे भुला दिया गया। यदि ऐसा हुआ तो यह उपरोक्त लिखित तीनों हादसों में मारे गए व्यक्तियों के परिजनों के घाव पर नमक छिड़कने जैसा ही होगा। यदि एक बार उच्च स्तर पर जिम्मेदार व्यक्तियों को हत्या के आरोपी की तरह सजा दे दी गई तो भविष्य में सुरक्षा के काम को अत्यंत गंभीरता से लिया जाएगा और इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति से भी बचा जा सकेगा। जवाब देही की संस्कृति को बढ़ावा देना होगा ताकि विभिन्न मानव निर्मित हादसों का शिकार होकर निर्दोष लोग अपना जीवन न खोएं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

"वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" से जल संरक्षण को नई दिशा मिल रही है

नवीन कुमार आनंदकर

राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है, जो अपनी भिन्न-भिन्न भौगोलिक छटाओं के साथ प्रकृति की शुष्कता में अपने रहवासियों की जीवटता के बल पर उत्सव, उल्लास, परंपरा व संस्कृति के असंख्य रंगों से रंगा हुआ है। इन्हीं रंगों में से एक रंग प्रदेश की जल के प्रति आस्था व उसके संरक्षण को लेकर विकसित की गई परंपरागत विधियां हैं। पानी की महत्वता यहां की लोकोक्ति "घी ढुले म्हारो, कुछ न जासी थारो, पानी ढुले थारो जी बळे म्हारो" में भी दृष्टिगत होती है। इसीलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में शुरू किया है- "वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान"। इस अभियान के माध्यम से प्रदेश में जल संरक्षण को नई दिशा दी जा रही है। बूंद-बूंद को मोती के समान सहेजने की हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत रही है। यही विरासत हमें जल संरक्षण की सबसे बड़ी सीख देती है। बरसात और पानी का आना राजस्थानी लोक जीवन में मंगल और उत्सव का सूचक है। इसी से वर्षा ऋतु को लेकर असंख्य लोकगीत राजस्थान में हैं। कृषि से जुड़े त्योंहार, वर्षा से जुड़ी लोकोक्तियां पानी के महत्व और संरक्षण से जुड़ी परंपराएं व आस्था राजस्थान की जल संचयन संस्कृति को दर्शाती हैं। हमारे पुरखों की भांति यदि हम वर्षा जल संचयन को लेकर सतर्क नहीं हुए तो भविष्य में भू-जल संकट का सामना हमारी नियति बन जाएगा। वैश्विक स्तर की बात करें तो दुनिया की एक-चौथाई आबादी जल संकट से जूझ रही है। प्रदेश में वर्षा की कमी तथा भू-जल के सीमित भंडारों के दृष्टिगत नई तकनीकों से युक्त वर्षा जल संरक्षण पद्धितयों के साथ ही पारंपरिक विधियां भी उपयोगी हैं, इनमें प्रमुखतः इस प्रकार हैं-

बावड़ी :- बावड़ियों का निर्माण मुख्य रूप से जल संरक्षण के लिए ही किया गया था। यह एक प्राचीन तकनीक थी, जो पानी के भंडारण और उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। राजस्थान में आज भी कई प्रसिद्ध बावड़ियां हैं, जो अपनी वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जानी जाती हैं।

टोबा :- नाड़ी के समान आकृति वाला जल संग्रह केन्द्र 'टोबा' कहलाता है। इसमें ढलान नीचे की ओर होता है, जिससे वर्षा जल का इसमें संग्रहण हो जाता है।

कुंड :- इसका निर्माण मुख्यतः मरुभूमि में किया जाता है। रेतीले इलाकों में वर्षा जल को संग्रहित करने की यह प्रमुख विधि रही है। इसके अतिरिक्त पहाड़ पर निर्मित किलों, घरों के आंगन, मंदिरों तथा खेतों में भी बारिश के पानी को इकट्ठा करने के लिए कुंड का निर्माण किया जाता है।

खड़ीन :- जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा विकसित पारंपरिक जल संचयन संरचना है। यह राजस्थान की शुष्क जलवायु में कृषि के लिए उपयोग की जाती है। इसमें एक लंबी, मिट्टी का बांध होता है, जो ढलानों के पार बनाया जाता है, ताकि बारिश के पानी को इकट्ठा किया जा सके। इनके अलावा कुई, जोहड़, तालाब, झालरा आदि जल सरंक्षण की विधियां भी प्रदेश के विभिन्न भागों में अन्य नामों से प्रचलित रहीं हैं।

जल संकट राज्य की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। राज्य के अधिकांश हिस्से कृषि पर निर्भर हैं और कृषि के लिए जल की आपूर्ति के बिना उत्पादन को बढ़ाना असंभव हो जाता है। इसके अलावा बढ़ती आबादी और औद्योगिकीकरण ने भी जल संसाधनों की मांग को और बढ़ा दिया है। वर्षा जल संचयन, आधुनिक सिंचाई तकनीकों का उपयोग, जल पुनर्चक्रण और जल प्रबंधन उपायों के माध्यम से जल संकट को टाला जा सकता है। एक संयुक्त प्रयास ही जल संकट से निपटने के लिए कारगर सिद्ध हो सकता है। अगर समय रहते सही कदम उठाए जाएं तो जल संकट की चुनौती से निपटा जा सकता है, जिससे कृषि, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलेगा। नवाचार व प्राचीन पद्धितयों के समागम तथा जल संरक्षण के सामूहिक प्रयासों के माध्यम से राजस्थान में जल संकट की स्थिति में सुधार संभव है। इन उपायों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए जन चेतना सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कुशल मार्गदर्शन में प्रदेश में जल संरक्षण जागरूकता के लिए "वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान" का शुभारंभ किया गया। इस अभियान का उद्देश्य आम लोगों को एकजुट और जागरूक करके जल संरक्षण को जनआंदोलन बनाना है। हमारे नदी, तालाब, कुएं, बावड़ी व अन्य जलस्त्रोत हमारी आने वाली पीढियों और मानव सभ्यता के आधार स्तंभ हैं। यह हमारा अनिवार्य दायित्व है कि हम इस महत्वपूर्ण अभियान में सच्चे हृदय से जुड़ें और अभियान के उद्देश्य, जो न सिर्फ मानव जाति, अपितु पशु-पक्षी, वृक्ष व वनस्पति के लिए भी कल्याणकारी हैं, को शत-प्रतिशत प्राप्त करें। इनके साथ ही, जल संरक्षण व संचयन की नवीन विधियों पर अनुसंधान वप्राचीन विधियों के संवर्धन का भी निश्चयात्मक प्रयास हमारी ओर से निरंतर होना चाहिए। युगदृष्टा संत रहीम ने भी कहा है- "रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून। पानी गए न उबरै, मोती, मानुष, चून।।"

नवीन कुमार आनंदकर,
जनसम्पर्क अधिकारी,
राजस्थान लोक सेवा आयोग।

नई और पुरानी पीढ़ी के बीच द्वंद्व और प्रतिद्वंद : एक विचारणीय प्रश्न!

सुनील दत्त गोयल

आज, हमारे भारत के बारे में एक कड़वा सच लिखने बैठा हूँ। बात है नई जमाने के लोगों और पुरानी पीढ़ी के बीच के फासले की। दोनों की सोच, समझ और ज़िंदगी देखने का नज़रिया कितना अलग हो गया है, ये गौर करने वाली बात है। ये भी देखना ज़रूरी है कि इस सोच के फर्क का हमारे समाज पर क्या असर पड़ रहा है? फायदा क्या है, नुकसान क्या हो रहा है?

पुरानी पीढ़ी का नज़रिया:– वो लोग जिन्होंने गुलामी का दौर देखा, आज़ादी की लड़ाई देखी, देश का बंटवारा झेला, और फिर उसके बाद धीरे-धीरे बढ़ते भारत को देखा... उनकी ज़िंदगी बिल्कुल अलग हालात में गुज़री। उनके मूल्य बने थे त्याग, संयम और सबके भले की सोच पर। कम संसाधनों में गुज़ारा करना, मुश्किलों का सामना करना उनकी आदत में शुमार था। उनकी जड़ें परंपरा और रिवाज़ों में गहरी थीं। समाज को कैसे बांधे रखें, ये उनकी पहली प्राथमिकता थी।

नई पीढ़ी का रुख:– इधर नई पीढ़ी, जो टेक्नोलॉजी और ग्लोबलाइजेशन के बीच पली-बढ़ी है, उसकी सोच और ख्वाहिशें बिल्कुल बदल गई हैं। ये ज्यादा महत्वाकांक्षी हैं, आज़ाद ख्याल हैं और अपनी निजी ज़िंदगी को तरजीह देते हैं। इंटरनेट के ज़रिए दुनिया भर का अनावश्यक एवं अवांछनीय ज्ञान जिसकी उन्हें कोई आवश्यकता नहीं है वह उनकी मुट्ठी में है, जिससे उनकी सोच का दायरा काफी बदल गया है या बड़ा हुआ है। ये एक्सपेरिमेंट और नई चीज़ों को पसंद करते हैं। समाज में बदलाव को लेकर खुले दिमाग के हैं।

कहाँ दिखता है ये फर्क?

ये फर्क हर जगह दिख जाता है:–

1. पढ़ाई-लिखाई: पुराने लोगों के लिए शिक्षा का मतलब था ज्ञान और चरित्र बनाना। आज के युवा इसे करियर बनाने और पैसा कमाने का ज़रिया मानते हैं।

2. नौकरी-धंधा: पहले स्टेबिलिटी और सुरक्षा सबसे बड़ी बात थी। आज का युवा जोखिम उठाकर अपना काम शुरू करना (स्टार्टअप) चाहता है।

3. परिवार और रिश्ते: पुरानी पीढ़ी संयुक्त परिवार और सामाजिक ज़िम्मेदारियों को तवज्जो देती थी। नई पीढ़ी अपनी आज़ादी और प्राइवेसी, अपने ख्याल अपने विचार और अपने फैसलों को भले ही वह आज के इस खतरनाक युग में खरे न उतरते हो और केवल मात्र उनको दिखावे का भ्रम हो, मैं सही हूं और मैं ही ठीक हूं, को ज्यादा अहमियत देती है।

समाज पर क्या असर?

इस बदलाव का समाज पर गहरा असर पड़ा है। एक तरफ, नई पीढ़ी की आधुनिक सोच और टेक्नोलॉजी की जानकारी ने देश को तेज़ी से आगे बढ़ाया है। नए उद्योग खुले हैं, नौकरियों के रास्ते बने हैं, भारत का दुनिया में दबदबा बढ़ा है। लेकिन दूसरी तरफ, एक कड़वी हकीकत ये भी है कि पुरानी पीढ़ी के सिद्धांतों और मूल्यों को नज़रअंदाज़ करने से समाज में कई बुराइयाँ आई हैं। पारिवारिक बंधन ढीले पड़े हैं। 'मैं' और 'मेरा' की भावना बढ़ी है। सहनशीलता, बड़ों का आदर, उनके अनुभव की क़दर करने की समझ - ये सब कहीं खो सा गया है। मेरा निजी तजुर्बा और मानना यही है कि आज की पीढ़ी के बहुत से लोग मौके का फायदा उठाने वाले (अवसरवादी) बन गए हैं। और ऐसा करके वो खुद का ही नुकसान कर रहे हैं। उन्हें बुजुर्गों का तजुर्बा एक ऐसी पूंजी है, जो मुफ़्त में मिल सकती है, लेकिन वे उसे पाना ही नहीं चाहते। अपने आप को ही सबसे ज्यादा जानकार समझने की ग़लतफहमी में जी रहे हैं।

आज का युवा मानता है कि जो वो जानता है, वो उसके भविष्य के लिए काफी है। पर असलियत इससे उलट है। जिन लोगों ने 30-40-50 साल की ज़िंदगी के तजुर्बे देखे हैं, उन्होंने भारत में हर तरह के बदलाव को अपनी आँखों से देखा है।

परिवारों की नई मुसीबतें:–

पिछले 20-25 सालों में मैंने परिवारों में कुछ नए तरह के झगड़े भी देखे हैं:–

1. माँ-बाप की खींचतान का फायदा: अगर पति-पत्नी में तनाव रहता है या उनकी सोच अलग है, तो बच्चे इसका पूरा फायदा उठाते हैं। जिस काम के लिए उन्हें लगता है पापा मना कर देंगे, वो मम्मी से कहते हैं। और अगर लगता है मम्मी नहीं मानेंगी, तो पापा से पूछते हैं। नतीजा? माँ-बाप में झगड़ा हो जाता है, और बच्चे चैन से अपनी मनमर्जी करते रहते हैं।

2. बच्चों को गलत तरीके से अपने पाले में करना: कई बार माएँ बच्चों को ये सोचकर ज्यादा लाड़-प्यार देने लगती हैं कि बुढ़ापे में यही काम आएंगे। वो बच्चों को पिता की बात न मानने के लिए उकसाती हैं। बच्चों का सामने या पति के पीठ पीछे वह अपने पति की बुराइयां करने में नहीं चूकती और तरह-तरह के लालच देकर, हर ग़लत-सही ख्वाहिश पूरी करके, बच्चों को अपनी तरफ कर लेती हैं। नतीजा? बच्चे अपने पिता से दूर हो जाते हैं। उनके दिल में ये बैठ जाता है कि पापा ही उनके दुश्मन हैं, जबकि हकीकत बिल्कुल अलग होती है। क्योंकि सोचिए न... हर बाप की ख्वाहिश होती है कि उसके बच्चे उससे भी ज्यादा काबिल बनें, ज्यादा सब्र वाले बनें, ज्यादा समझदार बनें, दौलत और शोहरत पाएँ और देश-दुनिया में नाम रोशन करें।

तो रास्ता क्या है?

साफ है कि दोनों पीढ़ियों के बीच एक सेहतमंद बातचीत और समझदारी पैदा करनी ही होगी। हमें बुजुर्गों के तजुर्बे और ज्ञान का सम्मान करना सीखना होगा। साथ ही, नई पीढ़ी की सोच और उसके सपनों को भी समझना होगा। सिर्फ तभी हम एक ऐसा मजबूत और खुशहाल भारत बना पाएंगे जहाँ पुरानी बातों और नई सोच का सही मेल हो। यही एक रास्ता है आगे बढ़ने का।

–सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री,
पूर्व उपाध्यक्ष, जयपुर स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड,
जयपुर, राजस्थान

राजस्थानी भाषा का मुद्दा भावनात्मक मुद्दा है जो पहचान और स्वाभिमान दोनों से जुड़ा हुआ है

राजेन्द्र जोशी

विश्वविद्यालयों में राजस्थानी भाषा के स्थाई विभाग खुले

भारत का संविधान प्रत्येक राज्य को अपनी भाषा नीति तय करने की स्वतंत्रता दे रहा है। तमिलनाडु सहित अनेक राज्यों में भाषाई विवाद सामने आया है। साथ ही वहां की सरकारें भी भाषा के प्रति सदैव संवेदनशील रही है। हम चाहते हैं कि हमारे देश की प्रांतीय भाषाओं में किसी भी प्रकार का भाषाई वैमनस्य न हो, इसके लिए राजस्थान सदैव प्रयास करता रहा हैं।

अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान की सरकार भाषा के सवाल पर कभी भी संवेदनशील नहीं रही। राजस्थान के लोगो की आवाज को अनदेखा ही किया जाता रहा हैं। राजस्थान विधानसभा ने राजस्थानी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की सिफारिश केंद्र सरकार को भेज कर हाथ पर हाथ धरे बैठ गया। बड़े खेद का विषय है कि आजादी के 78 वर्ष बाद भी राजस्थान अपनी भाषा नीति बना नहीं पाया। भाषा के विकास में केवल भाषा की बात नहीं होती बल्कि वहां की संस्कृति, सभ्यता और लोक को जानने-समझने में और जोड़ने का काम करती हैं। राजस्थान जैसे शांत प्रदेश में कभी भी भाषाई मांग के आधार पर कड़ा विरोध अथवा आंदोलन नहीं हुआ। राजस्थानी सदैव राजस्थान सरकार एवं भारत सरकार से राजस्थानी भाषा को मान्यता देने का शांतिपूर्ण आग्रह करते रहे है। हिंदी को अनिवार्य बनाने के भारत सरकार के प्रयासों को राजस्थान ने कभी विरोध नहीं किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत प्रस्तावित त्रि-भाषा फार्मूले में भी राजस्थानी भाषा को शामिल नहीं किया। बावजूद इसके भी बड़े आंदोलन की रणनीति नहीं बनी। त्रि-भाषा फार्मूले की वकालत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 करती है। जबकि राजस्थान मानता है कि राजस्थानी- हिंदी और अंग्रेजी शिक्षा और रोजगार के लिए पर्याप्त हो सकते हैं। जबकि राजस्थानी भाषा को तीसरी भाषा के रूप में अथवा राजस्थान में दूसरी राजभाषा बनाने की मांग लगातार होती रही हैं।

राजस्थानी भाषा समाज के लोगों को आपस में जोड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम रही हैं। विवाद का कारण तो तब हुआ है जब राजस्थानी भाषा को राजस्थान सरकार दूसरी राजभाषा नहीं बना रही और ना ही केंद्र सरकार ने संविधान की आंठवी अनुसूची में मान्यता देने का काम किया। राजस्थानी और हिंदी भाषा के बीच बेहद समृद्ध परंपरा रही हैं। यह बात समझ से परे है कि सरकारे आखिर क्यों नहीं चाहती कि राजस्थानी भाषा को राजस्थान में पढ़ाया जाए। राजस्थान के लिए यह बड़ी विडम्बना है कि हिंदी से बहुत पहले की भाषा और राजस्थान की मातृभाषा पढ़ने के लिए आन्दोलन करने पड़ते हैं। प्रदेश की जमी पर स्थापित राजस्थान के समस्त विश्वविद्यालयों में राजस्थानी भाषा के स्थाई विभाग तक नहीं हैं।

राजस्थान में ही राजस्थानी की यह दुर्दशा निराशाजनक एवं दुर्भाग्यपूर्ण हैं।

इस डिजिटल युग में सामाजिक जरूरतों और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए जब जरूरी माना जाने लगा तो ऐसे में राजस्थानी भाषा को मान्यता नहीं मिलने से लगभग बारह करोड़ राजस्थानी डिजिटल युग में सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का मुकाबला कैसे कर सकेंगे। राजस्थानी भाषा को मान्यता के बिना अनेक लोग आर्थिक रूप से और सामाजिक रूप से डिजिटल दुनिया से बाहर रह सकते हैं। यह असमानता को भी बढ़ा सकता हैं और सामाजिक तनाव भी पैदा कर सकता हैं। 12 करोड लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा को सामाजिक दूरी बनाए रखना उचित नहीं है। राजस्थानी भाषा का मुद्दा भावनात्मक मुद्दा है जो पहचान और स्वाभिमान दोनों से जुड़ा हुआ हैं। प्रधानमंत्री की मेट्रो ट्रेन के सफर के दौरान छात्रों से बातचीत याद आती है जब खुद प्रधानमंत्री ने सह यात्री छात्रों से भाषा संबंधी जानकारी ली एवं उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहा कि उन्हें अन्य राज्यों की भाषाएं भी जाननी और सीखनी चाहिए। आज की चर्चा का मूल मुद्दा यह है कि राजस्थान में संचालित राजकीय एवं गैर राजकीय विश्वविद्यालयों में अनिवार्य रूप से स्थाई राजस्थानी विभाग संचालित किये जाए। जब स्थाई राजस्थानी विभाग संचालित होंगे तो वहां शोध कार्य भी होंगे और राजस्थानी में शोध कार्य से दुनिया भर को राजस्थानी लोक के बारे में जानकारी मिलेगी, राजस्थानी संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा, यहां के हवेलियों और महलों के बारे में जानकारी मिलेगी। यहां के फोग से दुनिया परिचित हो सकेंगी। परंतु दुख इस बात का है पहले से स्थापित विश्वविद्यालय और नये खुल रहे विश्वविद्यालयों में राजस्थानी भाषा के स्थाई विभाग नहीं हैं।

–राजेन्द्र जोशी, शिक्षाविद-साहित्यकार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 17 जून, 2025

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 1:02 तक, विष्कुम्भ योग प्रातः 9:34 तक, वणिज करण दिन 2:47 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 1:02 तक है। त्रिपुष्कर योग रात्रि 1:02 से सूर्योदय तक है। आज भद्रा दिन 2:47 से रात्रि 2:11 तक है और पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:02 से 10:45 तक, लाभ अमृत 10:45 से 2:10 तक, शुभ 3:51 से 5:33 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:18

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी।

सिंह
परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या
आर्थिक मामलों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक योजना बनेगी। नवीन कार्यों का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। महत्वपूर्ण मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

भू माफियों में जेडीए का डर खत्म, अवैध कॉलोनियों बसाने का काम फिर शुरु

सोशल मीडिया पर विज्ञापन देकर जनता के साथ खुली लूट कर रहे है

■ मुरली ग्रीन्स, वृंदावन सिटी, जगन्नाथ सिटी, वृंदावन सिटी, गिरिराज विहार के नाम से बस रही है स्कीमें

जयपुर। जयपुर विकास प्राधिकरण ने जोन 11 और 12 में अवैध कालोनी बसाने वाले भू माफियों में जेडीए का डर खत्म हो गया है। वो बेखौफ अवैध कॉलोनियां बसा रहे हैं। जेडीए ने गत दिनों जिन अवैध जिन अवैध कॉलोनियों में कार्रवाई की वहां भू माफिया वापस सक्रिय हो गए हैं। वो अवैध स्कीमें बसा कर जनता से खिलवाड़ कर रहे हैं। ये लोग सोशल मीडिया पर खुले आम विज्ञापन देकर जनता के साथ खुली लूट कर रहे हैं।

उन्होंने फिर से अवैध खरीद-बेचान का काम शुरू कर दिया है। इसके साथ ही जेडीए ने जोन 11 की मुरली ग्रीन्स, वृंदावन सिटी, जगन्नाथ सिटी द्वितीय में तोड़फोड़ की कार्रवाई की थी। इन जोनों में कुछ कॉलोनियों को छोड़ दिया गया था। बाकी में दिखावटी कार्रवाई कर छोड़ दिया था। जयपुर विकास प्राधिकरण ने महिन्द्रा सेज और बगरू के आसपास अवैध कालोनियों में कार्रवाई की। आसपास की कुछ अवैध स्कीमों को छोड़ दिया। कपूरावाला, अजयराजपुरा, किशोरपुरा में कुछ स्कीमों को छोड दिया। इनमें द्वारका सिटी, जगन्नाथ सिटी प्रथम में कोई कार्रवाई नहीं की जबकि मुरली ग्रीन्स को आधी अधूरी कार्रवाई कर छोड़ दिया।जेडीए की टीम ने पवालिया, कपूरावाला में अवैध तरीके से बसाई जा रही मुरली ग्रीन्स में सिर्फ ग्रेवल सड़क को कुछ जगह से खोद दिया जबकि इस अवैध कॉलोनी में चार दीवारी को नहीं छेड़ा गया। अवैध कॉलोनी बसाने वालों ने यहां खरीद बेचान वापस शुरु कर दिया। और भू माफिया भूखंडों की खरीद फरोख्त कर कॉलोनी में पुरानी तारीख में हाउसिंग सोसायटी के पट्टे देकर आम जनता से धोखाधड़ी की जा रही है। यहां वापस ग्रेवल सड़कें बन गई है। जेडीए के प्रवर्तन दस्ते को कलवाडा, महिन्द्रा सेज के पास सिराणी में द्वारका सिटी दिखाई नहीं दी जबकि यहां भी खुले आम् अवैध तरीके से प्लाटों का खरीद बेचान किया जा रहा है।

डवलपर को जेडीए का कोई डर नहीं है। वह खुलेआम विज्ञापन कर हाउसिंग सोसायटी के पट्टों के जरिए खरीद बेचान कर रहा है। करीब 62 बीघा की इस स्कीम में प्लाट लेने के कई फायदे बताए जा रहे हैं। महिन्द्रा सेज में आने वाले अजयराजपुरा कलवाड़ा ग्राम में 160 फीट सड़क पर बेहताशा कॉलोनी काटी जा रही है। इसी जगह 62 बीघा में द्वारका सिटी के नाम से अवैध कालोनी बसाई जा रही है। इसमें ग्रेवल सड़क बना कर स्कीम बना दी है। अब दलालों के जरिए प्लाटों की सौदेबाजी की जा रही है। इस कॉलोनी के 160 फीट पर होने के सपने दिखा कर धड़ाधड़ प्लाट बेचे जा रहे है।

जोन 11 और 12 का कपूरावाला-पवालिया, अजयराजपुरा, किशोरपुरा, महिन्द्रा सेज, बगरु में दहमी कला, मणिपाल यूनिवर्सिटी के आसपास भू माफियों का पंसदीदा क्षेत्र बना हुआ है। इन इलाकों में अवैध रुप से बस रही कॉलोनियों में जमीनों के भाव दस से बारह हजार रुपए प्रति वर्गगज है यहां पर राधा विहार, गिरिराज विहार नाम से अवैध कॉलोनियां बसाने वाले डवलपर सोशल मीडिया फेसबुक, इंस्टाग्राम यू ट्यूब के माध्यम से अपनी स्कीमों का बेचान कर रहे हैं।

संस्कृत दिवस पर पुरस्कारों के लिए प्रस्ताव आमंत्रित

जयपुर। राज्य सरकार द्वारा प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी राज्य स्तरीय संस्कृत-दिवस-समारोह में संस्कृत-क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले संस्कृत विद्वानों का सम्मान किया जायेगा। आयुक्त, संस्कृत-शिक्षा, राजस्थान द्वारा सभी जिला कलक्टर, विश्वविद्यालय-कुलसचिवों, संभागीय संस्कृत शिक्षा अधिकारियों, निदेशक, प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा, एवं संस्कृत शिक्षा विभाग के संस्था-प्रधानों के माध्यम से विद्वत्-प्रस्ताव आमन्त्रित किये गये हैं। आयुक्त, संस्कृत-शिक्षा प्रियंका जोधावत ने बताया कि प्रस्तावों के साथ विद्वानों का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण निर्धारित प्रपत्र में चाहा गया है। प्रस्ताव 15 जुलाई 2025 तक अनिवार्य रूप से डाक द्वारा/व्यक्तिगत रूप से एवं विभागीय ईमेल पर भेजे जा सकेंगे।

विधान सभा में हुए सामूहिक योग में विधायकों ने लिया भाग

■ योग दिवस का पूर्वाभ्यास कराए जाने वाली राजस्थान विधान सभा देश में अग्रणी योग को बनायें जीवन का अंग : देवनानी

जयपुर। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की पहल पर राजस्थान विधान सभा में विश्व योग दिवस के लिए सामूहिक योग के लिए पूर्वाभ्यास किया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवृहान पर योग दिवस के लिए पूर्वाभ्यास कराये जाने के लिए राजस्थान विधानसभा ने देश में अग्रणी प्रयास किया। सोमवार को राजस्थान विधान सभा में विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, मंत्रीमण्डल के सदस्यगण, विधायकगण, विधानसभा के अधिकारियों व कर्मचारियों ने सामूहिक योग किया।

देवनानी ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि योग को जीवन का अंग बनाये। उन्होंने कहा कि योग को दिनचर्या में जोड़ने से मन, मस्तिष्क, और शरीर स्वस्थ और ऊर्जावान रहता है। शरीर को स्वस्थ रखना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। देवनानी ने मन, बुद्धि और आत्मा के साथ योग के सहयोग से जीवन रचना को आगे बढाने का आव्हान किया।

देवनानी ने कहा कि सूक्ष्म व्यायाम प्रतिदिन अवश्य करें। इससे मन एकाग्र होगा और शरीर को नई ऊर्जा मिलेगी। देवनानी ने प्रधानमंत्री मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के प्रयासों से योग को दुनिया ने अपनाया है।

देवनानी ने कहा कि इस वर्ष एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग विषय पर ग्यारहवां अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। योग भारत के लोगों द्वारा शुरू किया जाने वाला शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक अभ्यास है, जिसे अब दुनियाभर में मनाया जा रहा है। योग केवल व्यायाम ही नहीं बल्कि यह स्वयं, दुनिया और प्रकृति के साथ एकता की भावना को खोजने का एक तरीका भी है।

देवनानी ने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस एक ऐसा उत्सव है जो प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी को महत्व देता है। इसका लक्ष्य योग को एक व्यापक आन्दोलन में बदलना है जो वैश्विक स्वास्थय और शान्ति को बढावा देता है।

अन्तर्राज्यीय कुख्यात नकबजन संजय पहाड़िया दिल्ली से गिरफ्तार

पुलिस ने अन्तर्राज्यीय कुख्यात नकबजन चोर संजय पहाड़िया निवासी आगरा उत्तर प्रदेश हाल दिल्ली को गिरफ्तार किया।

जयपुर। जवाहर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दस हजार रुपये का इनामी अन्तर्राज्यीय कुख्यात नकबजन -चोर संजय पहाड़िया को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया है।

आरोपित जवाहर नगर में वर्ष 2022 में दर्ज नकबजनी की वारदात में फरार चल रहा था। आरोपित शातिर नकबजन है,जिसके खिलाफ उत्तर प्रदेश,दिल्ली,राजस्थान मे चोरी,नकबजन,आर्म्स एक्ट,गैंगस्टर एक्ट के तहत अब तक 71 मामले दर्ज है। आरोपित सूने मकानों की रैकी कर नकबजनी की वारदात करता है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि जवाहर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दस हजार रुपये का इनामी अन्तर्राज्यीय कुख्यात नकबजन चोर संजय पहाड़िया निवासी आगरा उत्तर प्रदेश हाल दिल्ली को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित जवाहर नगर में वर्ष 2022 में दर्ज नकबजनी की वारदात में फरार चल रहा था। वहीं आरोपित शातिर नकबजन है जिसके खिलाफ उत्तर प्रदेश,दिल्ली,राजस्थान मे चोरी,नकबजन,आर्म्स एक्ट,गैंगस्टर एक्ट के तहत अब तक 71 मामले दर्ज है। आरोपित सूने मकानों की रैकी कर नकबजनी की वारदात करता है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

ट्रिपिंग और लो वोल्टेज की समस्या

जयपुर। राजधानी के मॉडल टाउन डी ब्लॉक के निवासी भीषण गर्मी के बीच बिजली की बार-बार ट्रिपिंग और वोल्टेज अप- डाउन से परेशान हैं। दिन में कई बार कई घंटे लो वोल्टेज सहित बिजली की आंख मिचौली की समस्या बनी रहती है। बिजली उपकरण जैसे ऐसी, कूलर, फ्रिज, और पंखे ठीक से काम नहीं कर रहे हैं। बार बार लो वोल्टेज के कारण कुछ उपभोक्ताओं के विधुत उपकरण ख़राब हो चुके है। मॉडल टाउन निवासी वरिष्ठ पत्रकार बाल मुकुंद ओझा ने बताया कि वोल्टेज अप- डाउन रहने व पावर फलैकचुएशन की शिकायत करने पर खानापूर्ति कर दी जाती है मगर समस्या दूर नहीं होती। यही नहीं थ्री फेस होने के बावजूद उपभोक्ता के सभी फेस में बिजली उपलब्ध नहीं होती जिसके कारण आधा घर अंधेरे में डूबा रहता है। यह समस्या पिछले एक माह से बनी हुई है। बताया जाता है ओवरलोड के कारण ट्रिपिंग और लो वोल्टेज की समस्या लगातार रहती है। लेकिन सवाल यह उठता है कि ओवरलोडिंग की जिम्मेदारी किसकी है।

81 लाख रुपए की ठगी करने वाला गिरफ्तार

जयपुर। चौमूं थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फर्जी दस्तावेजों से प्लाट बेचकर 81 लाख रुपए की ठगी के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

थानाधिकारी प्रदीप शर्मा ने बताया कि फर्जी दस्तावेजों से प्लाट बेचकर एक महिला से 81 लाख रुपए की ठगी के मामले में श्रीमाधोपुर जिला सीकर निवासी किशनलाल यादव (48) को गिरफ्तार किया गया है। आरोपित ने

एक महिला को धर्म की बेटी बता कर 81 लाख रुपए की ठगी की है। आरोपित किशनलाल ने महिला को झांसा दिया कि रामेश्वरम धाम में सीकर रोड पर उसके नाम का प्लॉट है। उसने प्लॉट में अच्छा मुनाफा मिलने का लालच देकर पीड़िता को विश्वास में लिया और चौमूं उप पंजीयक कार्यालय में फर्जी दस्तावेज पेश कर रजिस्ट्री करा दी।

जब पीड़िता ने रजिस्ट्री के बाद जमीन पर कब्जा लेना चाहने पर पूरा मामला सामने आया। जहां पता चला कि न तो जमीन आरोपी के नाम थी और न ही दिया गया पट्टा असली था। जिस पर पर पुलिस ने आरोपी किशनलाल यादव गिरफ्तार किया गया।पुलिस जांच में पता चला कि किशनलाल यादव पहले भी कई लोगों के साथ इसी तरह की ठगी कर चुका है। उसके खिलाफ अन्य थानों में भी धोखाधड़ी के मामले दर्ज हैं।

सड़को के लिए 1915 करोड़ रुपये की स्वीकृति

■ कुल 1000.90 किलोमीटर लंबाई की 40 राज्य सड़क परियोजनाओं के लिए 1914.71 करोड़ की स्वीकृति प्रदान का

■ 4 लेन के नागौर बायपास निर्माण और नागौर नेत्रा खंड के चार लेनकरण कार्य के लिए 1394 करोड़ रु मंजूर

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बताया की केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने राजस्थान में केंद्रीय सड़क अवसंरचना निधि (सीआरआईएफ) के तहत कुल 1000.90 किलोमीटर लंबाई की 40 राज्य सड़क परियोजनाओं के लिए 1914.71 करोड़ की स्वीकृति प्रदान की है। इसकी स्वीकृति आगामी एक दो दिवस में प्राप्त हो जाएगी।

इसके साथ ही प्रदेश में 104.49 किमी हाईवे परियोजनाओं के निर्माण के लिए केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा लगभग 1394 करोड़ रुपये की लागत की नई परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का इन स्वीकृतियों के लिए आभार जताया है।

उन्होंने बताया की 1914.71 करोड़ लागत की इन परियोजनाओं में मुख्य रूप से विभिन्न राज्य सड़कों (31 प्रमुख जिला सड़कें, 8 राज्य राजमार्ग और 1 अन्य जिला सड़कें) के खंडों का मजबुतीकरण और चौड़ाईकरण शामिल है। इससे राजस्थान के विभिन्न हिस्सों में बेहतर सड़क संपर्क और निर्बाध यात्रा प्रदान करने में मदद मिलेगी।

इसके साथ ही 1394 करोड़ की लागत से चार लेन के नागौर बाईपास (अमरपुरा से गोगेलाव) का निर्माण तथा नागौर नेत्रा सड़क के 4 लेन का कार्य की स्वीकृति प्राप्त हुई है।

'योग दिवस से पूर्व भाजपा प्रदेशभर में आयोजित करेगी योग कार्यक्रम'

सांसद दामोदर अग्रवाल ने योग दिवस को लेकर आयोजित कार्यक्रमों पर प्रेसवार्ता को संबोधित किया।

जयपुर। भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं भीलवाड़ा सांसद दामोदर अग्रवाल ने 21 जून अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को लेकर भारतीय जनता पार्टी की ओर से आयोजित कार्यक्रमों पर प्रेसवार्ता को संबोधित किया। सांसद दामोदर अग्रवाल ने बताया कि देशभर में 21 जून को योग दिवस मनाया जाएगा। इससे पूर्व 19 और 20 जून को भारतीय जनता पार्टी प्रदेशभर में योग कार्यक्रम आयोजित करेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा प्रदेश, संभाग, जिला, मंडल स्तर पर संगठनात्मक रूप से योग दिवस के कार्यक्रम आयोजित करेगी। इस दौरान भाजपा के सभी 44 जिलों के 1137 मंडलों में लगभग 1500 से अधिक योग के कार्यक्रम होंगे। भाजपा योग दिवस से पूर्व प्रदेश के नगर पालिका, नगर परिषद एवं नगर निगमों में एक से अधिक कार्यक्रम आयोजित करेगी। इस दौरान कस्बा क्षेत्रों में महिलाओं के भी अलग से कार्यक्रम होंगे। कई स्थानों पर नवाचारों के साथ कार्यक्रम संपादित करने के प्रयास है। योग कार्यक्रम के साथ-साथ योग प्रशिक्षकों को सम्मानित भी किया जाएगा।

भाजपा सांसद दामोदर अग्रवाल ने कहा कि योग दुनिया को भारत द्वारा दिए गए सबसे बड़े उपहारों में से एक है। योग शारीरिक व्यायाम से कहीं बढ़कर, जीवन जीने की एक शैली है, जो मानसिक स्पष्टता, भावनात्मक स्थिरता और आध्यात्मिक शांति प्रदान करता है। आज इसकी प्रासंगिकता खास तौर पर प्रबल है। उन्होंने कहा कि "योगाभ्यास से एकात्मकता की भावना का सृजन होता है - मन, शरीर और बुद्धि की एकात्मकता, अपने परिवारों के साथ, जिस समाज में हम रहते हैं उसके साथ, साथी मनुष्यों के साथ, उन समस्त पक्षियों, पशुओं और वृक्षों, जिनके साथ हम अपने सुंदर ग्रह को साझा करते हैं, के साथ एकात्मकता, यही योग है।

भाजपा सांसद दामोदर अग्रवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस प्रतिवर्ष 21 जून को मनाया जाता है। यह दिन उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घायु बनाता है।

'सरकार का क्रिटिकल मिनरल्स की खोज व खनन पर खास जोर'

जयपुर। राजस्थान में खनिजों की खोज के लिए अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स व मशीन लर्निंग तकनीक का भी सहयोग लिया जाएगा। प्रमुख सचिव खान एवं भूविज्ञान टी. रविकान्त ने बताया कि पायलट प्रोजेक्ट के तहत भीलवाड़ा और भरतपुर के साथ ही चित्तोड़गढ़ के कुछ स्थानों पर एआई के माध्यम से क्रिटिकल एवं स्ट्रेटेजिक खनिज संभावित क्षेत्रों को चिन्हित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि खनिज क्षेत्र में नवाचार के तहत एआई के उपयोग का निर्णय लिया गया है और इसके लिए राजस्थान स्टेट मिनरल एक्सप्लोरेशन ट्रस्ट आरएसएमईटी द्वारा केन्द्र सरकार एवं नोटिफाइड प्राइवेट एक्सप्लोरेशन एजेंसी के साथ काम शुरु किया जाएगा।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा जो कि प्रदेश के खान मंत्री भी है, प्रदेश को खनिज खोज व खनन क्षेत्र में देश का अव्वल प्रदेश बनाने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहे हैं। आज प्रमुख खनिजों की नीलामी में राजस्थान समूचे देश में शीर्ष पर आ गया है वहीं खनिज क्षेत्र से राजस्व में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। अब राज्य के भूगर्भ में छिपे बेशकीमती खनिजों के खोज कार्य को गति देने पर जोर दिया जा रहा है।

डॉ. निर्मल जैन ने परिवहन मंत्री गडकरी से भेंट की

जयपुर। राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा परिषद, परिवहन मंत्रालय, भारत सरकार के सदस्य डॉ. निर्मल जैन ने आज नई दिल्ली में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से औपचारिक भेंट की। इस अवसर पर डॉ. जैन ने राजस्थान राज्य में सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों, नवाचारों एवं जन-जागरूकता अभियानों की विस्तृत प्रगति रिपोर्ट माननीय मंत्री को प्रस्तुत की।

प्रस्तुत रिपोर्ट में सड़क सुरक्षा हेतु विभिन्न जिलों में चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्कूलों और कॉलेजों में आयोजित जागरूकता कार्यशालाएँ, हेलमेट और सीट बेल्ट उपयोग पर चल रहे अभियान, तथा सड़क संकेतों के सही प्रयोग को लेकर किए गए प्रयासों का उल्लेख किया गया। डॉ. जैन ने मंत्री महोदय को अवगत कराया कि राजस्थान में सड़क सुरक्षा को लेकर जनसहभागिता बढ़ रही है और स्वयंसेवी संस्थाओं, स्कूलों, कॉलेजों, ट्रैफिक पुलिस एवं स्थानीय प्रशासन के सहयोग से सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने हेतु ठोस कार्य हो रहे हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि इन सफल पहलों को अन्य राज्यों में भी मॉडल के रूप में अपनाया जा सकता है। गडकरी ने डॉ. जैन के प्रयासों की सराहना की और सड़क सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय में सतत योगदान के लिए शुभकामनाएँ दीं।

'जस शो-2025' का मुख्यमंत्री को आमंत्रण, पोस्टर का विमोचन किया

■ सुविख्यात बी टू बी जस शो 4 से 6 जुलाई जेईसीसी जयपुर में होगा

तीन दिवसीय बी टू बी जस शो में आमंत्रित करने हेतु मुख्यमंत्री भजनलाल जी से सीएमआर में जस शो कमेटी के सदस्यों ने मुलाकात कर आमंत्रण दिया।

जयपुर। जयपुर स्थित जेईसीसी में 4 से 6 जुलाई को आयोजित होने वाले तीन दिवसीय बी टू बी जस शो में आमंत्रित करने हेतु मुख्यमंत्री भजनलाल जी से सीएमआर में जस शो कमेटी के सदस्यों ने मुलाकात कर आमंत्रण दिया।मुख्यमंत्री भजनलाल जी ने 5 जुलाई को होने वाली अवार्ड नाईट में मुख्य अतिथि के नाते उपस्थित रहने की स्वीकृति प्रदान की है।ज्वैलर एसोसिएशन जयपुर के वाईस प्रेसिडेंट व जस शो के को-कन्वेनर राजू मंगोड़ीवाला ने बताया कि इस अवसर पर जस शो के पोस्टर का विमोचन किया गया और मुख्यमंत्री जी ने पूर्व के कार्यक्रम की सराहना करते हुये आगामी जस शो की बधाई दी।इससे पूर्व मुख्यमंत्री भजन लाल जी का जस शो के कन्वेनर अशोक माहेश्वरी व एक्जीक्यूटिव मेम्बर विजय केडिया ने गुलस्ता भेंट किया, टीम के अन्य सदस्यों को-कन्वेनर नरेश अग्रोहा, कोषाध्यक्ष गोविंद प्रकाश अग्रवाल ,एक्जीक्यूटिव मेम्बर अनिल तांबी, महावीर कुमार डागा व जस कमेटी मेम्बर सुरेश डड्डा ने पिछले कार्यक्रम के जस शो टीम का मोमेंटो भेंटकर अभिनंदन किया। देश में विशिष्ट पहचान वाले बी टू बी जस शो व्यवसायियों को अपनी व्यवसायिक जरूरतों को पूरा करने और नए अवसरों की खोज करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है,इस अवसर पर ज्वैलर एसोसिएशन जयपुर के वाईस प्रेसिडेंट व जस शो के को-कन्वेनर राजू मंगोड़ीवाला, जस शो के कन्वेनर अशोक माहेश्वरी,को-कन्वेनर नरेश अग्रोहा, कोषाध्यक्ष गोविंद प्रकाश अग्रवाल,एक्जीक्यूटिव मेम्बर विजय केडिया, एक्जीक्यूटिव मेम्बर अनिल तांबी,महावीर कुमार डागा व जस कमेटी मेम्बर सुरेश डड्डा सहित जस शो के प्रबुद्ध व्यावसायी मौजूद रहे।

विधानसभा अध्यक्ष जायेंगे फ्रांस और जर्मनी

■ दो देशों की संसदीय प्रक्रियाओं और पद्धितयों की अध्ययन यात्रा करेंगे, मंगलवार को होंगे रवाना

जयपुर। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी फ्रांस और जर्मनी जायेंगे। दो देशों की यात्रा के लिए देवनानी मंगलवार को प्रातः जयपुर से सड़क मार्ग द्वारा नई दिल्ली जायेंगे, जहां से वे दोपहर में पेरिस के लिए रवाना होंगे। राष्ट्रमंडल संसदीय संघ के तत्ववाधान में आयोजित इस अध्ययन यात्रा के दौरान देवनानी वहां दोनों देशों की संसदीय परम्पराओं का अध्ययन करेंगे।

विधान सभा अध्यक्ष देवनानी इस सात दिवसीय अध्ययन यात्रा के दौरान फ्रांस और जर्मनी की संसदीय प्रक्रियाओं और पद्धितयों का अध्ययन करेंगे। देवनानी राजस्थान विधान सभा में किये गये नवाचारों के अनुभवों को भी इस अध्ययन यात्रा के दौरान फ्रांस और जर्मनी के सांसदों से साझा करेंगे। देवनानी का फ्रांस के अपर हाउस सीनेट और लोअर हाउस नेशनल असेम्बली तथा जर्मनी के अपर हाउस बुंडेसरात और लोअर हाउस के बुंडेसटाग अवलोकन करने का भी कार्यक्रम है। देवनानी राष्ट्र मंडल संसदीय संघ के 68वें सम्मेलन से पूर्व विभिन्न देशों की संसदीय प्रक्रियाओं की जानकारी के लिये यह अध्ययन यात्रा कर रहे है।

राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की फ्रांस और जर्मनी की यह सात दिवसीय यात्रा संसदीय सहभागिता, लोकतांत्रिक आदान-प्रदान और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

देवनानी इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के राष्ट्रीय संसदों, स्थानीय विधान संस्थानों और विभिन्न सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्थानों का भ्रमण कर उच्चाधिकारियों और निर्वाचित जनप्रतिनिधियों से विचार-विमर्श करेंगे। देवनानी इस अध्ययन यात्रा में डिजिटल विधायी प्रक्रियाओं और सामाजिक समावेशन पर भी विस्तार से विचार-विमर्श करेंगे।

राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा है कि यह यात्रा भारत की लोकतांत्रिक परम्पराओं और राज्य विधान सभाओं की क्षमताओं को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम होगा। उन्होंने कहा इससे निश्चित ही संसदीय कार्यों को और अधिक समृद्ध बनाने में मदद मिलेगा।

देवनानी दोनों देशों के संसद प्रमुख और वरिष्ठ सांसदों से मुलाकात करेंगे और संसदीय प्रक्रियाओं पर चर्चा करेंगे। श्री देवनानी का दोनों देशों में भारतीय मिशन के वरिष्ठ अधिकारियों, भारतीय प्रवासियों, रामाकृष्ण वेदांतिक केन्द्र के पदाधिकारियों और विज्ञान एवं तकनीक से जुड़े विशेषज्ञों, भारतीय समुदाय के प्रमुख लोगों से मुलाकात और चर्चा करने का कार्यक्रम है। श्री देवनानी दोनों देशों में भारतीय दूतावासों के उच्च अधिकारियों के साथ भी बैठक करेंगे। राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी के साथ यात्रा में विधान सभा के प्रमुख सचिव श्री भारत भूषण शर्मा भी जायेंगे। विधान सभा अध्यक्ष देवनानी फ्रांस और जर्मनी की संसदीय परम्पराओं के अध्ययन के साथ ही वहां के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक स्थलों का भ्रमण भी करेंगे।

कार्यक्रम में योग प्रतियोगिताएं बनीं युवाओं का आकर्षण

जयपुर। भारत सरकार के आयुष विभाग की ओर सेराष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान पुणे के तत्वावधान में 11 वें योग दिवस के उपलक्ष में विभिन्न स्थानों पर किए जा रहे सिग्नेचर योगा इवेंट्स में सीतापुरा स्थित स्वास्थ्य कल्याण इंस्टिट्यूट ऑफ़ नेचुरोपैथी एवं योग साइंसेज में योग अनप्लग्ड कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का समापन 19 जून को होगा। कार्य्क्रम के मुख्य अतिथि एम्स जोधपुर के अध्यक्ष और स्वास्थ्य कल्याण ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूशन तथा राजस्थान अस्पताल के चेयरमेंन डॉक्टर एस एस अग्रवाल होंगे। इंस्टिट्यूट के प्राचार्य डॉक्टर एकलव्य बोहरा ने यह जानकारी देते हुए बताया कि योग अनप्लग्ड कार्यक्रम में युवाओं को योग से जोड़ने के लिए इंटर कॉलेज कंपटीशन आयोजित किया जा रहे हैं। इनमें पांच ऑनलाइन एवं 7 ऑफलाइन कंपटीशन शामिल हैं। उन्होंने बताया कि कंपटीशन में योगा रील कंपटीशन, योगा पोस्टर कंपटीशन, योगा निबंध लेखन प्रतियोगिता शामिल हैं। इसी प्रकार ऑफलाइन प्रतियोगिताओं में योगासन एडवांस पोस्चर, समूह योग, योग भाषण प्रतियोगिता इत्यादि आयोजित किया।

पुष्कर सरोवर में फिडरों के पानी के साथ गंदगी और अपशिष्ट पदार्थ पहुंचा

पुरोहितों का आरोप है कि फीडरों के किनारे बने होटल और रिसोर्ट के अपशिष्ट पदार्थ आ रहे हैं

पुष्कर, (निसं)। करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र तथा हिंदुओं का सबसे पवित्र तीर्थ स्थल पवित्र पुष्कर सरोवर प्रशासन और राज्य सरकार की उदासीनता के चलते अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा है। पवित्र सरोवर में जहां प्रतिदिन हजारों लोग आस्था की डुबकी लगाते हैं तो वहीं प्रशासन और राज्य सरकार की लापरवाही के चलते अब यह पानी दूषित होता जा रहा है, जिसके चलते प्रतिदिन हजारों मछलियां दम तोड़ रही है। वहीं पवित्र सरोवर की दुर्दशा को लेकर तीर्थ पुरोहितों में भी जबरदस्त आक्रोश उत्पन्न हो रखा है।

जानकारी के अनुसार गत दो दिन की बरसात में पुष्कर सरोवर में अच्छे पानी की आवक के लिए बनाए गए करोड़ों रुपए की लागत फीडरों से गंदे बरसात के पानी के साथ अपशिष्ट पदार्थ और गंदगी पवित्र सरोवर में बहकर आ गई, जिसके चलते पवित्र सरोवर का पानी दूषित हो रहा है। तीर्थ पुरोहितों ने कहा कि पवित्र सरोवर की तरफ ध्यान नहीं देने के कारण धीरे-धीरे अब पवित्र सरोवर की दुर्दशा होती जा रही है। फीडरों के आसपास बने होटल और रिसोर्ट का सारी गंदगी और अपशिष्ट पदार्थ फीडरो में आ रहे है तथा फीडरों की साफ सफाई नहीं करवाने के कारण सारी गंदगी बरसाती पानी के साथ पवित्र सरोवर में बहकर आ रही है। यही नहीं संतोषी माता की ढाणी और लीला सेवड़ी का सारा गंदा पानी भी खुलेआम फीडरों में आ रहा है, लेकिन इसकी प्रशासन और सरकार के द्वारा कोई रोकथाम नहीं की जा रही है। बरसात में पवित्र सरोवर की पानी की आवक अच्छी हो इसके लिए फीडर बनाए गए, लेकिन फीडरों के साफ सफाई तथा रख-रखाव नहीं होने के कारण अब यह फीडर गंदे पानी के नाले बन चुके हैं।

लोगों ने कई बार प्रशासन से मांग की है कि ऐसे रिसॉर्ट और होटलों के खिलाफ कार्रवाई की जाए जिनकी गंदगी और अपशिष्ट पदार्थ फीडरों में डाला जा रहा है और ऐसे होटलों ओर रिसोर्ट को तुरंत प्रभाव से सीज किया जाए। तीर्थ पुरोहितों ने बताया कि बरसात के समय में बरसाती पानी के साथ सारी गंदगी पवित्र सरोवर में आ रही है जिसके चलते पानी दूषित हो रहा है। तो वहीं श्रद्धालुओं की आस्था पर भी आघात लगा रहा है। सोमवार को भी ब्रह्म घाट पर स्थित पुरोहितों ने पवित्र सरोवर के पानी में अपशिष्ट पदार्थ और गंदगी तैरती देखी, जिसके चलते पुरोहितों में आक्रोश उत्पन्न हो गया और तुरंत प्रभाव से अपने हाथों से पवित्र सरोवर के जल से गंदगी और अपशिष्ट पदार्थ निकाले। तीर्थ पुरोहितों ने राज्य सरकार प्रशासन से मांग की है कि पवित्र सरोवर सुध लेकर सरोवर की पवित्रता की रक्षा की जाए और सरोवर में आने वाले अपशिष्ट पदार्थ और गंदगी की तुरंत प्रभाव से रोकथाम की जाए। इस दौरान मदन मस्त, बैजनाथ, दीपक पाराशर, भोला पाराशर, क्षेत्रपाल पाराशर, वैभव पाराशर सहित सैकड़ों तीर्थ पुरोहित मौजूद थे। वहीं गत दिनों मुख्यमंत्री की पुष्कर यात्रा के दौरान भी पुष्कर के तीर्थ पुरोहित पुष्कर सरोवर को बचाने की गुहार लगा चुके है, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा, समस्या जस की तस है।

पुरोहितों ने सरोवर के पानी से स्वयं अपने हाथों से अपशिष्ट पदार्थ और गंदगी निकाली।

- फीडरों की साफ सफाई नहीं होने से सारी गंदगी पवित्र सरोवर में आ रही है, इससे प्रतिदिन हजारों मछलियां दम तोड़ रही है

आर.ए.एस. मुख्य परीक्षा आज व कल

अजमेर व जयपुर के 77 केंद्रों पर 21 हजार से अधिक अभ्यर्थी परीक्षा देंगे

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएं मुख्य परीक्षा- 2024 की दो दिवसीय परीक्षा मंगलवार और बुधवार को आयोजित होगी। परीक्षा में प्रदेशभर के 21 हजार 440 अभ्यर्थी शामिल होंगे।

आयोग के सचिव ने बताया कि दो दिवसीय आरएएस मुख्य परीक्षा 17 मंगलवार व 18 बुधवार को अजमेर के 29 तथा जयपुर के 48 परीक्षा केंद्रों सहित कुल 77 केंद्रों पर दो पारियों में आयोजित होगी। प्रथम पारी सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक तथा द्वितीय पारी दोपहर 2:30 से शाम 5:30 बजे तक आयोजित की जाएगी।

गौरतलब है कि इस भर्ती प्रक्रिया के लिए प्रारंभिक परीक्षा में 3.75 लाख से अधिक अभ्यर्थियों ने भाग लिया था, जिनमें से 21 हजार 539 अभ्यर्थी सफल घोषित किए गए। वहीं आयोग ने 1 हजार 680 अभ्यर्थियों को 10 प्रतिशत से अधिक प्रश्नों का उत्तर नहीं देने के कारण अयोग्य घोषित कर दिया, जबकि दो अभ्यर्थियों का परिणाम न्यायालय में याचिका के चलते रोक दिया गया है। मूल रूप से 733 पदों के लिए निकाली गई इस भर्ती के पदों की संख्या 17 फरवरी 2025 को बढ़ाकर 1 हजार 96 कर दी गई है। इसमें राज्य सेवा के 428 और अधीनस्थ सेवा के 668 पद सम्मिलित हैं। आयोग ने 14 जून को ही परीक्षा के एडमिट कार्ड जारी कर दिए थे। परीक्षा केंद्र की जानकारी भी एसएसओ पोर्टल के रिक्रूटमेंट सेक्शन में उपलब्ध है। परीक्षा केंद्र पर अभ्यर्थियों को निर्धारित समय से 60 मिनट पहले प्रवेश दिया जाएगा। देर से पहुंचने वाले अभ्यर्थियों को केंद्र में प्रवेश नहीं मिलेगा। आवश्यक दस्तावेजों में अभ्यर्थी को मूल रंगीन आधार कार्ड अनिवार्य रूप से साथ लाना है।

युवती ने आत्महत्या की

उदयपुर, (निसं)। सुखेर थाना क्षैत्र में युवती ने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। चित्रकूट नगर निवासी नेहा पुत्री राजेश कुमार ठाकुर ने सोमवार सेवेरे अपने कमरे में फांसी लगा आत्महत्या कर ली। एएसआई हरीश सनाढ्य ने मृतका का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंपा। नेहा नीट परीक्षा की तैयारी कर रही थी। जिसमें फैल होने की वजह से मानसिक परेशान थी। इसी तनाव के चलते आत्महत्या करने की आशंका जताई जा रही है।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग वृत्त जालोर

क्रमांकः अअ /वृत्त/जा/2025-26/475-491 दिनांकः 03/06/2025

निविदा सूचना संख्या : 05 वर्ष 2025-26

NIB No. PWD2526A0985

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जालोर शहर की रिंग रोड़ निर्माण हेतु डीपीआर के कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में कार्य जिनकी लागत राशि रू. 110.00 लाख है, अतः उक्त कार्यों के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	09 जुन 2025 प्रातः 10.00 बजे से 30 जुन 2025, सायं 6:00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http:// eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

NIB No. PWD2526A0985

क्र.सं.	यूबीएन नं.
1	PWD2526SLOB0222

(डी.आर.माधव)
अधीक्षण अभियन्ता
सा.नि.वि. वृत्त, जालोर
मोबाईल 9414325400

DIPR/C/7460/2025

प्राणघातक हमला करने वाला बदमाश गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। बाघपुरा थाना पुलिस ने पीड़ित पर तलवार से प्राणघातक हमला करने वाले को गिरफ्तार किया।

प्रकरण के अनुसार पीड़ित ने 7 अप्रैल को प्रकरण दर्ज करवाया कि आरोपी ललित पुत्र चुन्नीलाल निवासी मादड़ी मेरे पुत्र पर तलवार से प्राणघातक हमला कर फरार हो गया। मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उपाधीक्षक नेत्रपाल सिंह के सुपरविजन में बाघपुरा थानाधिकारी वेलाराम के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए आरोपी ललित को डिटेन कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया। आरोपी 001 गैंग का सक्रिय बदमाश होकर इसके खिलाफ छह अपराधिक प्रकरण पूर्व में दर्ज है। वहीं जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर ऋषभदेव थानाधिकारी भरत सिंह राजपुरोहित के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए दो वर्ष से फरार स्थाई वारंटी हाजा पुत्र रतना निवासी उगमणा कोटड़ा ऋषभदेव को गिरफ्तार किया।

दो सूने मकानों में चोरी

उदयपुर, (निसं)। शहर के गोवर्धन विलास एवं सविना थाना क्षैत्र में सूने मकान से चोर जेवरात व नकदी चुरा ले गए। शहर के सक्रिय चोर गिरोह के बदमाश शहर में जारी तलाशी अभियान एवं पुलिस गश्त के बावजूद वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। शहर के गोवर्धन विलास थाना क्षेत्र अंतर्गत नेमीनाथ कॉलोनी चुंगीनाका स्थित दुर्गेशपुत्र लीलाराम गर्ग के सूने मकान का चोर ताला तोड़कर सोने की 3 चेन, दो ईयरिंग, चांदी के सिक्के चुरा ले गए। दस जून को दुर्गेश नौकरी पर गया था एवं पत्नी अपने पीहर गई थी। नौकरी से लौटने पर घर पहुंचा तो ताला टूटा हुआ एवं कमरों में सामान बिखरा पड़ा था। इस पर तलाशी ली तो जेवरात व नकदी गायब थी। इस पर पुलिस को सूचना कर प्रकरण दर्ज करवाया। इसी तहर शहर के सविना थाना क्षैत्र लालमगरी निवासी भगवानलाल पुत्र मावा मेघवाल के सूने मकान का 15 जून को अज्ञात चोर ताला तोड़ सोने का मादलिया, चांदी की चेन, ब्रासलेट चांदी का तथा 10 हजार रूपये नकदी चुरा ले गए।

होटल के कमरे में युवती की अधजली लाश मिली

- आत्महत्या की आशंका जताई, हरियाणा की रहने वाली थी युवती
- पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा

श्रीगंगानगर, (निसं)। यहां एक होटल के कमरे से युवती की अधजली लाश मिलने से सनसनी फैल गई। देर रात होटल की दूसरी मंजिल पर हुई इस घटना में युवती की मौत के कारणों की जांच में पुलिस जुटी है। प्राथमिक जांच में मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है।

कोतवाली पुलिस के अनुसार, मृतका शनिवार दोपहर को अकेली होटल में ठहरी थी। देर रात जब होटल का एक वेटर रूटीन चेक के लिए दूसरी मंजिल पर गया तो उसे एक कमरे से धुएं की गंध और आग जलने की बदबू आती महसूस हुई। कमरे के बाहर जाकर देखा तो धुआं निकलता दिखाई दिया, जिस पर उसने तत्काल अन्य स्टाफ को सूचित किया। होटल स्टाफ ने जब देखा कि कमरा अंदर से बंद है तो दरवाजा तोड़ना पड़ा। अंदर का दृश्य देख सभी के होश उड़ गए। बिस्तर पर युवती का बुरी तरह जला हुआ शव पड़ा था। घटना की सूचना तुरंत कोतवाली पुलिस को दी गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मामले में सभी पहलुओं की बारीकी से जांच की जा रही है। युवती की पहचान और उसके आत्महत्या के कारणों का पता लगाया जा रहा है।

कोतवाली थाना अधिकारी पृथ्वीपाल सिंह मय जाब्ता के मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया। एफएसएल और एमओबी टीमों ने देर रात तक साक्ष्य जुटाए। घटनास्थल से बरामद आधार कार्ड से मृतका की पहचान सुमन (पति गुरतान सिंह) निवासी कैथल (हरियाणा) के रूप में हुई। होटल में भी इसी आधार कार्ड से उसकी एंट्री दर्ज थी पुलिस के अनुसार प्रारंभिक जांच में मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है, लेकिन सभी पहलुओं की गहन जांच जारी है। पुलिस मृतका के परिजनों से संपर्क कर घटना की पृष्ठभूमि और मानसिक स्थिति की जानकारी जुटाने में जुटी है। परिजनों के आने के बाद ही पोस्टमार्टम कराया जाएगा। पुलिस मृतका के मोबाइल व अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की जांच के साथ होटल स्टाफ से भी पूछताछ कर रही है ताकि युवती के होटल आने और इतना बड़ा कदम उठाने के कारणों का पता लगाया जा सके।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, वृत्त टोंक

क्रमांक :680-90 दिनांक :-03.06.2025

निविदा सूचना संख्या-04/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से Consultancy Services for Preparation Detailed Project Report (DPR) and Project Management for Construction of Ring Road of Tonk City (Including fixing of alignment and design of 2-Lane road with paved shoulders and 2 nos interchanges with NH-52 and NH-552 and preparation of land acquisition plan इत्यादि कार्य (1 कार्य) हेतु इत्यादि कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों तथा केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में (Working Consultants) से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण बेवसाईट साईट से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रकिया से ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती हैं। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://pwd.rajasthan.gov.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। पैकेजवाईज यू.बी.एन संख्या निम्नानुसार है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेब साईट http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड होना आवश्यक है।

NIB CODE: PWD2526A1007
UBN NO:- PWD2526SLOB03299

(एच.एल. मीना)
अधीक्षण अभियंता
सा.नि.वि. वृत टोंक

DIPR/C/7498/2025

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF POLICE RAJ JAIPUR

H-1(10)Ps/Hath/E-Tender/2025/7494 Dated-3.6.2025

NOTICE INVITING BIDS

NIB NO. POL2526A0005

Bids for Capsi Spray (Chilli Spray), Capsi Grenade(Chilli Grenade) & Tactical Engagement Simulator System of estimated value INR 2,76,50,000/- are invited from interested bidders up to 26.06.2025 at 11.00 am. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal https://eproc.rajasthan.gov.in; https://sppp.rajasthan.gov.in of the state of Rajasthan and Rajasthan Police Website- https://www.police.rajasthan.gov.in.

UBN.
1. POL2526GLOB00040 Capsi Spray
2. POL2526GLOB00041 Capsi Grenade
3. POL2526GLOB00042 Tactical Simulator

(Yashpal Tripathi)
Supdt. of Police Central Stores, PHQ
Rajasthan, Jaipur
Tel-0141-2744289
Mail ID-sp.cstore.pmw@rajpolice.gov.in

DIPR/C/7570/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड-चित्तौडगढ़

क्रमांक-टी.एस./2025-26/डी-569 दिनांक-30.05.2025

NOTICE INVITING BID-09/2025-26

Bids for Construction of Atal Pragati Path Satpura Road to Retuliya Chowk (Ghosunda) in Division Chittorgarh Procurement are invited from interested Bidders upto 6.00 PM of 16.06.2025 Other particulars of the Bid may be visited on the Procurement Portal (http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in.) of the state website. The approximate value of the Procurement in Rs. 15797033.00

UBN No.- 1. PWD2526WSOB03051

Executive Engineer
PWD Dn. Chittorgarh

DIPR/C/7397/2025

कार्यालय उप वन संरक्षक, जयपुर

क्रमांक-एफ( )स्टोर/उवस/2024-25/11454 दिनांक-16/06/25

ई-निविदा विज्ञिप्त

इस कार्यालय द्वारा रेंज फागी में अधीन एन. एच. - 52 जयपुर से देवली खंड चेयनेज संख्या 03 किलोमीटर से 27 किलोमीटर दूरी में तार फैसिंग एंव पोधे सप्लाई कार्य की ई-निविदा इस कार्यालय के राजकाज नम्बर 15674141 दिनांक 03.06.2025 एवं 15667796 दिनांक 03.06.2025 ई-विज्ञिप्त जारी की गई थी। ई-निविदा विज्ञिप्त अखबार में प्रकाशन नही होने के कारण दिनांक 18.06.2025 को निर्धारित है। उक्त निविदा को संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in, And www. sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN NO. (FOR2526WSOB00394) Date 03-06-2025
UBN NO. (FOR2526GLOB00393) Date 03-06-2025

उप वन संरक्षक, जयपुर

DIPR/C/7898/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड टोडाभीम

क्रमांक : 409-417 दिनांकः 02-06-2025

ई-निविदा सूचना संख्याः 02/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जिला करौली (खण्ड टोडाभीम) में अटल पथ, सड़क नवीनीकरण एवं भवन निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्रीय सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न सक्षम श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है।

निविदा से संबंधित समस्त विवरण बेवसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से बेवसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।

1. PWD2526WSOB03351, 2. PWD2526WSOB03358
3. PWD2526WSOB03366, 4. PWD2526WSOB03368
5. PWD2526WSOB03370, 6. PWD2526WSOB03377

(के. के. मीना)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड टोडाभीम

DIPR/C/7512/2025

Office of Additional Chief Engineer PHED, Region Bharatpur

Telephone No 05644-221500, Email: rj_acebha@nic.in

Notice Inviting Bid No. 02-05/2025-26

Online bids for NIT No. 02-05/2025-26 (04 work), Costing Rs. 575.00 Lacs is invited on behalf of the Governor of Rajasthan from eligible enlisted in appropriate class contractors of PHED, Rajasthan and meeting eligibility criteria. Contractors enlisted with other departments of Government of Rajasthan and enlisted with CPWD/ Postal/ Telecom/ Railways/ MES/ other State Government/ Central Government undertakings/organization in class equivalent to "A/AA" class of Rajasthan (as applicable) and meeting prescribed eligibility criteria may also apply. Details of this Bid notification and pre-qualification criteria can also be seen in NIB exhibited on web site www.dipr.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in and http://eproc.rajasthan.gov.in. Bids are to be submitted online electronic format on web site http://eproc.rajasthan.gov.in from 04-06-2025 to 19-06-2025 (6PM) & Bids are to be opend at 11.00 AM on 20-06-2025.

NIB Code: PHE2526A1523
UBN No.- PHE2526WSOB03135
PHE2526WSRC03136
PHE2526WSRC03137
PHE2526WSRC03138

(Mohan Lal Meena)
Addl. Chief Engineer
PHED, Region Bharatpur

DIPR/C/7502/2025

करोड़ों रुपये का कपड़ा उधार मंगवाकर खुर्द-बुर्द किया, छह गिरफ्तार

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर की प्रताप नगर थाना पुलिस ने कपड़ा व्यापारियों से पांच से छह करोड़ रुपये का उधार में कपड़ा मंगवाकर खुर्द-बुर्द करने के मामले में गुजरात के भावनगर के छह लोगों को गिरफ्तार किया है।

प्रताप नगर थाना प्रभारी सुरजीत सिंह ने बताया कि इंडस्ट्रियल स्टेट, पांसल चौराहा स्थित बालाजी रेयोंस पार्टनर मनीष कोठारी ने निर्मल हसेजा निवासी भावनगर गुजरात सहित अन्य लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करवाई। इसमें बताया गया कि आरोपियों ने परिवादी की कम्पनियों को विश्वास में लेकर करीब 5-6 करोड़ रुपये का कपड़ा मंगवा लिया, जिसे धोखाधड़ी कर खुर्द-बुर्द कर दिया। इस रिपोर्ट पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच की। इसके बाद एएसआई चिराग अली के नेतृत्व में एक पुलिस टीम को भावनगर गुजरात भेजा गया।

टीम ने इस मामले में रसाला कैम्प, भावनगर निवासी खटयाणी कमलेश (36) पुत्र उधमदास, बालचंदानी रमेश (55) पुत्र तोतलदास निवासी इन्द्रप्रस्थ फ्लेट दिवडी रूपाणी सर्किल,भावनगर, घमेजा अजय भाई (34) पुत्र रूपचंद भाई निवासी रसाला कैम्प भावनगर, रजाई हरण (26) पुत्र सुरेश भाई कृष्णा बंसरी अपार्टमेंट न्यू सिंधुनगर भावनगर, ढेढी हिम्मत भाई (44) पुत्र शामजी भाई मिरा पार्क, सब्जी मार्केट घोघा रोड भावनगर व सरदारनगर, भावनगर निवासी जेसानी सुरेश (43) पुत्र गोपी भाई को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस आरोपितों से पूछताछ कर रही है। टीम में एएसआई चिराग अली के साथ दीवान सुनील कुमार, कांस्टेबल रामनिवास, राफल सिंह, नरेंद्र, आशीष, पिंटू शामिल थे, जिन्होंने आरोपी को गिरफ्तार कर अनुसंधान शुरू किया है।

भीलवाड़ा शहर की प्रताप नगर थाना पुलिस ने गुजरात के भावनगर के छह लोगों को गिरफ्तार किया।

एमजीएस यूनिवर्सिटी में कुलपति और विधायक के बीच विवाद गहराया

घाटे का बजट जारी करने का आरोप, मामला राज्यपाल और मुख्यमंत्री तक पहुंचा

बीकानेर, (निसं)। महाराजा गंगासिंह यूनिवर्सिटी (एमजीएसयू) में बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट (बोम) की बैठक को लेकर कुलपति और श्रीडूंगरगढ़ विधायक के बीच विवाद गहरा गया है। विधायक ने कुलपति पर नियमों की अनदेखी कर बैठक आयोजित करने और घाटे का बजट जारी करने का आरोप लगाया है। मामला अब राज्यपाल और मुख्यमंत्री तक पहुंच गया है।

यहां आयोजित बोम की बैठक में सदस्य के रूप में उपस्थित श्रीडूंगरगढ़ विधायक ताराचंद सारस्वत ने बैठक की वैधता पर ही सवाल उठाए। उनका कहना है कि बोम में मनोनीत सदस्य का मनोनयन नहीं होने के कारण बैठक नहीं की जा सकती थी। विधायक की आपत्ति पर कुलपति मनोज दीक्षित ने शासन से स्वीकृति का हवाला दिया, लेकिन कोई आदेश प्रस्तुत नहीं किया। विवाद का मुख्य मुद्दा वित्तीय वर्ष 2025-26 का बजट है, जिसमें 15,591 लाख रुपए की आय के मुकाबले 17,936 लाख रुपए का खर्च दिखाया गया है। करीब दो हजार करोड़ रुपए के इस बजट पर विधायक ने आपत्ति जताई थी, उनका आरोप है कि कुलपति ने बैठक में बजट स्वीकृत न करने की सहमति जताई थी, लेकिन बाद में इसे स्वीकृत कर दिया गया। विधायक सारस्वत ने राज्यपाल को एक पत्र लिखकर बजट को संशोधित करने और धन के दुरुपयोग को रोकने की मांग की है। उन्होंने कुलपति पर बिना अनुमति बैठक बुलाने और मना करने के बावजूद घाटे का बजट जारी करने का आरोप लगाया है।

कुलपति मनोज दीक्षित का कहना है कि बैठक नियमानुसार आयोजित की गई थी। उन्होंने कहा कि विधायक ने बैठक के दौरान कोई लिखित आपत्ति दर्ज नहीं कराई। उन्होंने धन के दुरुपयोग के आरोपों को भी खारिज करते हुए कहा कि विधायक की शिकायत का जवाब सक्षम स्तर पर दिया जाएगा। इस विवाद ने विश्वविद्यालय प्रशासन और राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी है। विश्वविद्यालय के वित्तीय प्रबंधन और प्रशासनिक निर्णयों पर सवाल उठ रहे हैं।

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर

क्रमांक निदे/अ.ख.अ.नीलामी/निलामी (ML 05)/2025/ई – 11399

ई–नीलामी विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली, 2017 के अध्याय–III के तहत निम्नांकित प्लॉटो के आंवटन ई–नीलामी के माध्यम से किये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर बोली आमंत्रित की जाती है। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:–

जिला	तहसील	राजस्व ग्राम	खनिज	कुल प्लॉट
धौलपुर	सरमथुरा	कछपुरा	सेण्डस्टोन	5
झुंझुनू	खेतडी	नालपुर	मेसेनरी स्टोन	1
ब्यावर	बिजयनगर	रूपाहेली खुर्द	ग्रेनाईट, मेसेनरी स्टोन	7
बून्दी	बून्दी	गुवार	सैण्ड स्टोन	5
कोटा	लाडपुरा	मवासा	मेसेनरी स्टोन	1
		मांदलिया	मेसेनरी स्टोन	1
सिरोही	सिरोही	फलवदी	ग्रेनाईट	13
		वलदरा	मेसेनरी स्टोन (एम-सैण्ड हेतु)	2
चित्तौड़गढ़	भदेसर	भीमलोद	चाईना क्ले, क्वार्टजाइट एवं मेसेनरी स्टोन	1
		सोमावास	चायना क्ले, क्वार्टजाईट व मेसेनरी स्टोन	1
	गंगरार	अमरपुरा	ग्रेनाईट व मेसेनरी स्टोन	17
भीलवाड़ा	बनेड़ा	रूपाहेली खुर्द	ग्रेनाईट	5
	हमीरगढ़	दलेलसिंहजी का खेड़ा	चायना क्ले, मेसेनरी स्टोन (क्वार्टजाईट)	1
	आसीन्द	ईन्द्रपुरा	ग्रेनाईट	10
		कटार	ग्रेनाईट	10
		दौलतगढ़	ग्रेनाईट	3
		सांकड का बाडिया	ग्रेनाईट	1
भीलवाडा	बिजौलिया	देवनगर	एम-सेण्ड के निर्माण हेतु ऑवरबर्डन डंप के परमिट	1
		देवनगर, सरकीकुडी	एम-सेण्ड के निर्माण हेतु ऑवरबर्डन डंप के परमिट	1
प्रतापगढ	छोटीसादडी	जीवनपुरा	मेसेनरी स्टोन	5
		जीवनपुरा	मेसेनरी स्टोन	8
प्रतापगढ़	धरियावाद	लोहागढ़	मारबल	1
डूंगरपुर	डूंगरपुर	दामड़ी	मेसेनरी स्टोन	3
		दामड़ी	मेसेनरी स्टोन	3
डीडवाना–कुचामन	डीडवाना	कोलिया	मेसेनरी स्टोन	10
उदयपुर	घांसा	चन्देसरा	मेसेनरी स्टोन (एम-सैण्ड हेतु)	2
	खेरवाडा	बंजारिया	मेसेनरी स्टोन (एम-सैण्ड हेतु)	2
		मिठीमहुडी	सोपस्टोन व मेसेनरी स्टोन	2
	मावली	चन्देसरा	मेसेनरी स्टोन	5
	नयागांव	महीडा	मेसेनरी स्टोन	1
		नयागांव	मेसेनरी स्टोन	2
		महीडा	मेसेनरी स्टोन	2
डूंगरपुर	सीमलवाडा	चाडोली	मेसेनरी स्टोन	6
			मेसेनरी स्टोन (एम-सैण्ड हेतु)	3
			मेसेनरी स्टोन (एम-सैण्ड हेतु)	1
		सीथल	मेसेनरी स्टोन	9
	डूंगरपुर	अंदरखेत	मेसेनरी स्टोन	1
	दोवडा	भचडीया	मेसेनरी स्टोन	6
			मेसेनरी स्टोन (एम-सैण्ड हेतु)	2
डूगंरपुर	दोवडा	फलोज	मेसेनरी स्टोन	1
दौसा	सिकराय	कालवान	मेसेनरी स्टोन	1
जयपुर	रामपुरा डाबडी	खोरा श्यामदास	मेसेनरी स्टोन	1
जोधपुर	औसिया	पाबूनगर	मेसेनरी स्टोन	13
जैसलमेर	जैसलमेर	हडडा	लाइमस्टोन (डाइमेन्सनल)	15
नागौर	रियाबड़ी	पिपलिया	ग्रेनाईट	6
	डेगाना	हरसौर	मेसेनरी स्टोन	5
	लाडनूं	बाकलिया	मेसेनरी स्टोन	7
टोंक	मालपुरा	फूलमालियान	ग्रेनाईट	13
अजमेर	भिनाय	रामालिया	ग्रेनाईट व मेसेनरी स्टोन	1
	सावर	सावर	मारबल	2
बाड़मेर	बायतु	करणीपुरा चक चारणीत (नौसर)	मेसेनरी स्टोन	1
राजसमंद	नाथद्वारा	मडका	ग्रेनाईट	1
			कुल प्लॉट	227

विशेष नोट:–
1 प्लॉटों का विस्तृत विवरण, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण, ई–ऑक्शन की शर्तें विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthan.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी RailTel की वेबसाइट http://rajminorblocks.enivida.com पर उपलब्ध हैं।

(दीपक तंवर)
निदेशक

DIPR/C/7406/2025

प्रधानमंत्री ने 11 वर्षों में बदली गरीब की तकदीर और हिंदुस्तान की तस्वीर : राजेंद्र राठौड़

राजेंद्र राठौड़ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियों पर आधारित संकल्प से सिद्धि अभियान के तहत प्रेस वार्ता आयोजित की।

- मोदी सरकार के 11 वर्षों की उपलब्धियों पर संकल्प से सिद्धि अभियान के तह भाजपा नेता राजेंद्र राठौड़ की प्रेसवार्ता

जयपुर । भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेंद्र राठौड़ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियों पर आधारित संकल्प से सिद्धि अभियान के तहत आयोजित प्रेस वार्ता में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने अभूतपूर्व प्रगति की है। राठौड़ ने कहा कि 11 वर्ष पहले जिन संकल्पों के साथ मोदी जी की अगुवाई में सरकार बनी थी, वे संकल्प सिद्धि तक पहुंच रहे है। हिंदुस्तान की तस्वीर और गरीब की तकदीर बदल गई। ''वर्ल्ड बैंक के अध्ययन के अनुसार, देश में 27 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से ऊपर आए हैं। हमारी अर्थव्यवस्था दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है। यह मोदी सरकार के नेतृत्व में देश की आर्थिक तरक्की है।

भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की सुरक्षा और विदेश नीति भी मजबूत एवं सुदृढ़ हुई है। फिर चाहे वो पाकिस्तान में आतंकी अड्डों को नेस्तनाबूद करने के लिए चलाया गया ऑपरेशन सिंदूर हो या फिर 1960 का सिंधु जल समझौता रद्द करने का ऐतिहासिक फैसला हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाने का काम किया है। इंदिरा गांधी नहर परियोजना के तहत 649 किलोमीटर लंबी नहर प्रणाली से 16.17 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई हो रही है। अब सिंधु जल समझौता रद्द करने से राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, गुजरात और जम्मू-कश्मीर को सीधा फायदा होगा। सिंधु और चिनाब का पानी रावी-व्यास के माध्यम से हरिके बैराज में पहुंचेगा और हरिके बैराज से पानी इंदिरा गांधी नगर परियोजना के माध्यम से राजस्थान को मिलेगा। इससे राजस्थान की आर्थिक स्थिति और मजबूत होगी। इसी तरह राम जल सेतु लिंक परियोजना से राजस्थान के 40 प्रतिशत हिस्से में, करीबन 3.25 लाख जनसंख्या को पेयजल, 4.03 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को सिंचाई का करीबन 4102 मिलियन क्यूबीक मीटर पानी मिलेगा। भजनलाल सरकार के अल्पकार्यकाल में इस परियोजना में 9446 करोड़ रूपए के कार्य प्रगति पर है, तथा 12674 करोड़ रूपए के टेंडर आमंत्रित किए जा चुके है। इसी तरह यमुना जल समझौते के तहत हरियाणा के ताजेवाला हैड से शेखावाटी के चूरू, झुंझुनूं और सीकर के लोगों को 54400 करोड़ लीटर पानी मिलेगा। इस समझौते से चूरू में 35 हजार हेक्टयेर तथा झुंझुनूं में 70 हजार हेक्टयेर भूमि सिंचाई हो पाएगी।

भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि कृषि प्रधान देश में किसानों के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ऐतिहासिक कार्य किए। देश में कृषि बजट 2013-14 में 21,930 करोड़ था, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2025-26 में बढ़ाकर 1,27,200 करोड़ कर दिया। इतना ही नहीं, देश में बाजरे की एमएसपी 2013-14 में 1,250 थी, जिसे मोदी सरकार ने दोगुनी से भी अधिक करते हुए 2,775 कर दी। इसी तरह गेहूं की एमएसपी बढ़ाकर 2,575 रूपए कर दी गई। राठौड़ ने कहा कि कांग्रेसी नेता मोदी सरकार को सिर्फ कौंसने का काम करते है, जबकि 2014 से अब तक राजस्थान को केंद्र से 2,11,000 करोड़ की राशि मिली है।

केंद्र की मोदी सरकार के नेतृत्व में प्रदेश की डबल इंजन सरकार विकसित राजस्थान की दिशा में तेजी से कार्य कर ही है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि राजस्थान में 2025-26 में पूंजीगत व्यय 53,686 करोड़ रखा गया है, जो कांग्रेस सरकार के 2023-24 के बजट से दोगुना है। भाजपा के वरिष्ठ नेता राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 साल में देश के युवा,महिला, किसान और गरीब के कल्याण के लिए कार्य किया है।

खाद्य मंत्री ने किया पुस्तिकाओं का ऑनलाइन विमोचन

जयपुर। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति तथा उपभोक्ता मामले मंत्री सुमित गोदारा ने प्रदेश के उपभोक्ता संगठनों से केंद्र और राज्य सरकार की उपभोक्ता संरक्षण नीति और नियमों की अक्षरशः पालना में सक्रिय भागीदारी निभाने का आ ान किया ताकि उपभोक्ता हितों की रक्षा हो तथा उपभोक्ताओं में इन नीतियों के प्रति अधिकतम जागरूकता आए।

खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग के प्रमुख शासन सचिव सुबीर कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को शासन सचिवालय में स्वैच्छिक उपभोक्ता संगठनों के साथ संवाद बैठक का आयोजन किया गया।

कुमार ने कहा कि उपभोक्ता अधिकारों के संरक्षण और सशक्तीकरण की दिशा में राज्य सरकार निरंतर प्रभावी कार्य कर रही है। हर क्षेत्र में हर पल सेवाओं का उपभोग हो रहा है, इसी के साथ साइबर ठगी, नकली वस्तु, बिना हॉलमार्किंग के स्वर्ण आभूषण सहित विभिन्न माध्यमों से उपभोक्ताओं से ठगी हो रही है। राज्य सरकार का प्रयास है कि इस पर अंकुश लगे।

आमजन के बीच जागरूकता का अभाव न रहे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार उपभोक्ता हितैषी संकल्पना के अनुरूप कार्य कर रही है।

जीजा ने किया चौदह वर्षीय नाबालिग साली से दुष्कर्म

- आरोपित के खिलाफ पुलिस ने दुष्कर्म और पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच में जुटी है

जयपुर। हरमाड़ा थाना इलाके में एक जीजा ने नाबालिग साली से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पीड़िता का आरोप है कि अपनी पत्नी को ससुराल भेज कर नाबालिग साली से दरिंदगी की और फिर चार महीने तक डरा-धमकाकर नाबालिग साली से देह शोषण करता रहा। विरोध करने पर जान से मारने की धमकी भी दी। इसके चलते थाने में चाइल्ड हेल्प लाइन की मदद से पहुंची नाबालिग पीड़िता ने आरोपित जीजा के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

पुलिस ने बताया कि हरमाड़ा की रहने वाली चौदह वर्षीय नाबालिग लडकी ने मामला दर्ज करवाया है कि उसकी बड़ी बहन शादी के बाद पति के साथ जयपुर में रहती है और चार साल पहले उसकी बहन मिलने के लिए पीहर आई थी। पीहर आने पर वह उसे अपने साथ जयपुर ले आई। जयपुर में बहन और जीजा के साथ रहने के दौरान वह घर का कामकाज करती। एक दिन नाबालिग साली से आरोपित जीजा ने गंदी हरकत की। नाबालिग की शिकायत पर बहन ने अपने पति को डांटा। इसके बाद कुछ बहना बनाकर बहन को ससुराल भेज दिया। वह अपने जीजा के साथ किराए के मकान पर अकेली रह गई। घर में अकेला पाकर आरोपित जीजा ने उसके साथ दुष्कर्म किया। विरोध करने पर उसे जान से मारने की धमकी दी। पिछले चार महीने से दिन-रात आरोपी जीजा डरा-धमकाकर नाबालिग साली से देह शोषण करता रहा। परेशान होकर नाबालिग पीड़िता ने चाइल्ड हेल्प लाइन को शिकायत दी। चाइल्ड हेल्प लाइन टीम ने नाबालिग के पास पहुंचकर आपबीती सुनी। काउंसलर के साथ नाबालिग पीड़िता ने थाने पहुंचकर आरोपित खिलाफ मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने दुष्कर्म और पोक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

घर से एंटीक ट्रॉफी और झूमर चुराने वाला गिरफ्तार

जयपुर। जालूपुरा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए घर से बेशकीमती एंटीक ट्रॉफी और झूमर चुराने वाले आरोपित को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपित के पास से चोरी किए गए दो एंटीक ट्रॉफी और एक झूमर भी बरामद किया है।

फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर उत्तर राशि डोगरा डूडी ने बताया कि जालूपुरा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 12 जून को घर से बेशकीमती एंटीक ट्रॉफी और झूमर चुराने वाले 20 वर्षीय सन्नी हरिजन उर्फ बाबू निवासी ज्योति नगर जयपुर को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने आरोपित के पास से चोरी किए गए दो एंटीक ट्रॉफी और एक झूमर जब्त किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित नशा करने का आदि है और नशे के लिए रुपये नहीं होने पर घर में घुसकर चोरी की वारदात करता है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

'फर्जी नंबर्स से हो रही बड़ी धोखाधड़ी, गोपनीय जानकारी सुरक्षित रखें'

- साइबर ठगों का नया जालःगूगल सर्च पर हेल्पलाइन नंबरों से सावधान

जयपुर । साइबर अपराधी लगातार अपनी चालें बदल रहे हैं और इस बार उन्होंने लोगों की एक आम आदमी को निशाना बनाया है, ऑनलाइन हेल्पलाइन नंबर खोजना। राजस्थान पुलिस की साइबर क्राइम शाखा ने आम जनता को साइबर धोखाधड़ी की नई तकनीक के प्रति आगाह किया है, जिसमें धोखेबाज गूगल सर्च परिणामों में फर्जी हेल्पलाइन नंबर डालकर लोगों को ठगी का शिकार बना रहे हैं।

एसपी साइबर क्राइम पुलिस मुख्यालय शांतनु कुमार ने बताया कि साइबर ठग अब एक खास सर्च एल्गोरिथम का इस्तेमाल कर रहे हैं। वे प्रमुख बैंकों, होटलों, कंपनियों और अन्य हेल्पलाइन आदि के नाम से फर्जी नंबर इंटरनेट पर खासकर गूगल सर्च परिणामों में सूचीबद्ध कर देते हैं। जब कोई व्यक्ति इन सेवाओं के लिए हेल्पलाइन नंबर गूगल पर खोजता है और गलती से इन फर्जी नंबरों पर कॉल कर बैठता है तो अपराधी उनसे जुड़ जाते हैं। साइबर ठग पीड़ितों को मनचाही सेवा देने का झांसा देते हैं और उन्हें कोई विशेष ऐप डाउनलोड करने या किसी लिंक पर क्लिक करने के लिए उकसाते हैं।

एक बार जब उपयोग कर्ता उनकी बातों में आकर ऐसा कर देते हैं तो साइबर अपराधियों को उनकी डिवाइस का पूरा एक्सेस मिल जाता है।

इसका मतलब है कि आपकी बैंक ऐप, व्यक्तिगत डेटा और अन्य गोपनीय जानकारी तक उनकी सीधी पहुंच हो जाती है। इसके बाद अपराधी या तो सीधे आपके खातों से पैसे निकाल लेते हैं या आपको भुगतान करने के लिए मजबूर करके ठगी का शिकार बनाते हैं।

राजस्थान पुलिस ने इस बढ़ती धोखाधड़ी से बचने के लिए आम लोगों को कुछ महत्वपूर्ण सलाह दी है:

गूगल सर्च परिणामों पर आँख बंद करके भरोसा न करें: किसी भी बैंक, होटल, या सेवा प्रदाता का हेल्पलाइन नंबर हमेशा उनकी आधिकारिक वेबसाइट से ही लें। थर्ड-पार्टी वेबसाइट्स या गूगल सर्च के परिणाम हमेशा सही नहीं होते।

यदि कोई आपको कोई लिंक भेजता है और उसे क्लिक करने को कहता है तो अत्यधिक सतर्क रहें। ऐसे लिंक्स पर क्लिक करने से आपके डिवाइस का नियंत्रण साइबर ठगों के हाथों में जा सकता है।

साइबर अपराधी हमेशा नए तरीके खोजते रहते हैं। इसलिए ऑनलाइन लेनदेन करते समय और जानकारी साझा करते समय हमेशा सतर्क रहें।

यदि आप इस तरह की किसी भी साइबर धोखाधड़ी का शिकार होते हैं, तो बिना देर किए तुरंत शिकायत दर्ज कराएं। आप साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर कॉल कर सकते हैं या साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल पर अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

दहशत फैलाकर अवैध वसूली करने वाला शातिर गैंगस्टर गिरफ्तार

विधायकपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दहशत फैलाकर अवैध वसूली करने वाली किलर गैंग के गैंगस्टर को गिरफ्तार किया।

जयपुर। विधायकपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दहशत फैलाकर अवैध वसूली करने वाली किलर गैंग के गैंगस्टर को गिरफ्तार किया है। पिछले कई महीने से हत्या के प्रयास के दो मामलों में आरोपी गैंगस्टर फरार चल रहा था। पुलिस जानकारी में सामने आया कि दोस्तों के साथ मिलकर बनाई किलर गैंग दहशत फैलाकर अवैध वसूली का काम करती थी। पुलिस गिरफ्तार आरोपी से फिलहाल पूछताछ कर रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (दक्षिण) दिगंत आनंद ने बताया कि विधायकपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दहशत फैलाकर अवैध वसूली करने वाली किलर गैंग के मास्टरमाइंड मुज्जमिल (30) निवासी हसनपुरा सदर को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस जांच पड़ताल में सामने आया कि गिरफ्तार हिस्ट्रीशीटर मुज्जमिल ने दर्जनभर से अधिक दोस्तों के साथ मिलकर किलर नाम रखकर गैंग बनाई और किलर गैंग का काम दहशत फैलाकर होटलों से अवैध वसूली करना है। जुलाई-2024 में गैंग के बदमाशों ने विधायकपुरी इलाके में स्थित एक होटल में तोड़फोड़ करने के साथ जानलेवा हमला किया। इसे अलावा सितम्बर-2024 में एमआई रोड पर विरोधी गैंग से झगड़े में जानलेवा हमला किया। जिसमें एक कार को आग लगाकर जला दिया।

शराब की तस्करी करने वाला शराब तस्कर गिरफ्तार

जयपुर। जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल जिला स्पेशल टीम (सीएसटी) ने मुहाना थाना इलाके में ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से शराब की तस्करी करने वाले एक शराब तस्कर को गिरफ्तार किया है और उसके पास से दस पेटी अवैध शराब जब्त की है। जिसमें कई ब्रांड की शराब मिली। साथ ही परिवहन में प्रयुक्त एक दुपहिया वाहन भी जब्त किया है। फिलहाल पुलिस आरोपित से पूछताछ करने में जुटी है। पुलिस उपायुक्त अपराध कुंदन कंवरिया ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत सीएसटी ने मुहाना थाना इलाके में अवैध रूप से शराब की तस्करी करने वाले शराब तस्कर भंवर सिंह निवासी निवाई जिला टोंक को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित शराब ठेकों से शराब लेकर अवैध शराब बेचने वाले तस्करों को सप्लाई करता है।

दी पैलेस स्कूल को मिला बम से उड़ाने की धमकी भरा ईमेल

जयपुर। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद राजधानी जयपुर में लगातार अज्ञात आरोपित की ओर से किसी न किसी सरकारी संपत्ति को बस से उड़ाने की धमकी भरा ईमेल भेज रहे,लेकिन पुलिस जांच में कुछ नहीं मिला था।

इसी चलते माणक चौक थाना इलाके के जलेब चौक स्थित दी पैलेस स्कूल को सोमवार को बम से उड़ाने की धमकी भरा ईमेल मिलने का मामला सामने आया है। इसके बाद स्कूल प्रशासन की ओर से पुलिस को सूचना दी गई। जहां मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने स्कूल को खाली कराकर डॉग स्क्वायड और बम निरोधक दस्ते की ओर से तलाशी अभियान चलाया। पुलिस टीमें स्कूल का चप्पा-चप्पा सर्च किया।

जानकारी के अनुसार जलेब चौक स्थित दी पैलेस स्कूल की मेल आईडी पर रविवार मेल आया था,लेकिन स्कूल बंद था। जिसके चलते किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। सोमवार सुबह स्कूल प्रशासन ने मेल पर ध्यान देने के बाद पुलिस कंट्रोल रूम को मेल मिलने की जानकारी दी गई। इसके बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और सर्च अभियान चलाया। सर्च अभियान के दौरान पुलिस को किसी तरह की कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है। पुलिस की टीमें ईमेल करने वाले व्यक्ति को ट्रेस कर रही है।

अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर कुंवर राष्ट्रदीप ने बताया कि पुलिस मेल भेजने वाले की पहचान करने की कोशिश में जुट गई है। साथ ही साइबर टीम को भी अलर्ट पर रखा गया है। सुरक्षा की दृष्टि से स्कूल को पूरी तरह सील कर दिया गया है। पुलिस और सुरक्षा बलों ने कई घंटों तक सर्च अभियान चलाया।

सर्च अभियान में कुछ भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिलने पर अधिकारियों ने राहत की सांस ली। पुलिस की साइबर शाखा ई-मेल भेजने वाले का पता लगाने की कोशिश कर रही है।

सामाजिक न्याय मंत्री ने ली देवनारायण योजना के अंतर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षा बैठक

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग मंत्री अविनाश गहलोत ने अति पिछड़ा वर्ग के उत्थान के लिए प्रगति की समीक्षा की।

- लंबित प्रकरणों को तय समयावधि में निस्तारित करने के दिए निर्देश

जयपुर । सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग मंत्री अविनाश गहलोत ने सोमवार को देवनारायण योजना के अंतर्गत अति पिछड़ा वर्ग के उत्थान के लिए संचालित योजनाओं की भौतिक एवं वित्तीय प्रगति की समीक्षा की।

अविनाश गहलोत ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशा है कि राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के सभी तबकों को मिले। इस कारण से लगातार बैठकों का आयोजन किया जा रहा है। बैठक में देवनारायण छात्रा स्कूटी वित्तरण एवं प्रोत्साहन राशि योजनान्तर्गत गत वर्षों की स्कूटी वितरण एवं प्रोत्साहन राशि, कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी (एस.सी. छात्रा) योजनान्तर्गत गत वर्षों की स्कूटी वित्तरण की अद्यतन स्थिति, योजना के तहत संचालित कन्या महाविद्यालय बयाना एवं महाविद्यालय नादौती में स्वीकृत पदों की स्थिति, देवनारायण गुरुकुल योजनान्तर्गत वर्ष सान्याअवि द्वारा आवंटित बजट एवं व्यय, देवनारायण गुरुकुल योजनान्तर्गत वर्ष 2024-25 में प्रवेशित क्षमता के विरूद्ध विद्यालय वार आवंटित छात्र-छात्राओं की संख्या एवं उसके विरूद्ध प्रवेशित छात्र-छात्राओं की समीक्षा की गई।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने अति पिछड़ा वर्ग उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनान्तर्गत आवंटित बजट के विरूद्ध व्यय होने,अति पिछड़ा वर्ग पूर्व मैट्रिक छात्रवृति योजनान्तर्गत वर्ष 2024-25 में आवंटित बजट के विरूद्ध व्यय राशि की जानकारी ली। साथ ही देवनारायण योजनान्तर्गत संचालित नवीन प्राथमिक विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में स्वीकृत पदों के विरूद्ध पदस्थापन की स्थिति भी जानी। गहलोत ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा विभाग के अधिकारियों से देवनारायण योजनान्तर्गत 152 उप स्वास्थ्य केन्द्रों के भवन निर्माण के लिए वर्ष 2009-10 से 2012-13 तक आवंटित राशि तथा व्यय व उप स्वास्थ्य केन्द्रों के भवन निर्माण के बारे में भी जानकारी ली। इसके अलावा योजनान्तर्गत स्वीकृत 207 उप स्वास्थ्य केन्द्रों के संचालन के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 में बजट प्रावधान के विरुद्ध व्यय राशि तथा स्वास्थ्य केन्द्रों में स्वीकृत पदों के विरूद्ध पदस्थापन के संबंध में भी निर्देश दिए। उन्होंने सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों से योजनान्तर्गत छात्रावासों, आवासीय विद्यालयों के भवन निर्माण कार्यों के लिए वर्ष 2024-25 में आवंटित बजट एवं व्यय और निर्माण कार्यों की भी समीक्षा की। गहलोत ने महिला एवं बाल विकास विभाग से देवनारायण योजनान्तर्गत 195 आंगनबाड़ी केन्द्रों के भवन निर्माण के लिए विगत वर्षों में आवंटित राशि के मुकाबले व्यय तथा निर्माण की स्थिति जानी तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके अलावा कौशल नियोजन एवं उद्यिमता, प्राविधिक शिक्षा निदेशालय से योजनान्तर्गत स्वीकृत आई.टी.आई. केन्द्रों के संचालन के लिए आवंटित बजट राशि एवं व्यय की समीक्षा की।

ऑनलाइन गेम्स में सट्टा कारोबार का भंडाफोड़

जयपुर। मानसरोवर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए ऑनलाइन गेम्स में सट्टा कारोबार का भंडाफोड़ करते हुए आरोपित तुषार बारिया को गिरफ्तार किया है और साथ ही पुलिस ने आरोपी से 8 लाख रुपए की सट्टा राशि भी बरामद की है। पुलिस के अनुसार मास्टरमाइंड जितेंद्र सोनी की पुलिस तलाश कर रही है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित नवयुवकों को प्रलोभन में लालच देकर सट्टा कारोबार चलाया जा रहा था। एसएचओ लखन खटाना ने बताया कि पीड़ित विनोद चौधरी ने मामला दर्ज करवाया था कि जानकार अर्जुन चौधरी के मार्फत जितेंद्र सोनी से मुलाकात हुई थी। जहां विश्वास मेंआकर जितेंद्र सोनी के पास ऑनलाइन सट्टा खेलने के लिए 8 लाख रुपए जमा करवाए और .का लिंक और एक आईडी पासवर्ड हासिल किया। जहां आरोपित कसीनो के खेल में हार गया था रुपए। जिस पर जितेंद्र सोनी ने पीड़ित को फोन कर ऑनलाइन गेम्स में बड़ा प्रॉफिट और करोड़ों रुपए कमाने का झांसा दिया और झांसा देकर जितेंद्र सोनी ने फिर से 12 लाख रुपए ऑनलाइन बैंक खाते में जमा करवाए।

सार-समाचार

साइकिल चोर चढ़ा पुलिस के हत्थे

जयपुर। करधनी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए महंगी साइकिल चुराने वाले एक शातिर चोर को पकडा है और उसके पास से चोरी की तेरह महंगी साइकिल भी जब्त की है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है पुलिस उपायुक्त जयपुर (पश्चिम) अमित कुमार ने बताया कि करधनी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए महंगी साइकिल चुराने वाले शातिर चोर मौसम जथुरिया (20)निवासी मीणा वाला करणी विहार जयपुर को गिरफ्तार कर उसके पास से चुराई गई तेरह महंगी साइकिल बरामद की है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

प्रदेश में 125 नये एफपीओ गठन के लिए एक्सप्रेशन आफ इंटरेस्ट बैठक का आयोजन

जयपुर । राज्य की प्रस्तावित एफपीओ नीति एवं बजट घोषणा के अनुसार वर्ष 2025-26 में 125 नये एफपीओ बनाए जाने हैं। इनके गठन में क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन (सीबीबीओ) को ऑन बोर्ड करने हेतु एक्सप्रेशन आफ इंटरेस्ट' के संबंध में कृषि एवं उद्यानिकी विभाग के शासन सचिव राजन विशाल की अध्यक्षता में सोमवार को पंत कृषि भवन में बैठक का आयोजन किया गया। शासन सचिव ने बैठक में एफपीओ नीति को और प्रभावी बनाने के लिए निर्देश दिए कि अन्य राज्यों में लागू की गई एफपीओ नीति के प्रभावी बिन्दुओं का व्यापक अध्ययन कर राज्य की एफपीओ पॉलिसी में शामिल किया जाए ताकि अधिक से अधिक किसान समूहों को मजबूती प्रदान की जा सके। बैठक में लक्ष्मण प्रसाद शर्मा, संयुक्त निदेशक (एफपीओ) शाखा एवं सचिव, राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड द्वारा राज्य की प्रस्तावित एफपीओ नीति के ड्राफ्ट का प्रारूप प्रस्तुत किया गया। जिसमें केन्द्र सरकार की एफपीओ पर राष्ट्रीय नीति लागू होने के पश्चात् राज्यों ने भी स्वयं की एफपीओ पॉलिसी बनाये जाने की इच्छा व्यक्त की गई। राज्य एफपीओ पर अपनी स्वयं की पॉलिसी लाने के लिये पूरी तरह तैयार है जिसका उद्देश्य एफपीओ की भूमिका को एकीकृत और मजबूत करना है। राज्य की एफपीओ नीति का मुख्य उद्देश्य इन समूहों को सुदृढ़ीकरण हेतु आधारभूत संरचना विकसित करना, बाजार एवं ऋण संपर्क के लिए समर्थन प्रदान करना, सब्सिडी प्रदान करना और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से एफपीओ को सहायता प्रदान करना है। बैठक में प्रशासक, राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड श्रीमान राजेश कुमार चौहान, संयुक्त निर्देशक कृषि विपणन विभाग संजय कुमार व्यास, संयुक्त निर्देशक कृषि विपणन विभाग टी. आर. मीणा, संयुक्त निदेशक कृषि विपणन विभाग केशर सिंह, संयुक्त निदेशक उद्यानिकी राजेन्द्र सिंह खीचड तथा नाबार्ड, एनसीडीसी, आईटीसी, आरएलडीपी, राजीविका, एफओआरवीसीके प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।

मिलने के बहाने धोखे से बुलाकर विवाहिता से दुष्कर्म

जयपुर। जालूपुरा थाना इलाके में मिलने के बहाने धोखे से बुलाकर परिचित ने होटल में एक विवाहिता से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पीडिता का आरोप है कि विरोध करने पर डराने-धमकाने के साथ मारने की धमकी दी। इस संबंध में थाने में पीड़ित विवाहिता ने आरोपित परिचित के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। पुलिस ने बताया कि शास्त्री नगर की रहने वाली 28 वर्षीय विवाहिता ने मामला दर्ज करवाया है कि कुछ समय पहले उसकी आरोपित परिचित से मुलाकात हुई थी। इसके बाद दोनों की आपस में बातचीत होने लगी। बातचीत के दौरान आरोपी ने मिलने की कहा। आरोपित ने 15 जून को मिलने के बहाने बुलाया,जहां मिलने जाने पर आरोपित परिचित धोखे से विवाहिता को त एक होटल में ले गया। जहां आरोपित ने कमरे में अकेला पाकर उसके साथ जबरदस्ती की। विरोध करने पर डरा-धमकाने के साथ मारने की धमकी देकर रेप किया। इस बारे में किसी को बताने पर अंजाम बुरा होने की धमकी दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच पड़ताल में जुटी है।

मोबाइल छीनने वाले दो बदमाश आए पुलिस गिरफ्त में

जयपुर। सांगानेर सदर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए राहगीरों से मोबाइल छीनने वाले दो बदमाशें को धर-दबोचा है और उनके पास से छीने गए सात मोबाइल सहित वारदात में प्रयुक्त एक दुपहिया वाहन भी जब्त किया है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण दिगंत आनंद ने बताया कि सांगानेर सदर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए राहगीरों से मोबाइल छीनने वाले 21 वर्षीय दिलीप महावर निवासीमालपुरा गेट जयपुर और 18 वर्षीय नीरज महावर निवासी सांगानेर जयपुर को गिरफ्तार किया है। जिनके पास से राहगीरों से छीने गए सात मोबाइल सहित वारदात में प्रयुक्त एक दुपहिया वाहन भी बरामद किया है। पुलिस जानकारी में सामने आया कि आरोपित नशा करने के आदि है और नशा पूर्ति के लिए मोबाइल स्नेचिंग कर उन्हे बेच कर नशा करते है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

चोरी के दुपहिया वाहन सहित वाहन चोर गिरफ्तार

जयपुर। बिंदायका थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले एक शातिर वाहन चोर को गिरफ्तार किया है और उसके पास से चोरी के दो दुपहिया वाहन बाइक भी बरामद की है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि बिदांयका थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए दुपहिया वाहन चुराने वाले वाहन चोर संदीप मीणा उर्फ गोल्या निवासी बिंदायका जयपुर को गिरफ्तार किया है। जिसके पास से बिंदायका और कालवाड थाना इलाके से चुराई गई दो बाइक भी बरामद की है। पुलिस पूछताछ में और भी कई वारदातें खुलने की आशंका जताई जा रही है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से नीट टॉपर महेश कुमार ने की मुलाकात

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर नीट परीक्षा-2025 में देशभर में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले महेश कुमार ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने हनुमानगढ़ जिला निवासी महेश को नीट परीक्षा में असाधारण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। उन्होंने महेश को भगवान श्रीकृष्ण का भित्ति चित्र और पेन भेंट किया। इस दौरान महेश के माता-पिता भी मौजूद रहे।

ARBIT
it happens here...

World Day to Combat Desertification and Drought

Imagine a world where the land stays healthy, and water is always enough for everyone. That's what the World Day to Combat Desertification and Drought aims for. Celebrated every year, this day is more than just a date on the calendar. It's a global call to protect our planet's land from becoming desert and find ways to fight drought. The United Nations set this day to remind us all of how important it is to keep our land rich and fertile. You can celebrate this day by raising awareness and show how to stop the land from worsening and help it recover. It's about sharing knowledge and working together to make sure that our land and water are protected for the future.

#RESEARCH

It's About The Sense of Touch

The brain receives signals related to touch, temperature, and pain, that's tactile information.

New research sheds light on how the brain combines external information and internal memory to build a sense of touch. When you touch something, whether stepping onto a sandy beach or stroking the back of a dog, sensations fly into your brain. You feel the coarse grain of the sand under your feet, the fluffiness of the fur on your hand.

But you also bring a bit of yourself into the feeling: Along with the external stimulation from the beach or pup, there's the memory of past moments, towelling sand from your toes during a summer vacation, snuggling with a much-missed family pet. We all agree that something feels abrasive or soft, but interpret that sensation slightly differently. “When we perceive our environment, we're actually doing two things,” says Boston University neurobiologist Jerry Chen, an expert on cognitive function. “We're taking in all the senses, all the physical elements of the world; at the same time, we are applying our own types of inference, subjective interpretation of what we think we're perceiving.”

In a new study in *Science*, Chen illuminates that process. Looking at mouse brains, Chen and a team of researchers discovered a circuit in the primary somatosensory cortex, the part of the brain that receives signals related to touch, temperature, and pain, that's dedicated to computing tactile information. He says that the circuit helps the brain figure out how to balance the stimulation coming from outside the body with existing knowledge.

The study may be significant for our understanding of a range of neurological disorders and neuropsychiatric diseases that can alter sensory perception, from strokes to autism spectrum disorder. Improved knowledge of the brain's circuits, says Chen, an assistant professor of biology, may pave the way for more targeted treatments and interventions.

As part of their dive into the brain's workings, the researchers developed a new method for surveying and watching cells: a platform that generates activity in the brain, shows the molecular composition of the firing cells, and helps compute all of the data. It allowed Chen to look at how different neurons in the cortex reacted and communicated when an animal touched an object, and how those neurons adapted when something in the environment shifted. Chen and his team used the Allen Institute's atlas of the mouse brain, a catalogue of the different types of brain cells, as a starting point for the project. Chen says that the atlas is great for pinpointing the location and category of a neuron, but it doesn't really tell researchers much about the neuron's functions.

His findings bring that detail and colour. “It's another level of understanding for how everything fits together,” says Chen. “The biggest thing is that we've married the catalogue with the functional definition, that's really going to open up a lot of ways for us to understand the brain.”

Here, Chen explains his findings and their potential for improving our knowledge and care of the brain.

Q. What do your findings reveal?

A. When you're perceiving the world around you, your brain does a combination of processing of the stimuli that makes up the scene, and it also tries to fill information based on what you've learned in the past to help you interpret what you're sensing. Our findings essentially uncover that there is a dedicated circuit composed of specific cells in the catalogue that we call *hub cells*. These cells help to alert the brain that you've come across a salient feature that needs to be investigated further.

Q. Did anything about those *hub cells* surprise you?

A. The hub cells, which we identified to be important for feature detection, also respond in interesting ways when your environment changes. There are a certain set of genes that are known to be important for learning and adaptability and that can go up or down depending on changing environments. We found that those genes are always on in hub cells, which goes against some current principles. When environments change, these cells respond by trying to compensate for these changes.

Q. What's the significance of your findings?

A. Our findings have relevance for a range of neurological disorders, such as stroke, and neuropsychiatric diseases, such as autism spectrum disorder, where an individual's sense of perception can be altered. Rather than viewing the brain as a homogenous piece of tissue, understanding which specific cell types are the most relevant will allow us to develop treatments that can be highly targeted. This marks exciting progress towards directly treating the underlying cause of specific symptoms, while also potentially avoiding unwanted side effects from other therapeutics and interventions. One big complication of therapies these days with brain disorders is they're not only affecting the circuit of interest, but they're affecting other circuits that you don't want to necessarily mess with. The fact that we have a genetic handle on these specific circuits means that one could potentially design target therapies that will affect only those circuits.

Takhta-i yakh, Parcha-i yakhi, Shaffaf, Sard, Khunuk kardan

PART:1

The Persian terms used for coldness and cooling convey the different associations of these thermal states. The word *sard*, which is the basic Persian word for ‘cold,’ refers to a temperature or a state of being, such as a cold climate, but similarly to English, *sard* also carries emotional associations of a lack or loss of heat, passion, or even life. To become cold (sard shudan) also means to die, to become extinguished. A cold heart (dil sard) is one that is discouraged, whose spirits have been dampened. The word *khunuk* (cool) is a more moderate form of coldness, and can be used to express a welcome relief in temperature. For instance, *hawa-i khunuk* is fresh or temperate air. Although in contemporary uses, *khunuk* can mean boring or uninteresting, in the late nineteenth century, it was recorded that khunuk carried associations of cooling, comfort, but also happiness and good fortune. The verb *khunuk kardan* suggested both ‘to render happy’ and ‘to cool.’ Both sard and khunuk appear in period documents, often as near synonyms; for instance, within one paragraph in the Mughal *Ain-i Akbari*, the adjective *sard* is used to describe cold water, but when describing the cooling mats made of *khas*, the adjective khunuk conveys something ‘cooling’ and refreshing.

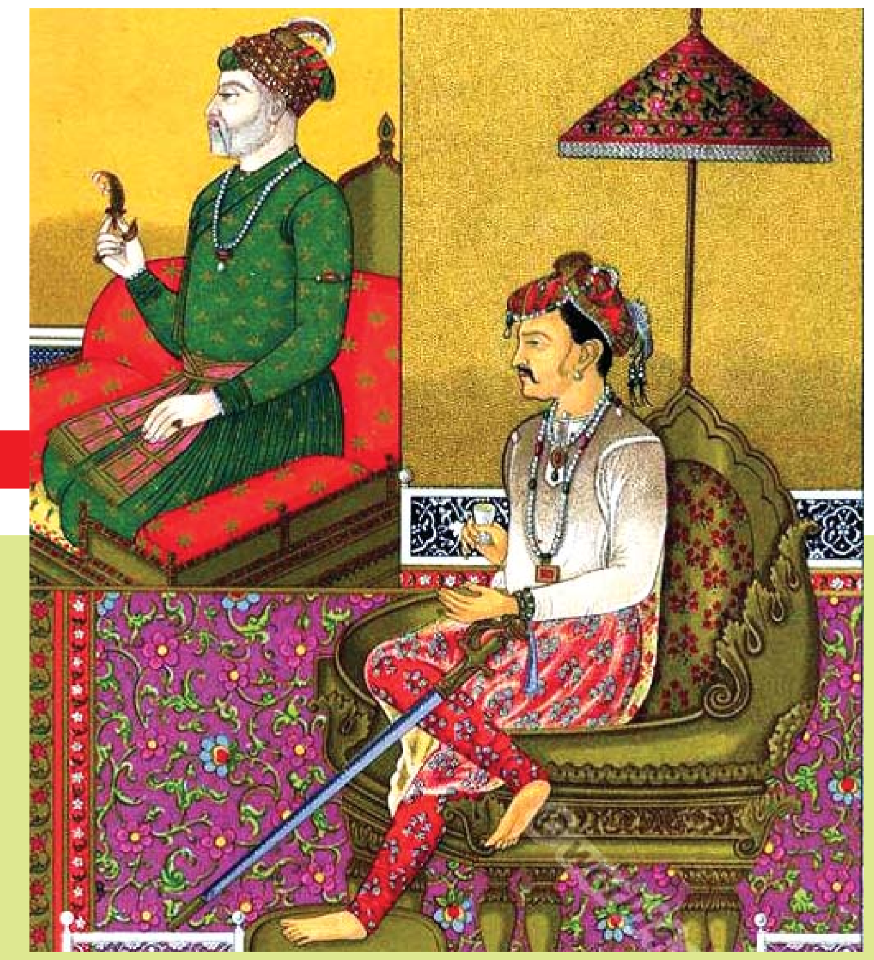

India moghul costumes.

● **Sylvia Houghteling**

In his dictionary of Persian words, written in Delhi around 1745, the writer and lexicographer Anand Ram Mukhlis pauses on the entry for takhta-i yakh, a word that means a ‘sheet of ice’ (with *takhta* often referring to a flat plane, board, or surface and *yakh* meaning ice). Mukhlis notes that this ice is also called *parcha-i yakhi*, which translates literally to ‘cloth of ice,’ although parcha can also mean a ‘piece’ or ‘length.’ He continues describing this ice as wide (ariz), long (tawil), and then uses a word, *shaffaf*, that can mean ‘transparent,’ in the context of a garment, and ‘clear,’ or ‘lustrous.’ This ice, he writes, is ‘like the front of a mirror.’ In this entry for *takhta-i yakh*, Mukhlis evokes the texture and radiance of the material, likening this thin, wide sheet of ice to a diaphanous, gleaming cloth, and to the smoothness of a mirror. Mukhlis's dictionary captures not just the meanings of words circulating in the Persian-speaking milieu of South Asia, but whole cultural worlds surrounding these terms.

The description of the ice is followed by a poetic couplet from Mir Yahya Kashi, a seventeenth-century poet at the Mughal court, that describes how a frown on the lover's face is so powerful that it melts a mirror as though it were a thin sheet of ice (takhta-i yakh). Then, he adds an associative anecdote (naql). Mukhlis recalls that when the Mughal Emperor Bahadur Shah (r. 1707-12) was in Lahore and went hunting in the early morning, he would find frozen water, and ‘his eyes sometimes would catch the cracks in sheets of ice. On this, he used to wait and learn a moral.’ The diaphanous layer of frozen water at dawn had cracks that could teach even an emperor a lesson. On a broader level, the existence of this ice with the thinness of cloth and its shining mirror-like surface suggests that when encountering coldness and ice in eighteenth-century South Asia, Mukhlis and his contemporaries found in frozen water and frigid air an array of sensory metaphors and poetic associations, that went beyond the coldness of the surface of ice.

More broadly, I propose in this essay that relief from the summer heat in eighteenth-century South Asia was derived from materials and technologies that cooled not only through changes in temperature, but also through their imagery, their scent, their color, and their feeling on the skin. Written and visual evidence suggests that finding coolness in the hot months was a multisensory experience. This project looks beyond ice, which, like modern mechanical refrigeration and air conditioning, is typically a sensorily neutral, odourless, and colorless source of cold, towards diverse materials that shifted the thermal environment, including woven mats made of *khas* grass (vetiver) that were (and still are) doused with water to cool the atmosphere and release a refreshing scent, and silver-threaded bedsheets that brought respite from the heat during sleep.

For much of the year in the northern regions of the territory that the Mughal rulers knew as ‘Hindustan,’ the experience of ice and cold was a luxury that only a few could access. The elite of the Mughal Empire (1526-1858), many of whom had connections to cooler climates in Iran and Central Asia, considered ice from the mountains, and grapes and melons from more temperate zones, as vital necessities for comfort and courtly enjoyment. Persian-language poetry circulating at the Mughal court lauded the refreshing temperature, pure water, crystalline air, and abundant fruits of summer retreats in Kashmir, in the foothills of the Himalayan mountains. During the long, dry, hot season, the imperial and regional architecture of northern Hindustan offered both passive and active cooling, including deep stepwells (baoli) and thick sandstone walls that absorbed daytime heat, keeping spaces cool inside. The tops of buildings were dotted with small domed chhatri roofs to provide shade; pierced jali screens allowed air through but filtered the sun; bountiful fountains and waterways flowed in shaded gardens; and pipes carried water beneath palaces to cool the marble floors. For those, who could not requisition ice from afar, did not reside in marble palaces, or could not make the journey to Kashmir in the summer, grass mats and lightweight fabrics, alongside music, fruits, and paintings, which conveyed refreshing abundance in the midst of the heat through texture, sight, taste, sound, and scent. While the cold has historically been theorized as the privation of warmth and cessation of sensory pleasure, the evidence suggests that the arrival of coolness, from lowering the temperature of the air to soothe the skin or the movement of a breeze from a fan, could also be an experience of plenitude, comfort, and enjoyment in eighteenth-century Hindustan. The Persian terms used for coldness and cooling convey the different associations of these thermal states. The word *sard*, which is the basic Persian word for ‘cold,’ refers to a temperature or a state of being, such as a cold climate, but similarly to English, sard also carries emotional associations of a lack or loss of heat, passion, or even life. To become cold (sard shudan) also means to die, to become extinguished. A cold heart (dil sard) is one that is discouraged, whose spirits have been dampened. The word *khunuk* (cool) is a more moderate form of coldness, and can be used to express a welcome relief in temperature. For instance, *hawa-i khunuk* is fresh or temperate air. Although in contemporary uses, khunuk can mean boring or uninteresting, in the late nineteenth century, it was recorded that khunuk carried associations of cooling, comfort, but also happiness and good fortune. The verb *khunuk kardan* suggested both ‘to render happy’ and ‘to cool.’ Both sard and khunuk appear in period documents, often as near synonyms; for instance, within one paragraph in the Mughal *Ain-i Akbari*, the adjective *sard* is used to describe cold water, but when describing the cooling mats made of *khas*, the adjective *khunuk* conveys something ‘cooling’ and refreshing. Though not systematically, I have used the terms ‘cold’ and ‘coldness’ (similar to sard) more frequently to refer to states of temperature, and have employed the term ‘cooling’ (similar to khunuk) to capture the feelings of bodily comfort brought on by a change in weather or a refreshing scent.

Few objects remain, but the methods of cooling I discuss in this article were documented in texts and paintings primarily from sites in Rajasthan and the regions surrounding Delhi and Agra that experienced an arid hot season, rather than the humidity of tropical eastern Bengal or southern India. The focus on a variety of materials and sensory experiences is important for studying the question of cold or coolness. Heat and cold, the spectrum of the ‘thermal,’ operate beyond the accepted five senses. As Boon Lay Ong proposes, the thermal has a sensory aesthetics of its own. While coldness and heat are often associated solely with touch, the thermal encompasses phenomena beyond the tactile: the thermal sense communicates subtler, intangible information about fluctuations in air temperature, the presence of a refreshing breeze, or a heat transfer to or from the body. Lisa Heschong has argued in the context of architecture that pleasing experiences of thermal variation, what she terms ‘thermal delight,’ can be brought into architectural design with the same subtlety as shifts in dappled light.

However, the thermal also overlaps with and is enhanced by the other senses: as was theorized in parts of South Asia, and in the shared humoral medical theories that grew out of ancient Greek (Yunani) medicine, warmth or coldness emerge from distinctive physiological temperaments, and from flavors, fragrances, and cuisines. Evocations of coldness can be found in colour palettes, perfumes, and textures, although determining these meanings must be approached with an attentiveness to context, given that perceptions are not universally shared. Moreover, sensory experiences of the past and in different places are subjective and ephemeral and are impossible to reconstitute in full; what is left behind, as James McHugh writes in the context of his history of medieval scents, is often a poetic description or prescription for an ‘ideal material world.’ McHugh's caution about an idealized sensory experience also applies in this context, although the existence of paintings, actual objects, and more observational lexicons from the eighteenth century supplement the poetic or prescriptive accounts of cooling to give a broader sense of lived experience.

The scholarship on mitigating the heat in South Asia has historically focused on the complaints of Northern European travelers, soldiers, and later colonial officials who were unprepared for the dry hot season in northern Hindustan, or the humidity of tropical areas of South Asia, and sought technologies for cooling, first by the production and importation of ice and then by electrical air conditioning. However, as British accounts conceded, and as Mughal documents attest, the rulers and elite of Hindustan had put in place effective methods of cooling long before European intervention. Yet, by the early nineteenth century, the English-language press became dominated by British excitement over imported ice from the United States, that characterized local South Asian strategies of cooling as secondary and ineffectual.

While emphasizing the sensory experiences of eighteenth-century individuals in Hindustan could seem to reinforce British and broader European stereotypes of the sensuality and bodily decadence of the ‘East,’ it is important to understand that these biases were closely tied to related Orientalist ideas about the determinism of the climate and heat of South Asia. Climatic determinism is the long-debunked idea that a region's climate (including temperature and humidity) determined the physical, medical, and cultural characteristics of its inhabitants. According to these deterministic theories, which became increasingly racialised in the nineteenth century, the qualities of ‘feebleness’ and ‘indolence,’ that British writers ascribed to residents of hot and humid regions of tropical South Asia, were derived from the climate. These ideas implicitly rejected extant local technologies for cooling the environment, given that part of the theory of climatic determinism was the idea that residents of hot climates were well adapted to the temperature, or the strong light of the sun. By this logic, they would not need to counteract the heat. A study of the non-European cooling strategies, that were used in South Asia, therefore not only recovers overlooked materials and multisensory phenomena from the past, but it also reasserts the scientific sophistication and aesthetic value of the manifold Hindustani methods of mitigating the heat, that were dismissed in the late nineteenth century by British colonial officers and visitors to South Asia.

To be continued...

rajeshsharma1049@gmail.com

#BEYOND ICE

Painting attributed to Abd al-Vahhab.

Mulmul to keep cool.

Well laid out gardens to keep cool.

Jharokhas to keep cool.

#LIFESTYLE

Soaps' Soap? No!!

Handmade soapers are working to find skin-loving ingredients to create more beneficial soaps for our skin!

So, what's up with all of this natural soap anyway? Soap's just soap…., right? Wrong! Soap has been around since about 2800 BC in Ancient Babylon; the ruins of Pompeii revealed an entire soap factory. Frontier women made all of their own soaps from rendered animal fats (gotta use every piece of the animal to survive in frontier life!). Affordably manufactured soap was widely available by the 1800s.

Today, handmade soap has been increasing in popularity as people start to look for ways to return back to basics in our fast-paced technology-focused world, are becoming more educated about the products they bring into their homes, and start to look for natural ‘cures’ for common health issues.

But, what's the big deal about handmade soap vs our modern-day commercial soap? Is natural soap better than commercial soap? Let's take a look at each one and then decide.

What's so bad about Commercial Soaps anyway?

Many commercial soaps aren't soaps, they are synthetic detergents. Detergents originated in 1916 Germany, and the commercial ‘soap’ we know today came into existence during WWII. Detergents are synthetic (often petroleum-based) cleansers that strip your skin of the natural oils that your body needs for healthy skin and can lead to skin disorders and rashes.

Commercial Soaps Contain More Than Just Soap

Even if you do find a bar of real soap at the store, it might not be all that great for you. Many commercial soaps contain chemical-based colourants, dyes, fragrances, lathering agents, preservatives, and other ‘things’ we can't pronounce. These additives can wreak havoc on our sensitive skin and hair, and pollute our drinking water. Some commercial ‘soaps,’ toothpaste, and body washes even include triclosan, which can promote cancer (pretty scary stuff, and you can read more about it if you want to get squeamish about some of the products we are sold).

Commercial Soap Lacks Glycerine

With all of the work commercial soap manufacturers put into adding ‘things’ to their product, you wouldn't think they would spend time extracting from it, but they do. Glycerine is a naturally occurring by-product of the saponification process (that's the chemical reaction that we call soap making). Glycerine is a humectant, meaning it draws moisture from the air to your skin, leaving your skin soft and moisturized.

Commercial soap manufacturers typically remove the glycerine from their soap, and sell it separately, or use it in a second product-moisturizer. Yup, they take one good bar of soap, extract the moisturizer, and then sell it to us as a second product (both of which may contain harmful chemicals).

What is Organic Soap?

Organic soaps are natural products that are good for your skin. Soap is a pretty basic chemical reaction: it's a salt of a fatty acid. In order to make soap, fats and lye are combined in a process called saponification. You take some lye, some fat (animal or vegetable oils), heat it up, and BAM soap! OK, we simplified it, but you get the idea. Soap is a natural process that comes from combining natural ingredients.

Organic soap is made of vegetable oils (sometimes animal fats too) and butters that are rich in antioxidants, vitamins, and nutrients that are essential to healthy skin. And, real handmade soap contains glycerine. You won't find any soaper out there extracting all the goodies from their soap to upsell you the 2nd product. On the contrary, handmade soapers are working hard to find wonderful skin-loving ingredients to create more and more beneficial soaps for our lovely skin.

Organic soaps are more sustainable: Sustainability is a responsibility that lies with both the producer and the consumer. As brands should start shifting towards more sustainable production practices, consumers should also consume sustainably. The very foundation of organic products is that their source material is produced without the addition of chemical pesticides and fertilisers, this means that in supporting these efforts, we are contributing to healthier soil, water and air. Organic soaps are safer to use: ‘Normal soaps’ use sulphate based detergents to create the effect of ‘building up a lather.’ But this is nothing more than a marketing gimmick, because in reality, it is not a thick lather that cleanses your skin, but the natural oils that can penetrate deeply and purge your pores of chemical toxins. Think about it, when you put on makeup, why do people suggest that you remove it with oils instead of washing it off your face with hand soap? Organic soaps are often composed of natural oils, like coconut, jojoba and hemp seed, all of which have the potential to penetrate your pores and cleanse your skin from the inside out.

Organic soaps are beneficial to your skin: Because of their composition, which tends to be natural oils packed together using the methodology of traditional soap making, which is the hydrolysis of a triglyceride fat (natural organic oils) using a base (lye), organic soaps are packed with natural goodness. A hemp seed oil based organic soap, for example, will not only have the natural moisturizing and deep cleaning properties of hemp seed oil, but it will also have its added benefits such as helping to balance hormones that can help with acne and eczema, stress relieving properties as well as antibacterial properties and the ability to regulate blood sugar!

THE WALL

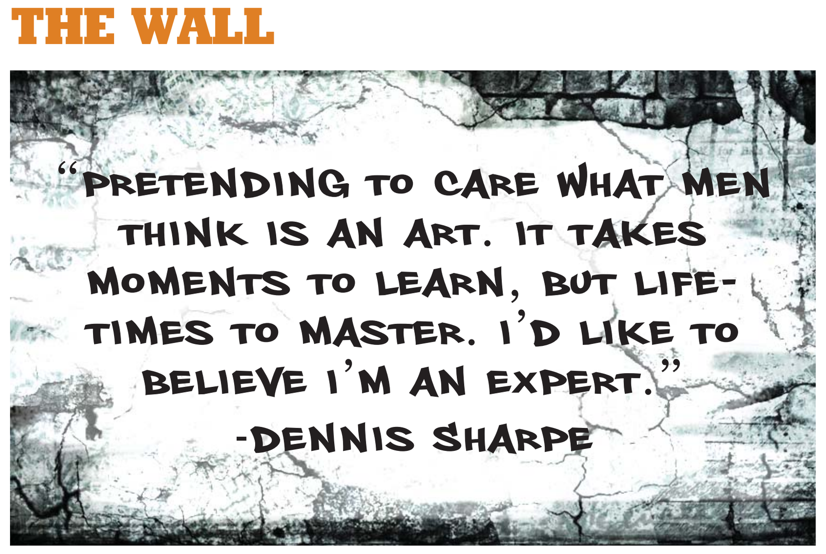

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

आनासागर झील के संरक्षण के लिए सरकार प्रतिबद्ध है : जल संसाधन मंत्री

पेयजल को लेकर 2053 की कार्य योजना बना रही सरकार : सुरेश सिंह रावत

अजमेर, (कासं)। राज्य सरकार के जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने सोमवार को ''वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान'' के तहत अजमेर में चल रहे आनासागर झील की सफाई एवं खुदाई कार्य में स्वयं श्रमदान करते हुए आमजन को जल संरक्षण के प्रति प्रेरित किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में रावत ने कहा कि गत तीन दिनों से चल रहे इस महाअभियान में अजमेर के समस्त नागरिकों, भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों, आमजन एवं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने सक्रिय सहभागिता निभाई है। उन्होंने इस अभूतपूर्व जनसहयोग के लिए सभी का हृदय से आभार व्यक्त किया।

मंत्री रावत ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान 5 जून से 20 जून तक पूरे प्रदेश में वृहद स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री स्वयं विभिन्न जलाशयों पर पहुँचकर जल संरक्षण की महत्ता को रेखांकित कर रहे हैं। अजमेर में भी जनप्रतिनिधियों एवं सामाजिक संगठनों की सहभागिता से यह अभियान प्रभावी रूप से संपन्न हो रहा है। रावत ने जल स्त्रोतों के संरक्षण को सामूहिक जिम्मेदारी बताते हुए कहा कि बावड़ियों, तालाबों, झीलों एवं बांधों को अतिक्रमण मुक्त रखते हुए उनके संरक्षण हेतु जनजागरण आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आनासागर झील वर्षों से प्रदूषण एवं अतिक्रमण की मार झेल रही है, लेकिन वर्तमान सरकार इसके संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि आनासागर झील के सफाई व खुदाई कार्य हेतु टेंडर प्रक्रिया चल रही है और आगामी वर्षा ऋतु से पूर्व इसमें वृहद कार्य प्रारम्भ किया जाएगा।

जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने ''वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान'' के तहत अजमेर की आनासागर झील में श्रमदान किया।

जल संसाधन मंत्री ने कहा कि झील में सीवरेज जल का प्रवाह पूर्णतया अनुचित है, इसे रोकने हेतु आवश्यक कार्यवाही के लिए संबंधित विभागों एवं स्थानीय निकाय के साथ समन्वय स्थापित कर प्रभावी कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि मानसून के दौरान व्यर्थ बहने वाले पानी को संरक्षित करने हेतु पुष्कर के समीप एनीकट निर्माण कर जल संरक्षण एवं फॉरेस्ट डेवलपमेंट के कार्य किए जाएंगे।

2053 की कार्य योजना बना रही सरकार :-रावत ने बताया कि अजमेर जिले में श्रीनगर के समीप मोर सागर नामक कृत्रिम बांध का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया जा रहा है। इसका वर्क ऑर्डर शीघ्र जारी कर दिया जाएगा। इस परियोजना के पूर्ण होने के पश्चात अजमेर, ब्यावर सहित सम्पूर्ण जिले की भविष्य की जलापूर्ति आवश्यकताओं को सन् 2053 तक ध्यान में रखते हुए स्थायी समाधान मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के लिए बीसलपुर से लिफ्ट सिस्टम के माध्यम से जल भंडारण किया जाएगा।

मंत्री रावत ने बताया कि जिले के अन्य पारंपरिक जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार तथा नए एनीकटों के निर्माण का कार्य भी तेजी से प्रगति पर है। साथ ही अजमेर से सटे प्रसिद्ध पर्यटक स्थल बीर का तालाब के सौंदर्यकरण एवं पर्यटक सुविधाओं के विकास हेतु तीन करोड़ रुपये की लागत से कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। समापन पर मंत्री रावत ने समस्त नागरिकों से अपील की कि जल संरक्षण को एक सतत जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाएं ताकि भावी पीढ़ियों के लिए जल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

महिलाओं ने मनरेगा में काम देने में भेदभाव का आरोप लगाया

- सीईओ को ज्ञापन सौंपा, महिलाओं ने गांव में पानी की समस्या की भी शिकायत की
- महिलाओं ने सीईओ से मनरेगा में काम दिलाने और गांव में पानी की व्यवस्था किये जाने की मांग की

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर के ग्राम पंचायत तुहिया के गांव भाडोर की महिलायें जिला परिषद कार्यालय पहुंची, जहां अपनी समस्याओं को लेकर सीईओ को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने ज्ञापन में बताया है कि उनके गांव में अन्य गांव की तरह मनरेगा का काम पूरे साल नहीं चलता, एक साल में एक बार चलता है फिर भी उन्हें काम नहीं दिया जाता। इसके अलावा महिलाओं ने गांव में पानी की समस्या की शिकायत की।

महिलाओं का आरोप है कि मनरेगा में काम देने में उनके साथ भेदभाव किया जाता है, जिससे उनके परिवार का पालन-पोषण करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, गांव में पीने के पानी का संकट है,गांव में एक ही पानी का टैंकर आता है जिसके लिए भी लोगों में खींचतान और झगड़े होते हैं। महिलाओं ने जिला कार्यकारी अधिकारी से मांग की है कि उन्हें मनरेगा में काम दिलाया जाए और गांव में पानी की व्यवस्था की जाए।

गांव की महिला अनीता ने बताया कि गांव भाडोर में अन्य गांव की तरह यहां मनरेगा का काम नहीं होता, जिससे आर्थिक स्थिति से जूझ रहे परिवारों के सामने रोजगार नहीं मिलने से जीवन-यापन में संकट पैदा होता है। उनके गांव में एक साल में एक बार ही मनरेगा का काम होता है। उसमें भी उनके साथ भेदभाव किया जाता है। गांव की अन्य महिला श्यामवती ने बताया कि उनके गांव में दूसरी सबसे बड़ी समस्या पानी है। गांव में खारा पानी है पीने के लिए एक टैंकर आता है। इसके पानी के लिए आपस में मारामारी हो जाती है। कई बार जिला प्रशासन के अधिकारियों को अवगत कराया लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ है। दोनों मांगों को लेकर के जिला परिषद के कार्यकारी अधिकारी को ज्ञापन दिया है और मांग की है कि उनकी समस्या का समाधान किया जाए।

पेड़ से गिरकर युवक की मौत

उदयपुर, (निसं)। नारियल तोड़ते समय पेड़ से गिरने पर युवक की मौत हो गई। धरियावद प्रतापगढ़ हाल भीलों का बेदला निवासी नारायण (23) पुत्र शंकर मीणा सोमवार सवेरे मकान के पास स्थित नारियल के पेड़ पर चढ़कर नारियल तोड़ रहा था। इस दौरान संतुलन बिगड़ने पर निचे गिर पड़ा, जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर एएसआई सुनिल विश्नोई ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

ठगी का आरोपी गिरफ्तार

बौंली-बामनवास, (निसं)। सूरवाल थाना प्रभारी जयप्रकाश के नेतृत्व में गठित टीम ने गस्त सायबर ठगी के आरोपी संजय उर्फ विक्की मीणा को गिरफ्तार कर उसके पास से एक एंड्राइड मोबाइल मय सिम कार्ड जब्त किया गया है। सूरवाल थाना प्रभारी जयप्रकाश के नेतृत्व में गठित टीम में शामिल कांस्टेबल भवानी शंकर व संतोष कुमार की टीम ने सायबर क्राइम से प्राप्त लोकेशन के आधार पर गांव श्यामोता पहुंचकर साक्ष्य मिलने पर मोबाइल चेक से प्राप्त लोकेशन के आधार पर एप्लीकेशन, इंस्टाग्राम की आईडी से ऑनलाइन क्रिकेट, प्रेडिक्शन व ट्रेडिंग करने की पोस्ट टेलीग्राम व व्हाट्सएप आदि में विभिन्न मोबाइल नंबरों पर रुपए डबल करने का लुभावना ऑफर अनजान ग्राहक को ट्रैकिंग कर फर्जी बिल, फर्जी इन्वेस्ट के प्लान को दिखाकर राशि के नाम पर अनजान ग्राहकों से धोखाधड़ी कर रुपए हडपने का अनुचित लाभ प्राप्त किए जाने पर आरोपी संजय उर्फ विक्की मीणा को गिरफ्तार किया।

ग्रामीणों ने कलेक्टर से अवैध शराब की ब्रांचों को बंद कराने की मांग की

ग्रामवासियों ने जिला कलेक्टर डॉ. महेंद्र सिंह खड़गावत को ज्ञापन दिया

- अवैध शराब की दुकानों के आस-पास बैठकर शराब पीने के कारण क्षेत्र की महिलाओं का इन क्षेत्रों से गुजरना दूभर हो गया है

मसूदा, (निसं)। शराब की अवैध ब्रांच को तुरंत प्रभाव से बंद करने को लेकर ग्रामवासियों ने जिला कलेक्टर डॉ. महेंद्र सिंह खड़गावत को ज्ञापन दिया। ज्ञापन में उन्होंने बताया कि पीपलाज के राजस्व ग्राम रूपारेल, नाडी रूपारेल, फतेहगढ़, अमृतपुरा आदि क्षेत्रों में पिछले दह माह से लगभग 7-8 चोरी, लड़ाई-झगड़े, मारपीट के मुकदमे थाना सदर ब्यावर में दर्ज हुए हैं, जिसका मुख्य कारण इन क्षेत्रों में पूरी रात को खुली रहने वाली अवैध शराब की ब्रांचें है।

ज्ञापन में उन्होंने बताया कि इन ब्रांचों में आये दिन असामाजिक तत्वों का जमावड़ा रहता है तथा इन लोगों का क्षेत्र में इतना आतंक है कि इनके खिलाफ कोई भी व्यक्ति बोल ही नहीं पाता है। इन लोगों द्वारा दिन में ही इन अवैध शराब की दुकानों के आस-पास बैठकर शराब पीने के कारण क्षेत्र की महिलाओं का इन क्षेत्रों से गुजरना दूभर हो गया है। इन ब्रांचों के कारण क्षेत्र में सदैव तनाव का महौल बना रहता है तथा आये दिन झगड़ होते रहते हैं।

ग्रामवासियों ने कलेक्टर से कहा कि क्षेत्र की अवैध ब्रांचों को तुरन्त प्रभाव से बन्द करवाने हेतु कानूनी कार्यवाही कराने ताकि क्षेत्र के नागरिकों को राहत मिल सके, जिसमें (1) बन्नाजी चीता की ब्रांच रानीसागर रिको, (पीपलाज), (2) श्रवण की दुकान (वेलकम होटल) रानीसागर रिको, खरवा, (3) साबीर की दुकान, मुख्य चौराहा, रूपारेल (4) कुलदीप की दुकान, रिको (5) रामपाल पुत्र दलेल मस्जिद के पास, अमृतपुरा पीपलाज (6) मनोहर फौजी अमृतपुरा स्कूल के पास, अमृतपुरा पीपलाज। ग्रामवासियों ने कहा कि उपरोक्त सभी 6 ब्रांचों को तुरन्त प्रभाव से बन्द करवाया जावे अन्यथा क्षेत्र की शान्ति व्यवस्था भंग होने की संभावना बनी रहेगी। ज्ञापन देने के दौरान नेनु, बिरम, शंकर, तेजा, भंवर, रोशन, रमजान, श्रवणसिंह, चेतन सहित दर्जनों ग्रामीण मौजूद रहे।

महिला की हत्या कर शव को जंगल में फंदे पर लटकाया, आरोपी गिरफ्तार

- आरोपी युवक का विधवा महिला से सम्पर्क था, विवाद होने पर महिला की हत्या कर दी
- महिला के पति का पांच साल पहले निधन हो चुका है

उदयपुर, (का.सं.)। सायरा थान पुलिस ने सोमवार को एक महिला की हत्या कर शव को जंगल में फंदे पर लटकाने के मामले का मात्र तीन घंटे में खुलासा करते हुए एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी युवक का इस विधवा महिला से सम्पर्क था और विवाद होने पर उसने महिला की हत्या कर दी थी।

जानकारी के अनुसार उदयपुर के सायरा थाना क्षेत्र के चित्रावास गांव स्थित सरिया फला में सोमवार सुबह एक विधवा महिला का शव घर से करीब 100 मीटर दूर एक चट्टान पर मिला। महिला के गले में लगे फंदे में एक लकड़ी भी बंधी हुई थी। सायरा थानाधिकरी किशोर सिंह शेखावत जाब्ते के साथ मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। मृतक महिला की पहचान सविता गरासिया (35) पत्नी स्व. जोगाराम गरासिया, निवासी सरिया, चित्रावास के रूप में हुई। मृतका के ससुर मसरू पुत्र मंशाराम गरासिया निवासी सरिया, चित्रावास ने बताया कि महिला रात्रि में घर पर ही थी, सुबह उसकी बेटी ने बताया कि माँ घर पर नहीं है, जिस पर उसे ढूंढने गए तो मंगरी पर उसका शव पड़ा मिला। परिजनों ने बताया कि महिला के पति जोगाराम की मौत हो चुकी है और वह बच्चों सहित ससुर के साथ घर पर रहती है।

चित्रावास गांव के सरपंच किरण गरासिया ने बताया कि मृतक महिला के पति जोगाराम का पांच साल पहले निधन हो चुका है। वे बीमार थे। महिला मनरेगा में मजदूरी करते हुए अपने तीन बच्चों को पाल रही थी। इनमें सबसे छोटा 6 साल का लड़का और 10 व 15 साल की दो लड़कियां हैं। मां की मौत के बाद अब बच्चे अकेले हो गए हैं। तीनों बच्चे अपनी मां के पास रोज की तरह रात को सोए थे। जब वे सुबह उठे तो उनके पास मां नहीं थी। बच्चों ने आस-पड़ोस में सूचना दी। जिसके बाद इधर-उधर मां की तलाश की गई तो घर से करीब 100 मीटर दूरी पर एक चट्टान पर महिला का शव पड़ा हुआ मिला। पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर अनुसंधान करते करते हुए पता चला कि एक युवक परदाराम का महिला घर आना-जाना था। इस पर उस युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई उसने महिला से विवाद होने पर हत्या करना स्वीकार कर लिया। पुलिस ने युवक को गिरफ्तार कर अग्रिम अनुसन्धान शुरू कर दिया है।

डॉ. सक्का ने दो मिमी लंबा स्वर्ण निर्मित बोइंग 787 मॉडल बनाया

- अहमदाबाद प्लेन क्रैश के दिवंगतों को श्रद्धांजलि दी

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर के स्वर्ण शिल्पी डॉ. इकबाल सक्का ने अपनी कला से मानवता और संवेदनशीलता का उदाहरण पेश करते हुए अहमदाबाद प्लेन क्रैश में जान गंवाने वाले यात्रियों और स्टाफ को श्रद्धांजलि देते हुए सोने से सबसे छोटा बोइंग 787 विमान बनाया है।

उदयपुर निवासी सौ से अधिक विश्व रिकॉर्ड होल्डर सक्का ने बताया कि सोने से बनाए इस विमान की खास बात है कि इसकी लंबाई मात्र दो मिलीमीटर है। इसे केवल लैंस की मदद से ही देखा जा सकता है। इसका वजन 100 मिलीग्राम है। इसे तैयार करने में तीन दिन का समय लगा। सक्का ने बताया कि यह मॉडल 24 कैरेट शुद्ध सोने से बनाया है। इस स्वर्ण विमान को नीलाम करने के लिए भारत सरकार के नागरिक उड्डयन मंत्रालय को एक पत्र लिखा है। पत्र में उन्होंने अनुरोध किया है कि इस विमान की नीलामी से प्राप्त राशि से विमान हादसे में जान गंवाने वाले हर व्यक्ति के नाम से एक-एक पेड़ लगाया जाए, ताकि यह न सिर्फ एक श्रद्धांजलि हो, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक सार्थक पहल बन सके।

उदयपुर के सूक्ष्म स्वर्ण शिल्पी इकबाल सक्का ने दो मिमी लंबा स्वर्ण निर्मित बोइंग 787 मॉडल बनाया।

दो लाख के जेवर सहित दो आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। पुलिस ने चोरी के दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। वहीं पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से दो लाख के जेवर बरामद किये हैं।

पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में वृताधिकारी टोंक राजेश विद्यार्थी व थाना सदर टोंक थानाधिकारी जयमल सिंह के नेतृत्व गठित टीम ने थाने में दर्ज चोरी व अन्य वारदात में फरार आरोपी रामखिलाडी मीणा व उसके साथी नाहर सिंह को गिरफ्तार कर प्रकरण में चोरी किये गये सोने के जेवरात बरामद किये हैं। सदर थाना प्रभारी जयमल ने बताया कि 28 मई की रात बृजविहार कॉलोनी, सवाई माधोपुर रोड स्थित आशा मीणा के मकान में चोरों ने कमरे और अलमारियों के ताले तोड़कर जेवरात और 50 हजार रुपये चुरा लिए थे। मामले में पीड़िता ने थाना सदर टोंक में मामला दर्ज कराया था। पुलिस ने इसकी जांच करते हुए घर में लगे सीसीटीवी कैमरे व तकनीकी सहायता से आरोपियों को नैनवा, बूंदी से पकड़ लिया। पुलिस ने रामखिलाड़ी पुत्र शंकर लाल मीणा उम्र निवासी खोहल्या थाना बनेठा हाल महावीरपुरा थाना नैनवा जिला बूंदी व नाहर सिंह पुत्र कजोड़ हरिजन निवासी बिसनपुरा थाना सैंथल जिला दौसा को गिरफ्तार किया है। दोनों सुनसान मकानों की रैकी कर रात में वारदात करते थे। पुलिस टीम ने आरोपियों से दो लाख रूपये के जेवरात बरामद किये हैं।

उदयपुर। राजीव गांधी पार्क में आए अजगर को रेस्क्यू कर प्राकृतिक आवास में छोड़ा गया। वाइल्ड एंड स्ट्रीट ऐनिमल रेस्क्यू सोसाइटी के फाउंडर डॉ. पदम सिंह राठौड़ ने बताया कि सूचना मिली कि राजीव गांधी पार्क में एक विशालकाय सांप आ गया है तो उन्होंने अपनी टीम के हर्षवर्धन सिंह, प्रशांत और अर्जुन के साथ मौके पर पहुंचकर देखा तो एक अजगर कोने में बैठा हुआ था जो लगभग दस फीट का था। अजगर का रेस्क्यू कर उसे वापस प्राकृतिक आवास में छोड़ दिया गया।

सांसी समाज के लोगों का कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन

निर्दोष लोगों को अवैध खनन के दो मामलों में फंसाने का आरोप लगाया

सांसी समाज के लोगों ने जिला कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन किया।

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले में राजनीतिक दबाव के चलते सांसी समाज को टारगेट करने का आरोप लगाते हुए सैकड़ों लोगों ने निर्दोष लोगों को अवैध खनन के दो मामलों में फंसाने का आरोप लगाते हुए जिला कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन किया है। सांसी समाज सेवा संस्थान भीलवाड़ा के बैनर तले सैकड़ों की संख्या में समाज के लोगों ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में बताया गया है कि बागौर पुलिस थाने में दर्ज एफआईआर में सांसी समाज के सेवादार पेंटर सांसी पुत्र सोहन लाल और कुछ अन्य लोगों को नामजद किया गया है, जबकि वे मौके पर मौजूद नहीं थे। सांसी समाज सेवा संस्थान के पदाधिकारियों ने आरोप लगाया है कि अवैध खनन करने वाले उदयराम जाट और मूलचंद जाट के साथ-साथ कुछ अन्य लोगों के नाम अवैध खनन की रिपोर्ट में होने के बावजूद, उन्हें राजनीतिक दबाव के चलते गिरफ्तार नहीं किया जा रहा है। इसके विपरीत, हरीश खटीक, ललित जाट, देवनारायण खटीक और शंकरलाल जाट सहित सांसी समाज के लोगों को बेवजह इस मामले में घसीटा जा रहा है। संस्थान ने मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार, पुलिस महानिरीक्षक अजमेर रेंज, जिला कलेक्टर भीलवाड़ा और पुलिस अधीक्षक भीलवाड़ा से इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

लाखों की चोरी

उदयपुर, (निसं)। जिले के वाघपुरा थाना क्षैत्र में मकान में घुसकर चोर लाखों के जेवरात व नकदी चुरा ले गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार वाघपुरा थाना क्षैत्र मादड़ी गांव निवासी लक्ष्मण गुर्जर पुत्र हगजी गुर्जर के मकान की खिड़की तोड़कर अंदर घुसे चोर 3 लाख 80 हजार रूपये नकदी करीब 16-17 लाख के सोने-चांदी के जेवरात चुरा ले गए। रात में परिवार सहित लक्ष्मण मकान में सोया था। खिडकी तोड़ कर चोर वारदात कर फरार हो गए। सूचना पर थानाधिकारी वेलाराम ने मौके पर पहुंच घटनास्थल का निरीक्षण कर मिले साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू की।

बीकानेर में 584 बैंक खातों से लेनदेन पर रोक लगाई

बीकानेर, (निसं)। यहां इन दिनों सायबर ठगों का जाल गहराता जा रहा है। ताजा कार्रवाई में सायबर पुलिस ने 584 बैंक खातों से लेनदेन पर रोक लगाई है, जिनका उपयोग देशभर में सायबर ठगी की रकम को इधर-उधर करने में किया गया। सायबर पुलिस की जांच में खुलासा हुआ है कि इन खातों के मालिकों ने मामूली कमीशन या लालच में आकर अपने बैंक खाते किसी रिश्तेदार, दोस्त या अनजान व्यक्ति को सौंप दिए थे, जिससे वे अब खुद मुसीबत में फंस गए हैं।

सायबर पुलिस के अनुसार चार आरोपियों के खातों में करीब 5.5 करोड़ रुपए का ट्रांजेक्शन हुआ जो विभिन्न राज्यों में सायबर ठगी के मामलों से जुड़ा पाया गया। पकड़े गए आरोपियों में राहुल सिंह, मनमोहन यादव, नाहिद अली और एक युवती गणपति राजपुरोहित शामिल हैं, जिनके खातों का दुरुपयोग सायबर ठगों ने किया। इनमें से एक आरोपी सिम कार्ड बेचने का काम करता था जो लोगों से दो बार अंगूठा लगवाकर उनके नाम पर कई सिमकार्ड निकलवाता था। बाद में इन सिम कार्ड्स का उपयोग फर्जी खातों से पैसे निकालने और ट्रांजेक्शन में किया गया। आरोपी युवती को भी एक गिरोह ने अपने जाल में फंसा कर उसके नाम पर बैंक खाता खुलवाया और सायबर ठगी की राशि को ट्रांसफर करने में उसका और अन्य बैंक खातों का इस्तेमाल किया।

सायबर सिक्योरिटी विशेषज्ञ अभिषेक राठी के अनुसार, सायबर अपराधी आजकल लोगों को फर्जी कॉल, बिजली कनेक्शन कटने की धमकी, ई-केवाईसी अपडेट कराने, पीडीएफ लिंक भेजने, एपीके फाइल डाउनलोड करवाने जैसे तरीकों से फांसते हैं। राठी ने बताया कि लोगों को कभी भी अपना बैंक खाता, ओटीपी, पासवर्ड, आधार नंबर या अंगूठा किसी को भी नहीं देना चाहिए। मामूली फायदे के चक्कर में लोग अपनी पहचान और वित्तीय सुरक्षा को खतरे में डाल रहे हैं। बीकानेर में सायबर अपराधियों की सक्रियता तेजी से बढ़ी है और इसका शिकार अधिकांश वे लोग हो रहे हैं जिन्होंने अपनी सतर्कता खो दी है। मामूली लाभ के लिए बैंक खाता या सिम दूसरों को सौंपना अब भारी पड़ रहा है। ऐसे में जरूरी है कि आमजन जागरूक बनें और सायबर नियमों का पालन करें।

43.54 लाख के गबन के आरोपी की नापासर में तलाश

- नागपुर में ट्रांसपोर्ट व्यवसायी के यहां एकाउंटेंट का काम करने वाला गबन कर फरार हो गया था

बीकानेर, (निसं)। महाराष्ट्र के नागपुर में ट्रांसपोर्ट व्यवसायी के यहां एकाउंटेंट का काम करने वाला 43.54 लाख रुपए का गबन कर फरार हो गया, जिसकी बीकानेर के नापासर में तलाश की जा रही है। आरोपी नापासर का रहने वाला है और महाराष्ट्र पुलिस उसकी तलाश में आई है, लेकिन आरोपी का पता नहीं चल पाया है।

नापासर निवासी मुरलीधर मालचंद आसोपा महाराष्ट्र के नागपुर में ट्रांसपोर्ट व्यवसायी के यहां एकाउंट का काम देखता था। व्यवसायी ने 25 जून, 22 को उसे काम पर रखा। इस दौरान मुरलीधर ने व्यवसायी की कंपनी में अकाउंट का काम किया और 3 नवंबर, 2023 को दीपावली के समय गांव जाने के लिए निकला और वापस नहीं लौटा। इस दौरान कंपनी के अन्य कार्मिकों ने अकाउंट चेक किया तो 43,54,653 रुपए का गबन सामने आया। व्यवसायी की ओर से नागपुर के वाडी पुलिस थाने में आरोपी मुरलीधर के खिलाफ मुकदमा दर्ज करवाया गया। मुरलीधर इस मामले में फरार चल रहा है। उसकी गिरफ्तारी के लिए वाडी थाने के एसआई यूआर जायेभाये नापासर पहुंचे। स्थानीय पुलिस के सहयोग से आसोपा के घर गए और उसकी तलाश की, लेकिन, आरोपी नहीं मिला। नापासर पुलिस थाने के एसएचओ लक्ष्मण सुथार ने बताया कि नागपुर पुलिस ने स्थानीय पुलिस के सहयोग से आसोपा के घर नोटिस चस्पा किया है।

संक्षिप्त

भागवत कथा का शुभारंभ

निवाई। सिंधी कॉलोनी में स्थित झूलेलाल धर्मशाला में उदयपुर के पुष्करदास महाराज के सानिध्य में संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ कलशयात्रा के साथ हुआ। श्रद्धालु हेमंतदास फुलवानी ने बताया कि श्याम बाबा मंदिर में भागवत की पोथी एवं कलशों का विधि विधान से पूजन किया गया। इसके बाद पोथी को भगवान के चरणों में रखकर कलश यात्रा का शुभारंभ किया गया। कलश यात्रा का श्रद्धालुओं ने जगह-जगह पुष्प वर्षा करके स्वागत किया। कलश यात्रा में महिलाएं भजनों पर नृत्य करती हुई चल रही थी। कलश यात्रा में कथा व्यास संत पुष्करदास महाराज, टोंक के स्वामी तुलसीदास, दादू आश्रम के स्वामी प्रकाशदास महाराज सहित यजमान सोनू फुलवानी ने परिवार के साथ भागवत की पोथी को सिर पर धारण किया। कथा में महाराज ने कहा आज के समय में चारों तरफ दुख व अशांति हो रही है। जो भगवान की शरण में आए उन्हें शांति अवश्य मिलती है। उन्होंने कहा कि सत्संग रूपी ठंडक में जो आएगा उन्हें शांति मिलेगी। सत्संग से जुडने से संताप कम होता है। भागवत ठान्थ इसलिए कहते है क्यों कि यह ठान्थ मन की गांठो को खोलता है। भजन व कथा का श्रवण करने से मन प्रसन्न रहता है। उन्होंने कहा कि तन, मन व धन का सही उपयोग करने की जरूरत है। उन्होंने कहा मेहनत से कमाए ओर शुभ कार्य में खर्च करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।

मृतकों के आश्रितों को आर्थिक मदद

टोंक। बनास नदी में विगत दिनों हुए हादसे में जयपुर जिले के 8 व्यक्तियों के डूबकर मृत्यु होने पर जिला कलेक्टर टोंक डॉ. जितेंद्र कुमार सोनी ने मृतकों के आश्रितों को सहायता दिलवाने में त्वरित कार्यवाही की है। अतिरिक्त जिला कलेक्टर विनोद कुमार मीणा ने बताया कि मृतकों के आश्रितों को आर्थिक सहायता दिलवाये जाने के लिए कुल 8 मृतकों में से 6 मुख्यमंत्री आयुष्मान दुर्घटना बीमा योजना में बीमित होने पर 4 के आश्रितों को पांच-पांच लाख रुपये की स्वीकृति जारी की जा चुकी है। एडीएम ने बताया कि अन्य बीमित 2 मृतकों के आश्रितों को भी शीघ्र ही आर्थिक सहायता स्वीकृत की जाएगी। साथ ही, जिला कलेक्टर टोंक द्वारा अबीमित 2 मृतक आश्रितों को आर्थिक सहायता के लिए स्वीकृति प्रस्ताव मुख्यमंत्री सहायता कोष को भिजवाया जा चुका है।

विमान दुर्घटना के मृतकों को श्रद्धांजलि

मनोहरपुर। कस्बे के गांधी चौक बाजार में नगर कांठोस कमेटी ने सोमवार को अहमदाबाद विमान व केदारनाथ में हेलीकॉप्टर दुर्घटना, पुणे में पुल, टोंक बनास नदी में जान गंवाने वाले लोगों को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान मोमबत्ती जलाकर मौन रहकर दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना की प्राप्त जानकारी के अनुसार इस मौके पर ब्लॉक अध्यक्ष नाथू लाल सैनी, नगर अध्यक्ष अलाउद्दीन खान, पूर्व सरपंच अर्जुन मोहनपुरिया, ब्लॉक प्रवक्ता राकेश हलकारा, महेश जडवाल, ओम प्रकाश बागडी, किशन भारती, खेमचंद असवल, बनवारी यादव,पंकज मिश्रा, शाहिद खान, अफसर खान एवं अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे। नोडल अधिकारी एवं प्राचार्य डॉ हंसराज चौहान ने यह जानकारी दी।

पंजीकरण शिविर आज

श्रीमाधोपुर। विशेष योग्यजन संयुक्त सहायता योजना अंतर्गत कृत्रिम अंग उपकरण वितरण हेतु पंजीकरण शिविर पंचायत समिति सभागार श्रीमाधोपुर में 17 जून मंगलवार को प्रात: 10 से 5 बजे तक आयोजित किया जाएगा, जिसमें पात्र विशेष योग्यजनों के कृत्रिम अंग उपकरण यथा ट्राई साइकिल, व्हील चेयर , हियरिंग मशीन , वैसाखी व इसके साथ ही पालनहार योजना , पेंशन योजना , दिव्यांग प्रमाण पत्र के आवेदन भी लिए जाएंगे। इच्छुक विशेष योग्यजन प्रमाण पत्र , आधार कार्ड व विकलांगता प्रदर्शित करते हुए पासपोर्ट साइज फोटो अवश्य साथ लाएं।

नम्बर मिलाइए
9587884433

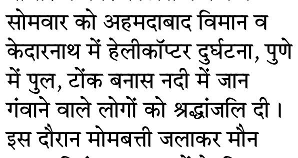

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

रात में गश्त के दावों के बावजूद बदमाश बेखौफ

- शीशा तोड़ गिरोह सक्रिय, रंजीत नगर में कार के शीषे तोडे, पुलिस अभी तक खाली हाथ

भरतपुर (निस)। भरतपुर में कारों के शीशे तोड़ने वाली गैंग सक्रिय, बीती रात रंजीत नगर में कार के दोनों शीशे तोड़े, पुलिस की 2 टीमें बदमाशों की तलाश की रही है।

भरतपुर शहर में इन दिनों एक असामाजिक तत्वों की गैंग सक्रिय है। कुछ युवक रात को ठ्रुप बनाकर पॉश कॉलोनियों में जाते हैं और, घर के बाहर खडी कारों के शीशों को पत्थरों से तोड देते हैं। पिछले कई दिनों से ऐसे मामले सामने आ रहे हैं। बीती रात भी शहर के रंजीत नगर में कुछ युवकों ने एक व्यक्ति की कार के आगे पीछे के शीशों को तोड दिया। जब परिवार के लोग सुबह सोकर उठे तो, उन्हें घटना का पता लगा। जिसके बाद उन्होंने कोतवाली पुलिस को घटना की सूचना दी। रोहित गोयल ने बताया कि वह व्यापारी हैं। उनका मकान बन रहा है।

भरतपुर में कारों के शीशे तोड़ने वाली गैंग सक्रिय होने से लोगों को नुकसान हो रहा है।

इसलिए हाल में उनका परिवार बगल वे मकान में रह रहा है। कल काम से आने के बाद उन्होंने अपनी कार घर के बाहर खड़ी कर दी थी। सुबह जब उठे तो, उनकी कार के आगे पीछे के शीशे टूटे हुए थे। आगे के शीशे पर एक ईंट भी पड़ी थी। जिसके बाद उन्होंने कोतवाली थाना पुलिस को घटना को सूचना दी। पुलिसकर्मी मौके पर आए और उन्होंने आसपास मकानों में लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले लेकिन, इस घटना को अंजाम देने वाले लोगों का पता नहीं लगा। गत दिनों मथुरा गेट थाना क्षेत्र स्थित जवाहर नगर कॉलोनी में अराजक तत्वों द्वारा मकानों के बाहर आधा दर्जन खडी कारों के शीषे तोडे गये थे।

पीडितों की ओर से संबंधित पुलिस थाने में षिकायत दी गई लेकिन इसके बावजूद भी आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हो सकी हैं इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि पुलिस इन मामलों को लेकर कितनी गंम्भीर है। बीते दिनों से हो रही इन घटनाओं को लेकर सीओ आइपीएस पंकज यादव ने कहा कि, ऐसे बदमाशों को पकड़ने के लिए दो टीमें लगाई हैं। कुछ युवकों को आइडेंटिफाई किया गया है। अभी तक नामजद कोई भी सामने नहीं आया है। शहर में 2 फेज की गश्त चल रही है। रात में घूमने वाले लोगों से लगातार पूछताछ की जा रही है।

पेयजल किल्लत से आमजन को मिलेगी राहत

कोटपूतली। भीषण गर्मी के मौसम में क्षेत्रवासियों को पेयजल किल्लत से राहत दिलाने जाने को लेकर विधायक हंसराज पटेल द्वारा हरसम्भव प्रयास किये जा रहे है। इसी क्रम में विधायक पटेल की अनुशंषा पर राज्य सरकार के पीएचईडी विभाग ने क्षेत्र में विभिन्न पेयजल योजनाओं हेतु 01 करोड 26 लाख 73 हजार रूपयों की राशि जारी करते हुये वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृति जारी की है। विधायक पटेल ने बताया कि ग्राम भूरी भडाज में एक श्री फेस ट्यूबवैल पाईप लाईन हेतु 24 लाख 30 हजार, ग्राम चिमनपुरा में एक श्री फेस ट्यूबवैल पाईप लाईन हेतु 24 लाख 23 हजार, ग्राम सांगटेडा में एक श्री फेस ट्यूबवैल पाईप लाईन हेतु 24 लाख 94 हजार, ग्राम पूतली में एक श्री फेस ट्यूबवैल पाईप लाईन हेतु 24 लाख 44 हजार व कस्बे के डाबला रोड स्थित काशीपुरम में एक श्री फेस ट्यूबवैल पाईप लाईन हेतु 28 लाख 82 हजार रूपयों की राषि जारी की है।

नवनियुक्त कार्यकारिणी का स्वागत

निवाई। भारतीय जनता पार्टी के शहर अध्यक्ष नितिन छाबडा ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदनसिंह राठौड, जिलाध्यक्ष चन्द्रवीरसिंह चौहान की अनुमति से विधायक रामसहाय वर्मा के निर्देशन में कार्यकारणी की घोषणा की है। उन्होंने बताया कि कार्यकारणी में महामंत्री के पद पर जयनारायण कुमावत व वंशप्रदीप पारीक, उपाध्यक्ष किशनलाल चौधरी, शंकरलाल पडियार, शिवप्रकाश पारीक, नगेन्द्रसिंह, चन्द्रकला खंडेलवाल व मोहित जैन, मंत्री जितेन्द्र विजय, लक्ष्मण गुर्जर, जितेन्द्र धारवाल, पार्षद शंकरलाल सैनी, रामकेश मीणा व सुमित्रा वर्मा, कोषाध्यक्ष रामविलास बलाई, सह कोषाध्यक्ष विरेन्द्रसिंह, कार्यालय मंत्री गोवर्धन जैन, सह कार्यालय मंत्री नरेश कसाणा, मीडिया प्रभारी संजय हरसोरा, सह मीडिया प्रभारी सियाराम शर्मा, सोशल मीडिया प्रभारी अर्जुन शर्मा, सह सोशल मीडिया प्रभारी ओमप्रकाश वर्मा, आईटी सेल प्रभारी चन्दनमल कंवरिया, सह प्रभारी जॉनी केशवानी, प्रचार मंत्री अनिल पारीक सिरस एवं सह प्रचार मंत्री के पद पर जॉन्टी नकवाल को नियुक्त किया है। इस दौरान नवनियुक्त शहर अध्यक्ष नितिन छाबडा सहित समस्त कार्यकारणी का विधायक रामसहाय वर्मा व पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी के सानिध्य में पद व गोपनीयता की शपथ दिलाकर माला व साफा पहनाकर स्वागत किया गया।

प्रवेश की अंतिम तिथि 20 जून

श्रीमाधोपुर। नवीन राजकीय सह शिक्षा महाविद्यालय श्रीमाधोपुर में प्रवेश प्रक्रिया जारी आवेदन ऑनलाइन ई मित्र के माध्यम से भरे जा रहे आवेदन करने की अंतिम तिथि 20 जून 25 है महाविद्यालय स्तर पर आवेदनों का सत्यापन 21 जून तक किया जायेगा तथा अंतिम वरीयता एवं प्रतिक्षा सूची का प्रकाशन 23 जून को किया जाएगा , सत्यापन एवं शुल्क जमा 26 जून को होगा,28 जून को अंतिम सूची का प्रकाशन होगा तथा 1 जुलाई से अध्ययन कार्य हिन्दी, अंठोजी, संस्कृत, राजनीति विज्ञान, भूगोल, समाजशास्त्र , अर्थशास्त्र विषय में शुरू होगा। छात्र एवं छात्राएं दोनों इस महा विद्यालय में प्रवेश ले सकते हैमहाविद्यालय नगरपालिक श्रीमाधोपुर के सामने स्थित अस्थाई भवन में संचालित है, शीर्ष ही नवीन भवन का निर्माण होगा ।महाविद्यालय में राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली प्रत्येक प्रकार की छात्र वृत्ति जैसे सामाजकल्याण , कालीबाई स्कूटी देवनारायण स्कूटी योजना आदि का लाभ तथा ट्रांसपोर्ट योजना का लाभ राजस्थान के नियमानुसार देय होगा।

मानसून पूर्व तैयारियों के लिए ई.ओ. को निर्देश दिए

सांभरझील, (निसं)। पं. दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा जो कि आगामी 24 जून से 9 जुलाई तक आयोजित किया जाना है के अंतर्गत सरकार की ओर से विभिन्न कामों को तत्काल प्रभाव से करने हेतु नगरपालिका के अधिशाषी अधिकारी को निर्देश जारी कर दिए हैं। स्वायत शासन विभाग के निदेशक इंद्रजीत सिंह ने आदेश में बताया कि

सभी बरसाती नालों, सीवर लाइनों एवं ड्रेनेज चैनलों की सफाई 15 अप्रैल से प्रारंभ की जा चुकी है इस कार्य को नियमित रूप से जारी रखें तथा सतत मॉनिटरिंग एवं साइट निरीक्षण अनिवार्य रूप से करें।

जलभराव की पूर्व संभावना वाले स्थलों की पहचान कर, आवश्यक समाधान एवं वर्षाजल की त्वरित एवं निर्बाध निकासी हेतु पुख्ता एवं स्थायी व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। रेलवे अंडरपास, निचले क्षेत्रों में बसी बस्तियों एवं प्रमुख सडक चौराहों पर वर्षा के समय जलभराव की स्थिति उत्पन्न न हो, इसके लिए पंप सेट्स, नाव, मिट्टी से भरे कट्टे आदि की पूर्व तैयारी एवं त्वरित तैनाती करने को भी कहा है।

निर्देश दिए गए हैं कि बरसाती नालों पर किए गए अवैध अतिक्रमणों की पहचान कर, नियमानुसार अभियान संचालित करते हुए उन्हें तत्काल प्रभाव से हटाया जाए तथा वृक्षारोपण के लिए, गड्डों की खुदाई शीघ्रता से पूर्ण कराई जाए ताकि पखवाडे के दौरान पौधारोपण किया जा सके। इसके अतिरिक्त अधिशाषी अधिकारी को तालाबों, नाडियों एवं अन्य सार्वजनिक जल स्त्रोतों की समुचित सफाई कराई जाए तथा इनके किनारों पर सुरक्षा एवं सावधानियों से संबंधित चेतावनी बोर्ड अनिवार्य रूप से लगाने पिछली बरसातों में जिन इलाकों में समस्याएं सामने आई थीं, उनकी समीक्षा करते हुए स्थायी समाधान की दिशा में काम करने, आपदा प्रबंधन के अंतर्गत मिट्टी से भरे कट्टों की अग्रिम व्यवस्था सुनिश्चित की जाए ताकि भारी वर्षा या जलभराव की स्थिति में तुरंत उपयोग में लिया जा सके। मुख्यमंत्री सद्भावना केंद्रों पर पहले से संग्रहित वस्तुओं जैसे कपडे, फर्नीचर, खिलौने आदि का संग्रहण एवं वितरण की योजना बनाकर लागू करने, रात्रिकालीन सफाई कार्यों की ठेकेदारों द्वारा व्यवस्था एवं रात्रि निरीक्षण उपखण्ड अधिकारी/ तहसीलदार स्तर पर किया जाएगा। सभी सफाई व अन्य संबंधित भुगतान कार्य मानसून उपरांत किया जाए ताकि कार्यों की सही प्रकार से स्थिति सामने आ सके।

भाजपा कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर

निवाई। भारतीय जनता पार्टी नटवाडा मण्डल अध्यक्ष बद्री विजय नटवाडा ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ एवं जिलाध्यक्ष चन्द्रवीरसिंह चौहान की अनुमति से विधायक रामसहाय वर्मा की सहमति से कार्यकारणी का विस्तार किया है। जिससे भाजपा के कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर दौड गई। अध्यक्ष बद्री विजय ने बताया कि कार्यकारणी में महामंत्री के पद पर आशाराम डोई व नारायण यादव, उपाध्यक्ष अमरसिंह सोलंकी, डीआर ममता चौधरी, पूर्व प्रधान ममता जाट, रमेश गुर्जर, हरिशंकर चौधरी व रामसहाय मीणा, मंत्री के पद पर रामदयाल गुर्जर, नन्दसिंह राजावत, जगराम मीणा, मुकेश रैगर, मुकेश प्रजापत व लवराज सिंह, कोषाध्यक्ष के पद पर रामदेव प्रजापत, आई-टी-सेल प्रभारी चिन्टू लक्षकार, मीडिया प्रभारी हेमराज मीणा, प्रवक्ता धर्मचन्द चैधरी, कार्यालय मंत्री मुकेश कीर व सोशल मीडिया प्रभारी के पद पर राजू जायसवाल को नियुक्त किया है।

पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

कोटपूतली। राजकीय एल.बी.एस. पी.जी. महाविद्यालय में सोमवार को नई किरण नशा मुक्त भारत अभियान के एक्टिविटी कैलेंडर के अनुसार जून माह के दूसरे सप्ताह में नई किरण नशा मुक्ति अभियान एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वाधान में नशा मुक्ति विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पोस्टर के माध्यम से नशे के साधनों, दुष्परिणामों एवं नशे से बचने के लिए विभिन्न उपायों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत की गई। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल द्वारा किए गए निर्णय के अनुसार चंचल गुप्ता प्रथम, साक्षी जांगिड़ एवं भारती यादव द्वितीय व सीमा गुर्जर तृतीय स्थान पर रही। प्राचार्य प्रो. राजेंद्र कुमार सिंह ने विजेता रहे सभी प्रतिभागियों को बधाई दी एवं प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों द्वारा किए गए प्रयासों की प्रशंसा की।

नाम परिवर्तन

मैंने अपना नाम गायसुदिन से बदलकर मो. इरफान पुत्र फुल मोहम्मद रख लिया है। भविष्य में मुझे मो. इरफान के नाम से जाना जावे। पता:- A-574, न्या जालूपुरा शास्त्री नगर जयपुर राजस्थान।

मैं प्रदीप देवनानी पुत्र श्री दयाल दास देवनानी निवासी D-41, बजरंगविहार-3, हरमाड़ा घाटी, जयपुर राजस्थान। प्रदीप कुमार देवानानी व प्रदीप देवनानी दोनों नाम स्वयं के है तथा भविष्य में मुझे प्रदीप देवनानी के नाम से जाना जाये।

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी अभिभाष्या नीलम वशिष्ठ पत्नी श्री राहुल वशिष्ठ निवासी मकान नम्बर 3/591, प्रधान मार्ग मालवीय नगर जयपुर, राजस्थान द्वारा श्री सुकृत शर्मा पुत्र स्व.श्री मुरारी लाल शर्मा निवासी फ्लैट नम्बर सी- 244, आशियाना रंगोली, ग्राम आशियाना, भिवाडी, अलवर राजस्थान से उनके एकमात्र स्वामित्व व अधिपत्य की सम्पत्ति फ्लैट नम्बर E-F0149 1st FLOOR PLOT NO E-F0149 AT, GULMOHAR GARDENS MANPURA BHATAWALA, VATIKA ROAD, SANGANER, JAIPUR राजस्थान मे स्थित है जिसका कुल बिल्टअप एरिया 808.80 वर्गफीट व सुपर बिल्टअप एरिया 1010 वर्गफीट है को खरीद करने हेतु एच.डी.एफ.सी. बैंक लि. से ऋण प्राप्त कर उक्त सम्पत्ति को बंधक रखना चाहता है। यदि किसी भी व्यक्ति, संस्था, बैंक आदि को उक्त सम्पत्ति के खरीद / बंधक से किसी भी प्रकार का कोई ऐतराज हो तो 7 दिवस के अन्दर अधोहस्ताक्षरकर्ता से लिखित आपत्ति प्रस्तुत कर सम्पर्क करे, बाद गुजरने मियाद किसी प्रकार की आपत्ति मान्य नही होगी।
जयपुर (रामेश्वर सिंह राठौड़) एडवोकेट
दिनांक:-16.06.2025 मो.नं. 9829256466

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी अभिभाष्या श्रीमती पूजा हरियानी धर्मपत्नि श्री विष्णु हरियानी, मकान नम्बर 1/340, मालवीय नगर, जयपुर के पति विष्णु हरियानी पुत्र स्व. गुलाबराय हरियानी जो कि विगत एक वर्ष से मानसिक रूप से अस्वस्थ है तथा सोचने, समझने एवं सही निर्णय लेने की स्थिति में नहीं है। मकान नम्बर 1/340, 1/14, 2/498, मालवीय नगर, जयपुर की अचल सम्पत्तियाँ मेरी अभिभाष्या के पति की पैतृक अचल सम्पत्तियाँ है जिनकी खरीद मेरी अभिभाष्या के विवाहोपरांत हुई है जिसमें मेरी अभिभाष्या की आर्थिक सहभागिता रही है उक्त सम्पत्तियों पर मेरी अभिभाष्या का कब्जा है। किसी भी दीगर व्यक्ति, संस्था द्वारा विष्णु हरियानी से उक्त सम्पत्तियों के क्रय / हस्तान्तरण बाबत किये गये किसी भी प्रकार के संव्यवहार के लिए संबधित पक्ष स्वयं उत्तरदायी रहेगा।
जयपुर (चन्द्रप्रकाश खेतानी) एडवोकेट
दिनांक:15/6/2025 मो.नं.9314505592

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्यगण 1. मोहनलाल हरियानी, 2. रवि हरियानी भागीदार फर्म मीरा मेडिकल्स, दुकान नं 8 दूनी हाऊस, फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर के अन्य भागीदार विष्णु हरियानी पुत्र स्व. गुलाबराय हरियानी जो कि विगत एक वर्ष से मानसिक रूप से अस्वस्थ है तथा सोचने, समझने एवं सही निर्णय लेने की स्थिति में नहीं है। किसी भी दीगर व्यक्ति, फर्म द्वारा विष्णु हरियानी से उक्त फर्म से संबधित किये गये किसी भी प्रकार के संव्यवहार / लेन-देन के लिए संबधित पक्ष परिणामों के लिए स्वयं उत्तरदायी रहेगा।
जयपुर (चन्द्रप्रकाश खेतानी) एडवोकेट
दिनांक:15/6/2025 मो.नं.9314505592

खोया-पाया

मेरे मकान 2 घ 10, जवाहर नगर जयपुर का मूल आवंटन पत्र, कब्जा पत्र, अदैय प्रमाण पत्र, कार्यालय आदेश, पर्पेटुअल लीज एवं कन्वेंस डीड-जवाहर नगर में कहीं खो गए। मिलने पर सूचित करें- मंजू माथुर-9928499072

मेरे मकान संख्या 17, न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, रणथम्भौर रोड, सवाई माधोपुर, राजस्थान के मूल आवंट पत्र, साईट प्लान, नक्शा, पजेशन लैटर व अन्य दस्तावेज कहीं गुम हो गये है। मिलने पर सूचित करें- निरंजन लाल गुप्ता 9828772285

मेरे आवास संख्या 67/193, प्रताप नगर सांगानेर जयपुर का मूल आवंटन से मौलिक कब्जे की मूल प्रति कहीं गिर/गुम हो गई है मिलने पर सूचित करें- रितेश जैन 9929112021

गंगोत्री व हरिद्वार जाने के लिए पंजीयन शुरू

- गंगाजल लाने के लिए 30 जून को पावटा से गंगोत्री के लिए व 8 जुलाई को हरिद्वार के लिए शिवभक्त होगे रवाना

पावटा। बाबा भूतनाथ कमेटी पावटा के सानिध्य मे आगामी 30 जून 2025 सोमवार को गंगाजल लाने के लिए कावड यात्रियों का एक जत्था बाबा भूतनाथ जोहडा धाम पावटा व ज्ञानदास महाराज मंदिर से गंगोत्री व 8 जुलाई 2025 मंगलवार को एक जत्था पावटा से हरिद्वार के लिए रवाना होगा। जिसका बाबा भूतनाथ धाम मंदिर महंत जयराम दास महाराज के सानिध्य मे पोस्टर विमोचन किया गया।

उक्त जानकारी देते हुए बाबा भूतनाथ कमेटी संरक्षक दिनेश शर्मा, रामोतार शर्मा, अध्यक्ष विकास शर्मा, कावड प्रभारी मामराज स्वामी, विनोद सैन, गंगाधर मीणा, जम्मन राठी, मालीराम बाडीगर, बंटी शर्मा, प्रमोद शर्मा ने बताया कि बाबा भूतनाथ कमेटी पावटा के सानिध्य मे आगामी 30 जून 2025 सोमवार को कावड यात्रियों का दल शाम 5 बजे बाबा भूतनाथ की पूजा अर्चना करके पावटा से गंगोत्री व 8 जुलाई मंगलवार को हरिद्वार के लिए प्रस्थान करेगा। वही गंगोत्री व हरिद्वार से गंगाजल भरकर 22 जुलाई बुधवार को वापस पावटा आगमन पर विशाल कावड शोभायात्रा नगर भ्रमण करते हुए बाबा भूतनाथ मंदिर जोहडा धाम पावटा पहुंचेगी। वही 23 जुलाई 2025 बुधवार को बाबा भूतनाथ का गंगा जल से जलाभिषेक किया जायेगा। वही बाबा भूतनाथ कमेटी पदाधिकारियो ने कावड यात्रा में जाने वाले शिव भक्तो से गंगोत्री व हरिद्वार जाने के लिए कावड प्रभारियों से अपना अपना पंजीयन करवाने की बात कही। वही गौरतलब है कि भूतनाथ कमेटी पावटा द्वारा विगत 30 वर्षो से हरिद्वार से पैदल चलकर पावटा गंगाजल कावड यात्रा आती है। उसी गंगाजल से कावडियों, शिव भक्तो व ठाम जनता द्वारा बाबा भूतनाथ का अभिषेक किया जाता है।

प्राची यादव ने गौरवान्वित किया

श्रीमाधोपुर। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से शनिवार को जारी नीट-यूजी 2025 के रिजल्ट में मानगढ़ के डागर परिवार के कामरेड अनिल यादव एवं सरोज यादव की होनहार बिटिया प्राची यादव ने 720 में से 591 अंक अर्जित कर आल ओवर इंडिया में 2097 वीं रैंक हासिल करके परिवार ही नहीं समूचे अजीतगढ परिक्षेत्र को गौरवान्वित करने का काम कर दिखाया।अपनी बुद्धि एवं मेधावी शक्ति का परचम लहराने वाली प्राची यादव ने ओबीसी एनसीएल सेंट्रल लिस्ट केटेगिरी रैंक 703 प्राप्त करने में सफलता हासिल की। क्षेत्र के चिर-परिचित वयोवृद्ध शिक्षाविद् स्वर्गीय सूर्यनारायण यादव की पोती प्राची यादव अपने स्वर्गीय दादा को ही सबसे बडा प्रेरणास्त्रोत मानती हैं और रिजल्ट आते ही उन्हीं की तस्वीर के समक्ष सर्वप्रथम अपना स्कोरकार्ड समर्पित करके भावुक होकर नमन किया।21अक्टूबर, 2005 में जन्मी नन्हीं सी प्राची बचपन से ही होनहार एवं प्रतिभाशाली रही है। प्रारम्भिक शिक्षा अजीतगढ से लेने के बाद सीकर कोचिंग का सहारा लिया और नीट-यूजी फाईट कर दिखाया।

'बालक की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा से हो'

निवाई। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, जयपुर के तत्वावधान में आयोजित हो रहे दस दिवसीय नवीन आचार्य अभ्यास वर्ग में सोमवार को विद्या भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री गोविंद कुमार ने कहा कि बालक की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी परिवर्तन कर इस बार 22 भाषाओं को शामिल किया गया है। ताकि प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में दी जा सके। उन्होंने कहा कि बालक की शिक्षा गुणात्मक होनी चाहिए।

शिक्षा के साथ बालक का सर्वांगीण विकास भी होना आवश्यक है। बालक का संपूर्ण मूल्यांकन भी होना चाहिए। इससे बालक का समग्र विकास हो सकेगा। पाथेय से पूर्व प्राथमिक विभाग के प्रभारी गिर्राज प्रसाद गुर्जर ने भाव गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ क्षेत्रीय संगठन मंत्री गोविंद कुमार, विद्यालय के पूर्व छात्र डॉ.आनंद विजय, आदर्श शिक्षा परिषद, जयपुर के अध्यक्ष राममोहन गर्ग, भारतीय शिक्षा प्रचार समिति के जिला अध्यक्ष दिनेश कुमार शर्मा, अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के सह मंत्री व वर्ग पालक हजारीलाल बैरवा, प्रांत सचिव लक्ष्मणसिंह राठौड, प्रांत निरीक्षक व अटल प्रभारी अरुण कुमार दुबे व स्थानीय प्रबंध समिति अध्यक्ष रामगोपाल सेवालिया व अविनाश पारीक ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रभावशाली वंदना कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन आचार्या शिवानी गौतम ने किया। अतिथियों का परिचय वर्ग प्रबंध प्रमुख व स्थानीय विद्यालय के प्रधानाचार्य गोविंद नारायण शर्मा ने करवाया। सभी अतिथियों का दुपट्टा ओढाकर व श्रीफल व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। इस अवसर पर, वर्ग सह प्रबंधक मोहनलाल शास्त्री, जिला सचिव दिनेश कुमार शर्मा, जिला संस्कार प्रमुख राजेश शर्मा, गोवर्धन शर्मा, रामजीलाल गुर्जर, तुलसीराम चौधरी, राजेश जैन, शिवराज पाराशर, सुरेशचंद गौतम, सूर्य प्रकाश खंडेलवाल, टीकमचंद कुमावत व भंवर चौधरी सहित अन्य कार्मिक व्यवस्थाओं में जुटे रहे।

कार्यालय नगर परिषद कोटपूतली (कोटपूतली-बहरोड)

क्रमांक : न.प.कोट/भूमि/2025/928 दिनांक : 16.6.25

प्रारूप-10
(नियम 6(7)
लोक सूचना

आवेदनकर्ता श्री महेन्द्र सैनी पुत्र श्री बनवारी लाल सैनी जाति माली निवासी गौशला रोड तहसील कोटपूतली इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का गैर कृषित प्रयोजन (व्यवसायिक) उपयोग हेतु ऐसी भूमि अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है।

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा नंबर	क्षेत्र	प्रयोजनार्थ
कोटपूतली-बहरोड, कोटपूतली	बासडी (कोटपूतली)	2178/1701 2179/1701	2.7500 है.	आवासीय

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 1963 के अधिनियम पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारं के निर्वापन करकोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिवस के भीतर किसी कार्यालय दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अद्योहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थन दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त वर्णित समय के भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निस्तारण किया जाएगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर मुहर के अधीन .... को जारी की गई है।

प्राधिकृत अधिकारी, नगर परिषद कोटपूतली

कार्यालय नगर परिषद कोटपूतली (कोटपूतली-बहरोड)

क्रमांक : न.प.कोट/भूमि/2025/925 दिनांक : 16.6.25

प्रारूप-10
(नियम 6(7)
लोक सूचना

आवेदनकर्ता श्री महेन्द्र सैनी पुत्र श्री बनवारी लाल सैनी जाति माली निवासी गौशला रोड तहसील कोटपूतली इस कार्यालय में नीचे उल्लेखित भूमि का गैर कृषित प्रयोजन (व्यवसायिक) उपयोग हेतु ऐसी भूमि अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है।

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा नंबर	क्षेत्र	प्रयोजनार्थ
कोटपूतली-बहरोड, कोटपूतली	खेडकी मुक्कड (कोटपूतली)	1463/165	0.1193 है.	व्यवसायिक

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम 1955 की धारा 1963 के अधिनियम पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारं के निर्वापन करकोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिवस के भीतर किसी कार्यालय दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अद्योहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष समर्थन दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त वर्णित समय के भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जावेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तद्नुसार मामले का निस्तारण किया जाएगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर मुहर के अधीन .... को जारी की गई है।

प्राधिकृत अधिकारी, नगर परिषद कोटपूतली

उर्स कूल की रस्म के साथ सम्पन

मनोहरपुर । निकटवर्ती कस्बा अचरोल में स्थित हिंदू मुस्लिम एकता के प्रतिक हजरत कर वाले बाबा रहमतुल्लाह आलेह का वार्षिक उर्स मेला 16 जून सोमवार की सुबह कूल की रस्म के साथ मे विधिवत सम्पन्न हो गया। 15 जून रविवार को सुबह झंडे की रस्म के साथ मे उर्स का आगाज हुआ इसी के साथ मे रंग बिरंगे परिधानों में सज संवरकर विभिन्न वाहनों में सवार होकर जायरिनों का आना शुरू हुआ। शाम 5 बजे बाद में मस्जिद के पास से चाद्दर का जुलूस कव्वालों के संग निकला जो कि अचरोल कस्बे के प्रमुख मार्गो से गुजरता हुआ बाबा के दरबार मे आया इस दौरान हिन्दू मुस्लिम भक्त पुष्पवर्षा करके ठंडा पानी शर्बत आदि पिलाकर जुलूस का स्वागत किए। मगरिब के बाद में लंगर वितरण किया जाएगा जिसमे बाबा के दीवानो ने पंगत प्रसादी ली। रात्रि 10 बजे बाद में सीकर की मशहूर कव्वाल पार्टी द्वारा सम्पूर्ण रात्रि तक बाबा की मान मनुहार की गई। सोमवार की सुबह 4 बजे बाद में कूल की रस्म के साथ में उर्स विधिवत संपन्न होगया। इस दौरान उपस्तिथ सूफी लोगो का व सरोहनीय कार्य करने वालो का सम्मान किया गया। यह जानकारी हजरत कर वाले बाबा के गद्दी नशीन व दरगाह के खादिम काल्लू शाह बाबा व उनके लडके कांग्रेसी नेता शकील खान ने दी।

किशनगढ़ बास में सिंधी समाज का 11 दिवसीय बाल संस्कार शिविर प्रारंभ

किशनगढ बास। पूज्य सिंधी पंचायत एवं भारतीय सिंधु सभा की ओर से संत कंवर राम हरिमंदिर में 11 दिवसीय सिंधी बाल संस्कार शिविर का अतिथियों ने इष्टदेव भगवान झूलेलाल एवं मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

सिंधी समाज के प्रवक्ता सुनील बतरा ने बताया कि समाज में मातृभाषा के उत्थान हेतु 5 वर्ष से 15 वर्ष तक के बच्चों का 15 जून से 25 जून तक सिंधी बाल संस्कार शिविर लगाया गया है। संत कंवर राम हरि मंदिर में 11 दिनों तक चलने वाले शिविर का पूज्य सिंधी पंचायत के मुखी गोकुलदास मृगवानी , पूज्य बहराणा मंडल के बाबा बाबूलाल चंदनानी, सेवानिवृत्त डाक्टर युधिष्ठिर पमनानी, समाजसेवी दौलत भूटानी, व्यापार महासंघ के अध्यक्ष परमानंद लख्यानी, सरपंच जनैश भूटानी, लायंस क्लब के अध्यक्ष डॉ राजेश पमनानी ने इष्टदेव भगवान झूलेलाल एवं मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों का भारतीय सिंधु सभा के सदस्यों ने दुपट्टा ओढाकर स्वागत सत्कार किया । सिंधी बाल संस्कार शिविर में शुभारंभ

सिंधी समाज के प्रवक्ता सुनील बतरा ने सिंधी बाल संस्कार शिविर के बारे में जानकारी दी।

तक 105 बच्चों के नामांकन हो चुके है, जिसमें ननिहाल में छुट्टियां बिताने आए हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा ,अजमेर, अलवर के बच्चे भी भाग ले रहे हैं। सिंधी बाल संस्कार शिविर के सभी बच्चों को प्रतिदिन भामाशाह के सहयोग से अल्पाहार एवं पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे। शिविर के प्रथम दिन बच्चों के अल्पाहार की व्यवस्था व्यापार महासंघ के अध्यक्ष परमानंद लख्यानी की तरफ से की गई थी । शिविर में बच्चों को सिंधी समाज के शिक्षक सुभाष चंद्र दासवानी, विक्की बत्रा, रुचि हरवानी, शारदा बत्रा, जागृति आडवानी, हिमांशी मंघनानी, आशु हरवानी, हिमानी धिंगाणी सिंधी ज्ञान भाषा के साथ योग गायन एवं खेलकूद की शिक्षा भी प्रदान करेंगे । शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान पूज्य सिंधी पंचायत के सदस्य नेभराज बतरा , तीरथ दास बतरा,नंदलाल हरवानी,रूपचंद बतरा, दर्शन लाल बतरा,झामन दास हरवानी, रमेश हरवानी, रामचंद्र आडवानी, राजेश कामदार, राजा मोरवानी, मनीष भूटानी, भारतीय सिंधु सभा के अध्यक्ष प्रभु दयाल चंदनानी, चतुर्भुज बजाज, नेवंद मल , लक्ष्मण दास मंगलानी, नरेश मंघनानी,मुरलीधर बच्चानी,राजा वलेचा, संजय बजाज, हीरु हरवानी,बंसत लख्यानी, सुनील वलेचा, अक्षय बजाज, हिमांशु बतरा,भरत सहित अनेक सिंधी समाज के लोग मौजूद रहे।

कार्यालय विकास अधिकारी कम कार्यक्रम अधिकारी पंचायत समिति सेवर

क्रमांक : 556 दिनांक : 13.6.2025

खुली ई-निविदा संख्या 03/2025-26

पंचायत समिति सेवर एवं इसके परिक्षेत्राधीन 25 ग्राम पंचायतों में वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु मनरेगा व ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की विभिन्न योजनाओं की निर्माण सामग्री आपूर्ति हेतु अनुभवी एवं पंजीकृत फर्मो/संवेदकों/सप्लायरों से दिनांक 31.03.2026 तक के लिए ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया से वेबसाईट www.spp.rajasthan.gov.in & eproc.rajasthan.gov.in पर 16.06.2025 से 27.06.2025 तक देखी व डाउनलोड कर प्राप्त की जा सकती है।

NIB No. ZBH2526A0204

UBN No.

1.	मूढौता	ZBH2526GLOB00354	14.	इकरन	ZBH2526GLOB00369
2.	फुलवारा	ZBH2526GLOB00357	15.	माढौनी	ZBH2526GLOB00370
3.	बासीखुर्द	ZBH2526GLOB00358	16.	सुनारी	ZBH2526GLOB00371
4.	झारौली	ZBH2526GLOB00359	17.	घुरथ्यारी	ZBH2526GLOB00372
5.	लुधावई	ZBH2526GLOB00360	18.	पार	ZBH2526GLOB00373
6.	बिलौठी	ZBH2526GLOB00361	19.	हथैनी	ZBH2526GLOB00374
7.	जाटौली स्थमान	ZBH2526GLOB00362	20.	कूम्हों	ZBH2526GLOB00375
8.	जघीना	ZBH2526GLOB00363	21.	महुआ	ZBH2526GLOB00376
9.	ऊंदरा	ZBH2526GLOB00364	22.	रूँध इकरन	ZBH2526GLOB00377
10.	चिकसाना	ZBH2526GLOB00365	23.	खैमरा	ZBH2526GLOB00378
11.	बहनेरा	ZBH2526GLOB00366	24.	गावडी	ZBH2526GLOB00379
12.	पीपला	ZBH2526GLOB00367	25.	धौरमुई	ZBH2526GLOB00380
13.	मोराली कला	ZBH2526GLOB00368	20.	प.स. सेवर	

विकास अधिकारी कम कार्यक्रम अधिकारी, पंचायत समिति सेवर

सार-समाचार

विभिन्न मांगों पर चर्चा

भरतपुर (निस)। ऑल राजस्थान चम्बल कॉन्ट्रेक्टर एसोसिएशन की एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न मांगों को लेकर चर्चा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि जल्द ही जयपुर में महापड़ाव डाला जाएगा, जिसमें ठेकेदार शांति पूर्ण तरीके से अपनी मांगें मनवाने के लिए धरना प्रदर्शन करेंगे।हालांकि इससे पहले वह मंत्री को ज्ञापन देकर अवगत करा चुके हैं लेकिन अब तक समाधान नहीं हुआ। ऑल राजस्थान चम्बल कॉन्ट्रेक्टर प्रदेश अध्यक्ष अमर चंद विश्नोई ने बताया कि उनकी कही मांगे है जिन्हें लेकर कही बार चम्बल मंत्री को ज्ञापन के माध्यम से अवगत कराया है लेकिन उनकी मांग नहीं मानी गई है.सिर्फ अब तक आश्वासन मिला है.भरतपुर में चम्बल कॉन्ट्रेक्टरो की एक बैठक की गई जिसमें निर्णय लिया गया है जल्द जयपुर में सभी ठेकेदार महापड़ाव डालेंगे वहां शांति पूर्ण तरीके से अपनी मांग मनवाने के लिए धरना प्रदर्शन करेंगे । उन्होंने कहा कि पिछली सरकार में जिन कामों को किया गया उनका भुगतान नहीं हुआ है, जीएसटी दर 12: से 18: कर दी गई है । पीएमसी सील कोट और अन्य सिविल कार्यों की दोष निवारण अवधि एक वर्ष की जाए। इसके अलावा डीबीएम, बीसी व सीसी तथा भवन कार्यों की अवधि अधिकतम तीन वर्ष तय करने, टाइम एक्सटेंशन के मामलों का अधिकार उच्च अधिकारी को देने, पंजीयन नियमों में बदलाव करने, स्थायी पंजीकृत ठेकेदारों से बढ़ी हुई राशि नहीं लेने व पुनर्विलोकन की बाध्यता हटाने सहित अन्य मांगें रखी।इसके अलावा हैंडओवर और टेकओवर की पूरी प्रक्रिया विभाग खुद करें। ठेकेदारों को बाध्य न किया जाए।

धर्मेन्द्र का नीट में चयन

निवाई। गांव हथोना निवासी धर्मेन्द्र सैनी पुत्र गौरीलाल सैनी का नीट परीक्षा 2025 में चयन हुआ है। छात्र धर्मेन्द्र सैनी ने बताया कि उन्होंने लगातार दूसरे प्रयास में 563 अंकों से 7274 रैंक प्राप्त करके नीट में सफलता हासिल की है। धर्मेन्द्र सैनी ने बताया कि उनके माता-पिता का सपना था कि उनका पुत्र डॉक्टर बनकर समाज सेवा का कार्य करें, जो सपना 2025 में साकार हो गया। उनके पिता गौरीलाल सैनी जयपुर में 20 वर्षों से मेहनत मजदूरी का कार्य करते हैं एवं गांव आधोलाई में खेती का कार्य करके अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं। उनके पुत्र धर्मेन्द्र सैनी का चयन होने से पूरे परिवार सहित समस्त रिश्तेदारों व गावं में खुशी का माहौल है।

अवैध बजरी से भरा ट्रक जब्त

टोंक। बरोनी थाना पुलिस ने अवैध बजरी खनन और परिवहन के खिलाफ कार्यवाही करते हुए एक ट्रक को जब्त किया है, जो अवैध बजरी से भरा हुआ था। बरोनी थाना अधिकारी बृजेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया सोमवार को थाने के सामने नाकाबंदी के दौरान एक ट्रक की तलाशी लेने पर उसमें अवैध रूप से 50 टन बजरी भरी हुई पाई गई, जिसे तुरंत जब्त कर एमएमआरडी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई ।

बीएमडी जांच शिविर आज

श्रीमाधोपुर। शहर के एम. एस. हॉस्पिटल में मंगलवार 17 जून को निःशुल्क यूरिक एसिड और बोन मैरो डेंसिटी (बीएमडी)जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. माधव सिंह ने बताया कि शिविर में मरीजों का यूरिक एसिड और बोन मैरो डेंसिटी जांच किया जाकर उन्हें आवश्यक परामर्श दिया जाएगा। यह शिविर प्रतिमाह आयोजित किया जाता है।

मशरुका मोटरसाइकिल बरामद

पावटा। जिला पुलिस अधीक्षक कोटपुतली बहरोड़ राजन दुष्यंत के निर्देशानुसार अपराधियों की धरपकड़ एवं बदमाशान के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही के तहत अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन, वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन एवं विराटनगर थाना प्रभारी सोहनलाल के नेतृत्व में टीम का गठन ठााम नवरंगपुरा से अभियुक्त अनिल पुत्र कल्याण उम्र 25 साल निवासी नवरंगपुरा थाना विराटनगर की गहनता से तलाश कर नवरंगपुरा से दस्तयाब कर पूछताछ के बाद प्रकरण में चोरी हुई माल मशरुका मोटरसाइकिल बरामद कर अनुसंधान कर गिरफ्तार किया गया। विराटनगर थाना प्रभारी सोहनलाल ने बताया कि 9 दिसंबर 2024 को परिवादी ने थाने में मामला दर्ज करवाया था कि 5 दिसंबर 2024 को शादी समारोह के दौरान भामोद मोड़ नवरंगपुरा से कोई अज्ञात चोरी कर ले गया है। जिस पर बी एन एस में मामला दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया गया।

अवैध बजरी से भरा ट्रक जब्त

निवाई। बरोनी थाना पुलिस ने अवैध बजरी परिवहन करते हुए एक ट्रक को जब्त किया है। थानाधिकारी बृजेंद्रसिंह राठौड ने बताया कि पुलिस थाने के सामने नाकाबंदी के दौरान अवैध-बजरी से भरे हुए एक ट्रक को जब्त किया। ट्रक में करीब 50 टन बजरी भरी हुई थी। पुलिस ने चालक व मालिक के विरुद्ध एमएमडीआर एक्ट में प्रकरण दर्ज कर लिया है। ट्रक को मय बजरी के थाना परिसर में खड़ा करवा दिया गया है।

करंट से 11 वर्षीय बालक अचेत

पावटा। प्रागपुरा के सुभाष चौक पर रविवार की देर शाम करीब 09 बजे एक 11 साल का बच्चा हाई मास्क विद्युत पोल में करंट की चपेट में आ गया। बताया जा रहा है कि नगरपालिका पावटा-प्रागपुरा कार्मिकों को कई बार इस पोल में दौड़ते करंट की शिकायत की जा चुकी थी, लेकिन इसके बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की गई। हादसे में 11 साल का बच्चा सिद्दीकी पुत्र इकबाल हाल निवासी प्रागपुरा अचेत हो गया और उसे तुरंत उपजिला अस्पताल पावटा ले जाया गया। जहां डॉ. सौरभ ने बताया कि बच्चे का प्राथमिक उपचार कर 10 मिनिट बेहोश रहने के कारण जिला अस्पताल कोटपुतली रेफर किया है। इस घटना ने नगरपालिका और विद्युत विभाग की लापरवाही को उजागर किया है। लोगों ने मांग की है कि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं। इस घटना से नगरपालिका और विद्युत विभाग की जिम्मेदारी, जिम्मेदारियों को सही तरीके से निभाना और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कुछ किया जा सकता है जैसे कई सवाल खड़े होते है।

जिला प्रभारी मंत्री ने अलवर व खैरथल में अधिकारियों की बैठक ली

प्रभारी मंत्री ने अलवर व खैरथल में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान में अब तक हुए कार्यों की समीक्षा की।

- कोटकासिम के कतोपुर में अभियान के तहत जोहड पर की सफाई व मिट्टी खुदाई, दुर्लभ नाथ मंदिर में किया पौधारोपण
- अलवर के रोजाकाबास चांदोली में किए कार्यों का अवलोकन

अलवर/ खैरथल। जिले के प्रभारी एवं कृषि एवं उद्यानिकी, आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग मंत्री डॉ. किरोड़ी लाल मीणा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान में आमजन की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करे और फील्ड में जाकर कार्यों का अवलोकन करें। प्रभारी मंत्री मीणा ने सोमवार को यह निर्देश अधिकारियों को अलवर कलेक्टर डॉ अर्तिका शुक्ला एवं खैरथल कलेक्टर किशोर कुमार की मौजूदगी में हुई बैठक के दौरान दिए हैं।

प्रभारी मंत्री सोमवार को अलवर और खैरथल में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की क्रियान्विति को लेकर अधिकारियों की बैठक लेने पहुंचे थे। उन्होंने बैठक में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत अब तक हुए कार्यों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को कहा कि अभियान के तहत हर गतिविधि में आमजन की भागीदारी सुनिश्चित करें और फील्ड में जाकर के कार्यों का अवलोकन करें तभी अभियान सार्थक होगा ।

खैरथल बैठक में जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने अभियान के तहत अब तक किए कार्यों से पीपीटी के माध्यम से जिला प्रभारी मंत्री को अवगत करवाया और भविष्य में किए जाने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी दी। मंत्री किरोडी लाल मीणा ने अधिकारियों को भूजल संरक्षण हेतु पारंपरिक पद्धितयों के पुनरुद्धार और जल संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया और कहा कि अभियान में प्रत्येक अधिकारी की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है और यह जिम्मेदारी धरातल पर भी दिखनी चाहिए। मंत्री ने कहा योजनाओं के समुचित प्रचार-प्रसार और वंदे गंगा अभियान से मुख्यमंत्री का प्रदेश कल्याण का सपना साकार होगा। इसके मंत्री ने कोटकासिम स्थित दुर्लभ नाथ मंदिर, कतोपुर में वंदे गंगा अभियान के तहत जोहड़ की सफाई में श्रमदान कर "हरियालो राजस्थान" अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण किया।

उन्होंने मंदिर में पूजा अर्चना कर प्रदेश की सुख समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर मंत्री सहित अन्य अतिथियों ने पारंपरिक औजारों की सहायता से जोहड़ से मिट्टी निकालकर उसकी पाल पर डाली, जिससे जल संचयन की क्षमता बढ़ सके । कार्यक्रम के दौरान प्रभारी मंत्री ने उपस्थित आमजन को जल संरक्षण की शपथ दिलाई तथा जल व पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि जल ही जीवन है, और इसका संरक्षण आज की सबसे बडी आवश्यकता है।

यदि आज हम जल स्त्रोतों की रक्षा नहीं करेंगे, तो भविष्य की पीढियों के लिए संकट खड़ा हो जाएगा। इस दौरान पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव, जिला कलेक्टर किशोर कुमार पुलिस अधीक्षक मनीष कुमार, भिवाडी पुलिस अधीक्षक ज्येष्ठा मैत्रेयी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद सालुखे गौरव रविंद्र, अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रतनलाल भार्गव, डीएफओ राजेंद्र हुड्डा सहित अधिकारीगण एवं कार्यक्रम स्थल पर पर बड़ी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

ओवरलोड वाहनों से हादसे की आशंका

सिरस। बरोनी से सिरस सड़क मार्ग पर से रोजाना असॅवर लोड बजरी से भरे हुए ट्रेक्टर ट्रोलियों की आवाजाही से दुर्घटना की अशंका बनी हुई है। ठाामीणों ने बताया कि बरौनी-सिरस सडक़ पर बनास नदी से अवैध बजरी भर कर आने वाले ट्रेक्टर ट्रोलियो से आम जन परेशान है। पराना से सिरस तक ट्रैक्टरों के आवागमन से श्योसिंहपुरा, वजीराबाद, खलीलाबाद, सिरस व बस्सी सहित अन्य गांवो के लोगो को समस्या बनी हुई है। लोगो ने बताया कि अवरलोड बजरी से भरी ट्रोलियों के साथ ट्रेक्टर के संचालन से सडक़ मार्ग जगह जगह से टूट गया। ट्रेक्टर के तेज गति से संचलन से गांवो मे दुर्घटना की सम्भवनाऐं बनी हुई है। बजरी से भरी ट्रैक्टर ट्रोलियो के संचालन मे रोक लगाने के लिए प्रशासन को अवगत करवाने के बाद भी ध्यान नही देने से लोगो मे भारी रोष व्याप्त है। ठाामीणों ने पुलिस प्रशासन से बजरी से भरे अवैध ट्रेक्टरों पर रोक लगाने की मांग की है।

जल संरक्षण अभियान परंपरा व भविष्य दोनों को सहेजने का प्रयास : राजेंद्र गुर्जर

टोंक। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान एवं धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का जिला स्तरीय कार्यक्रम सोमवार को अलीगढ़ में आयोजित हुआ। पंचायत समिति सभागार में हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि देवली-उनियारा विधायक राजेंद्र गुर्जर ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में जल संरक्षण अभियान परंपरा और भविष्य दोनों को सहेजने का प्रयास है। विधायक ने कहा कि हमारे प्राचीन जल स्त्रोत केवल जल का भंडारण भर नहीं है, बल्कि ये हमारी विरासत और सामुदायिक जीवन के केंद्र रहे है। बावड़ियां, कुएं, तालाब यह सभी हमारी धरोहर है। उन्होंने कहा कि सभी लोग पेड़ लगाएं और उसकी देखभाल करें। उन्होंने अधिकारियों को धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान में उपखंड उनियारा की 22 ग्राम पंचायतों में लगने वाले शिविरों में अधिकाधिक जनजातीय वर्ग के लोगों को सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाने पर जोर दिया। जिला प्रमुख सरोज बंसल ने कहा कि प्लास्टिक का अंधाधुंध उपयोग से हमारे पर्यावरण और स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। इसके साथ ही, भविष्य भी संकट में है।

यह सैकडों वर्षो तक नष्ट नहीं होता और जमीन, जलवायु सभी को प्रदूषित करता है। सभी लोग प्लास्टिक का उपयोग नहीं करें तथा कचरें को यहां-वहां नहीं डाले। कार्यक्रम में प्रधान फूल बाई मीना और पूर्व पालिकाध्यक्ष शंकर लाल ठाडा ने भी जल संरक्षण पर अपने विचार व्यक्त किए। कस्बे की महिलाओं ने अंबेडकर सर्किल से कलश यात्रा एवं जल संरक्षण जन जागरूकता रैली निकाली। विधायक राजेंद्र गुर्जर, जिला प्रमुख सरोज बंसल, प्रधान फूलबाई मीना, सीईओ परशुराम धानका, एसीईओ ललित कुमार, जल ग्रहण एवं भू-संरक्षण विभाग के अधीक्षण अभियंता ओमप्रकाश देवनानी ने विधिवत रूप से पीपल के वृक्ष का पूजन कर जिले में अच्छी वर्षा की कामना की। इसके पश्चात पीपल का पौधारोपण कर श्रमदान किया। अतिथियों ने कार्यक्रम के दौरान धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के जिले में शिविर आयोजन के ग्राम पंचायत एवं तिथि वार कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया। इसके बाद विधायक राजेंद्र गुर्जर ने जनसुनवाई कर क्षेत्र के लोगों की व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक समस्याओं को सुना और अधिकारियों को समस्याओं का समाधान करने के निर्देश दिए। इस दौरान उपखंड अधिकारी शत्रुघन गुर्जर, तहसीलदार विकास अधिकारी प्रवीण कुमार सैनी, विकास अधिकारी शंकर लाल मेघवाल समेत अन्य ब्लॉक स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

राज्य सरकार में कानून व्यवस्था व विकास कार्य चौपट : राठौड़

- आरटीडीसी के पूर्व चेयरमैन व कांग्रेस नेता धर्मेन्द्र सिंह राठौड कोटपूतली पहॅुचे
- पूर्व संसदीय सचिव रामस्वरूप कसाना के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया

कोटपूतली। कोटपूतली-बहरोड़ जिले के ग्राम काठुवास में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली के पिता स्व. लेखराम ठेकेदार की 16 वीं पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने आये पूर्व नेता प्रतिपक्ष व कांग्रेस नेता धर्मेन्द्र सिंह राठौड़ का कोटपूतली पहॅुचने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पूर्व संसदीय सचिव रामस्वरूप कसाना के नेतृत्व में कस्बे के कृष्णा टॉकिज रोड़ स्थित कांग्रेस कार्यालय पर जोरदार स्वागत किया। इस दौरान बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने राठौड़ का माला व साफा पहनाकर स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस मौके पर प्रैस से बातचीत करते हुये राठौड़ ने राज्य सरकार को पर्ची सरकार करार देते हुये कहा कि 40 विधायकों व 02 डिप्टी सीएम ने मुख्यमंत्री को आरएएस परीक्षा आगे बढ़ाने के लिये पत्र लिखा है, लेकिन जब उनकी ही नहीं सुनी जा रही है तो स्पष्ट होता है कि सरकार में आपसी तालमेल कैसा है। सरकार के मंत्रियों व विधायकों में असंतोश इस कदर व्याप्त है कि प्रदेश को विपक्ष की आवश्यकता ही नहीं है। मंत्री कब पद पर है एवं कब पद पर नहीं कुछ कहां नहीं जा सकता। किरोड़ी लाल मीणा का उदाहरण सभी के सामने है। राठौड़ ने आरोप लगाया कि भजन लाल सरकार में कानून व्यवस्था का बंटाधार है। विकास कार्य चौपट हो चुके है। आये दिन अपराध, बलात्कार जैसे घृणित अपराधों की सूचनायें आती रहती है, जिससे स्पष्ट होता है कि अपराधियों में कानून का कोई डर नहीं रह गया है।

भगवानसिंह रोल साहब को श्रद्धांजलि

निवाई। ग्राम पंचायत पलेई में श्री क्षित्रय युवक संघ संरक्षक भगवानसिंह रोल साहब का सर्व समाज के तत्वावधान में पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। दशरथ सिंह चौहान ने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक भगवान सिंह रोल साहब को जुझारजी महाराज के मंदिर में सर्व समाज के महिला-पुरुषों व बच्चों की शाखा के स्वयंसेवकों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। जिला प्रांत प्रमुख गोविंदसिंह ने भगवानसिंहजी के जीवन एवं उनके द्वारा किए गए महान कार्यों पर विचार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि भगवान सिंह रोल क्षत्रिय युवक संघ के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर करके समाज को नई दिशा दी है। जिनको समाज कभी नहीं भूला सकता है। उनकी प्रेरणा सर्व समाज को साथ लेकर काम करने एवं सबके साथ समानता का व्यवहार करना रहा है। उन्होंने समाज को जाठाती की शिक्षा दी है। इस अवसर पर जयसिंह चौहान, गोपाल सिंह, हितेश सिंह, राजेंद्र सिंह, दीपेंद्र सिंह, प्रताप सिंह, जितेंद्र सिंह, भूपेंद्र सिंह, विक्रम सिंह, आर्यवीर सिंह, श्रीदेवी कंवर, मुस्कान चौहान, वंदना कंवर व दीपशिखा न्यासा सहित कई महिला-पुरूषों ने श्रद्धांजलि देकर याद किया।

जल संरक्षण जन अभियान एवं फ्लैगशिप योजनाओं पर विचार विमर्श

कोटपूतली । जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट के वीसी कक्ष में किया गया। बैठक में केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं, बजट घोषणाओं, विकास कार्यों, वन्द गंगा जल स्वावलम्बन अभियान, एनएफएसए में नाम जोडने की प्रगति, योग दिवस, चुनाव सम्बन्धी कार्य, लम्बित यूडीआईडी कार्ड जारी करने, पंडित दीन दयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़े और एमओयू कंप्लायंस के बारे में चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

जिला कलक्टर ने कहा कि बैठक में दिए गए सभी निर्देशों की पालना सुनिश्चित कर सभी कार्यों को विहित समय में किया जाएं। उन्होंने यह भी कहा कि सभी पोर्टल पर डाटा को नियमानुसार अद्यतन करें। सम्पर्क पोर्टल के सभी प्रकरणों को नियमानुसार गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारित किया जाए। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत अभियान, पीएम विश्वकर्मा योजना सहित सरकार की फ्लेगशिप योजनाओं की बिंदुवार चर्चा करते हुए संबंधित अधिकारी को फ्लैगशिप योजनाओं पर विशेष रूप से फोकस करते हुए योजनाओं से सभी पात्रों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। साथ ही आमजन तक योजनाओं के पर्याप्त प्रचार प्रसार हेतु आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत कार्ययोजना के अनुसार कार्यक्रमों को जनभागीदारी के साथ आयोजित किया जाए और जनप्रतिनिधियों की भी अधिकाधिक भागीदारी सुनिश्चित की जाए। जिले की रैंकिंग बेहतर बनाने के लिए भी प्रयास किए जाए। जिला कलक्टर ने कहा कि एनएफएसए में नाम जोडने का कार्य प्राथमिकता से लिया जाए और कोई भी पात्र वंचित न रहे। उन्होंने योग दिवस चर्चा करते हुए कहा कि अधिकाधिक लोगों को योग के लिए प्रेरित किया जाए और योग संगम पोर्टल पर अधिकाधिक रजिस्ट्रेशन करवाया जाना सुनिश्चित करें। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर ओमप्रकाश सहारण, जिला रसद अधिकारी शशि शेखर शर्मा, अधीक्षण अभियंता पीएचईडी रामनिवास यादव, एसई वाटरशेड हरिमोहन बैरवा, नगर परिषद आयुक्त नूर मोहम्मद सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी वीसी कक्ष में और उपखंड स्तरीय अधिकारी वीसी के माध्यम से उपस्थित रहे। जिला कलक्टर कल्पना अठावाल की

जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल की अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।

अध्यक्षता में साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन सोमवार को जिला कलेक्ट्रेट के वीसी कक्ष में किया गया। सम्पर्क पोर्टल के सभी प्रकरणों को नियमानुसार गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारित किया जाए। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत अभियान, पीएम विश्वकर्मा योजना सहित सरकार की फ्लेगशिप योजनाओं की बिंदुवार चर्चा करते हुए संबंधित अधिकारी को फ्लैगशिप योजनाओं पर विशेष रूप से फोकस करते हुए योजनाओं से सभी पात्रों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। उन्होंने योग दिवस चर्चा करते हुए कहा कि अधिकाधिक लोगों को योग के लिए प्रेरित किया जाए और योग संगम पोर्टल पर अधिकाधिक रजिस्ट्रेशन करवाया जाना सुनिश्चित करें। बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर ओमप्रकाश सहारण, जिला रसद अधिकारी शशि शेखर शर्मा, अधीक्षण अभियंता पीएचईडी रामनिवास यादव, एसई वाटरशेड हरिमोहन बैरवा, नगर परिषद आयुक्त नूर मोहम्मद सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

सार-समाचार

टैक्स चोरी के मामले में बस जब्त

भरतपुर (निस)। भरतपुर पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए फर्जी प्लेट और टैक्स चोरी के मामले में एक राजस्थान लोक परिवहन बस को जप्त कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई यातायात पुलिस द्वारा हीरा दास चौराहे पर की गई, जहां एक दौसा नंबर की बस को रोका गया और उसके चालक और मालिक से कागज मांगे गए। जांच में पता चला कि बस के मालिक और चालक ने करीब 36 हजार रुपये का टैक्स चोरी किया था और फर्जी नंबर प्लेट लगाकर बस चला रहे थे। इसके अलावा, बस का परमिट भी नहीं था। अटलबंद थाने पर तैनात एएसआई हरवीर सिंह ने बताया कि यातायात पुलिस के द्वारा हीरा दास चौराहे पर वाहनों की चेकिंग की जा रही थी.तभी एक दौसा नंबर की बस आकर रुकी. जब उसके चालक और मालिक से कागज मांगे तो उनके पास कागज नहीं थे.जब जांच की तो पता चला यह लोग एक साल करीब 36 हजार रुपए का टैक्स चोरी करने के साथ साथ फर्जी नंबर प्लेट लगाकर बस चला रहे है.इनके पास बस का परमिट भी नहीं था. यातायात पुलिस ने राजस्थान लोक परिवहन की बस और दोनों आरोपियों को अटलबंद थाने के सुपुर्द कर दिया.अटलबंद थाना पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर बस को जप्त किया है. बस के चालक की पहचान कुरवारिया निवासी इंदल सिंह और मालिक मोहित भरतपुर निवासी के रूप में हुई है ।

संकल्प से सिद्धि तक अभियान शुरु

निवाई। केंद्र सरकार के 11 वर्ष पूर्ण होने पर देशभर में भारतीय जनता पार्टी का संकल्प से सिद्धि तक अभियान का आयोजन किया जा रहा है। शहर मंडल के तत्वाधान में एक निजी धर्मशाला में अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विधायक रामसहाय वर्मा, नगरपालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी, शहर मंडल अध्यक्ष नितिन छाबड़ा व कार्यक्रम प्रभारी नीलिमा आमेरा द्वारा दी प्रज्जवलित करके किया गया। विधायक वर्मा ने कहा कि केंद्र सरकार की 11 वर्ष पूर्ण होने पर भारत में न सिर्फ नये कीर्तिमान स्थापित किए हैं। बल्कि गरीब, युवा, किसान और महिलाओं के जीवन में सार्थक परिवर्तन लाकर उन्हें सशक्त करने का कार्य भी किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश लगातार नई कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। केंद्र सरकार द्वारा आम जन के लिए जनकल्याणकारी नीतियों और ऐतिहासिक उपलब्धियां को जन-जन तक पहुंचने का कार्य प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता को करना चाहिए। पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी ने कहा कि कार्यकर्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों को आम जनता तक पहुंचाने का कार्य करें। कार्यक्रम प्रभारी नीलिमा आमेरा ने भी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया । इस अवसर पर महामंत्री प्रदीप पारीक, वरिष्ठ नेता रामप्रसाद शर्मा, जयनारायण कुमावत, मूरलीधर मीणा, किशन चौधरी, लक्ष्मण खटाना, जितेंद्र विजय, रामविलास बलाई, शंकरलाल पडियार व रामचरण पारीक सहित कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

बैठक आयोजित

शाहपुरा। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार सुरक्षा फाउण्डेशन भारत सरकार नई दिल्ली के तत्वाधान में मंगलवार को श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर पुलिस चोकी के पीछे, संजय स्मृति वन के सामने अलवर तिराया पर बेजुबान प्राणियों के साथ प्रशासन द्वारा की कार्रवाई के विरोध में विरूद्ध एक दिवसीय सांकेतिक बैठक आयोजित होगी। फाउंडेशन के वरिष्ठ कार्य वाहक प्रदेश अध्यक्ष राजस्थान संतोष कुमार सैनी ने बताया कि राष्ट्रीय राजमार्ग अलवर तिराया संजय स्मृति वन में पूर्व से रह रहे बन्दरो का पुनर्वास किये बिना प्रशासन द्वारा अमान्यवियता प्रदर्शित करते हुए बन्दरा का भोजन, पानी बन्द कर, अन्य जगह पर जाने को मजबूर किया। इसके के विरोध में फाउण्डेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गिरिराज प्रसाद गुप्ता के निर्देशानुसार मंगलवार को संजय वन अलवर तिराया पर प्रातः 9:15 बजे एक दिवसीय सांकेतिक मिटिंग आयोजित होगी जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष अपने विचार व्यक्त कर, उक्त प्रकरण के क्रम में अठिाम कार्य योजना तैयार करेंगे।

विमान दुर्घटना के मृतकों को श्रद्धांजलि

मनोहरपुर । कस्बे के गांधी चौक बाजार में नगर कांठोस कमेटी ने सोमवार को अहमदाबाद विमान व केदारनाथ में हेलीकॉप्टर दुर्घटना, पुणे में पुल, टोंक बनास नदी में जान गंवाने वाले लोगों को श्रद्धांजलि दी।इस दौरान मोमबत्ती जलाकर मौन रहकर दिवंगत आत्माओं के लिए प्रार्थना की। इस मौके पर ब्लॉक अध्यक्ष श्री नाथू लाल सैनी, नगर अध्यक्ष श्री अलाउद्दीन खान, पूर्व सरपंच अर्जुन मोहनपुरिया, ब्लॉक प्रवक्ता राकेश हलकारा, महेश जड़वाल, ओम प्रकाश बागड़ी, किशन भारती, खेमचंद असवल, बनवारी यादव, पंकज मिश्रा, शाहिद खान, अफसर खान एवं अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अंधड से नुकसान

निवाई। गांव बहकवा में तेज अंधड व आंधी से ग्रामीण क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ है। बहकवा मोड पर स्थित श्री बालाजी मीटर कास्ट के प्रबंधक महेंद्रसिंह सोलंकी ने बताया कि श्री बालाजी मीटर कास्ट कंपनी के ऊपर सोलर प्लांट के सोलर की कई प्लेटें लगी हुई थी। लेकिन तेज अंधड व आंधी से करीब 15-20 प्लेट उड़ कर नीचे गिर गई। जिससे बहुत नुकसान हुआ है। महेंद्रसिंह सोलंकी ने बताया तेज अंधड व आंधी से कई स्थानों पर पेड़ एवं विद्युत पोल गिरकर क्षतिग्रस्त हो गए। उन्होंने बताया कि तेज अंधड व आंधी से कोई जनहानि नहीं हुई है।

धर्मवीर चौधरी सम्मानित

निवाई । एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 में रजत पदक विजेता हवलदार धर्मवीर चौधरी का टोंक पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने सम्मानित करके उज्जवल भविश्य की कामना कर। उल्लेखनीय है कि हवलदार धर्मवीर चौधरी ने हाल ही में एशियन एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025 रजत पदक जीतकर नाम रोशन किया है। जिसको लेकर चौधरी का शहर सहित कई गांवों में स्वागत किया ।

समर कैम्प का समापन

टोंक। सीडीसी डांस एंड जुम्बा स्टूडियो टोंक, प्रेरणा ग्रुप ऑफ टोंक तथा भारत विकास परिषद टोंक के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित ग्रैंड समर कैम्प का समापन समारोहपूर्वक किया गया। कैम्प के निदेशक कोच चीनू पारीक ने बताया की पिछले एक महीने से बच्चों के लिए विभिन्न वर्कशॉप्स का आयोजन कैम्प के माध्यम से किया गया था। पारीक ने बताया की पिछले तीन साल से इस तरह का आयोजन करवा रहे हे, खुशी की बात यह हे की बच्चों और अभिभावको में इसके लिए इस बार अच्छा रुझान देखा गया । प्रेरणा ग्रुप ऑफ टोंक की संस्थापक एवं कैम्प की संयोजक रेखा जाजू ने बताया की इस बार कैम्प में एक सो से अधिक बच्चों ने इसका लाभ उठाया है, अभिभावक भी खुश है क्योंकि बच्चों का मोबाइल से कुछ समय के लिए ध्यान हटकर कुछ अलग क्रियात्मक गतिविधियों पर गया है और बच्चों ने इसका भरपूर आनंद उठाया हे। कैम्प के अंतिम दिन सीडीसी डांस एंड जुम्बा स्टूडियो टोंक की और से सभी बच्चों के साथ केक कटिंग करने के पश्चात सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

542 ग्राम अफीम बरामद

टोंक । जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में वृत्ताधिकारी मालपुरा आशीष प्रजापत व डिग्गी थानाधिकारी सत्यनारायण के नेतृत्व में गठित टीम ने अवैध मादक पदार्थ अफीम व गांजा के खिलाफ कार्यवाही करते हुये मुखबिर की सूचना पर डिग्गी कस्बा जाटों के मोहल्ले में स्थित आरोपी आरोपी गुलाब पुत्र रामचन्द्र जाति टांक उम्र 71 साल के मकान पर जाकर तलाशी ली तो मकान में 542 ग्राम अफीम व 16.876 किलोग्राम गांजा मिला, जिसे जब्त कर आरोपी गुलाब टांक को मौके पर गिरफ्तार कर एनडीपीएस एक्ट में प्रकरण दर्ज किया गया।

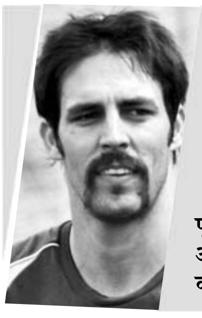

जोश हेजलवुड पिछले कुछ समय से फिटनेस की समस्याओं से जूझ रहे हैं लेकिन नेशनल टीम की जगह उन्होंने आईपीएल में लौटने का फैसला किया। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की तैयारियों पर ये बड़ा सवाल खड़ा करती है। - **मिशेल जॉनसन**

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर, दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया की हार का जिम्मेदार ठहराते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶

पारसा मंसूर

इजरायल और ईरान के बीच जंग गंभीर मोड़ पर पहुंच चुका है। दोनों तरफ से एक-दूसरे के खिलाफ हमले जारी है। वहीं राष्ट्रीय पैडल टीम के एक प्रमुख सदस्य पारसा मंसूर की मौत हो गई है। पारसा मंसूर की मौत उस वक्त हुई जब वह ट्रेनिंग के बाद घर लौट रहे थे और मिसाइल हमलों में वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे और बाद में उन्होंने दम तोड़ दिया। ईरानी टेनिस महासंघ और खेल समुदाय ने मंसूर की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया है अपने समर्पण और केल कौशल के लिए पहचाने जाने वाले मंसूर को खेल में उभरता सितार माना जाता था।

क्या आप जानते हैं ?... हेडिंग्ले क्रिकेट ग्राउंड पर भारत और इंग्लैंड के बीच कुल 7 टेस्ट खेले गए हैं, इनमें से टीम इंडिया ने 2 टेस्ट जीते हैं। 1996 और 2002 में भारत जीती थी।

विमेंस वनडे वर्ल्ड कप में 5 अक्टूबर को टकराएंगे भारत-पाकिस्तान

नई दिल्ली, 16 जून। श्रीलंका और भारत की मेजबानी में होने वाले महिला वनडे (वर्ल्ड कप 2025) 30 सितंबर से 2 नवंबर के बीच होगा। 8 टीमों के बीच टूर्नामेंट में कुल 31 मैच खेले जाएंगे, जिसके पूरे शेड्यूल की जानकारी सामने आई है। इस पूरे टूर्नामेंट में सबसे चर्चित मैच भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाला है।

विमेंस वनडे वर्ल्ड कप 2025 का पहला मैच मंगलवार, 30 सितंबर को बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेला जाएगा। इसमें मेजबान भारत और श्रीलंका आमने सामने होगी। हाइब्रिड मॉडल के तहत होने वाले इस आयोजन में पाकिस्तान क्रिकेट टीम अपने सभी मैच कोलंबो के आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेलेगी।वहीं भारत के साथ वर्ल्ड कप में ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, साउथ अफ्रीका और श्रीलंका शामिल हैं। इसके अलावा फॉर्मेट की बात करें तो राउंड-रॉबिन के बाद

नॉकआउट स्टेज में 2 सेमीफाइनल होंगे। वहीं भारत और पाकिस्तान के बीच महिला वर्ल्ड कप का ये मैच 5 अक्टूबर को श्रीलंका के कोलंबो स्थिति आर प्रेमदासा स्टेडियम में खेला जाएगा। गौरतलब है कि, ऑस्ट्रेलिया 7 बार महिला वनडे वर्ल्ड कप की विजेता बन चुकी है, वहीं इंग्लैंड ने चार बार और न्यूजीलैंड एक बार चैंपियन बनी है। भारतीय टीम कभी महिला वनडे वर्ल्ड कप नहीं जीत सकी है, लेकिन 2 बार उपविजेता जरूर बनी है।

वर्ल्ड कप में भारतीय टीम का शेड्यूल

30 सितंबर - भारत और श्रीलंका - बेंगलुरु-3 बजे
5 अक्टूबर - भारत और पाकिस्तान - कोलंबो, 3 बजे
9 अक्टूबर - भारत और द. अफ्रीका - विजाग- 3 बजे
12 अक्टूबर - भारत और ऑस्ट्रेलिया - विजाग 3 बजे
19 अक्टूबर - भारत और बांग्लादेश - इंदौर-3 बजे
23 अक्टूबर - भारत और न्यूजीलैंड - गुवाहाटी-3 बजे
26 अक्टूबर - भारत और इंग्लैंड - बेंगलुरु-3 बजे

भारतीय टीम के साथ आज फिर से जड़ेंगे गौतम गंभीर

लंदन, 16 जून। भारत बनाम इंग्लैंड के बीच शुक्रवार को शुरु होने वाले टेस्ट मैच से पहले भारतीय टीम के प्रमुख कोच गौतम गंभीर कल फिर से दल के साथ जुड़ जाएंगे।

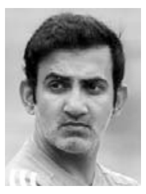

गौतम गंभीर अस्पताल में भर्ती मां के बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण 11 जून को इंग्लैंड से दिल्ली लौट आए थे। गंभीर की अनुपस्थिति में रायन टेन डेशकाटे, सहायक कोच सितांशु कोटक और गेंदबाजी कोच मॉर्नी मोर्कल ने टीम की तैयारी की निगरानी की। इंडिया ए के कोच ऋषिकेश कानितकर भी उनके साथ थे। ऐसा माना जा रहा है कि गंभीर की मां के स्वास्थ्य में अब सुधार है और वह मंगलवार को भारतीय टीम के साथ जुड़ जायेंगे। पहले टेस्ट को देखते हुए गंभीर को टीम प्रबंधन के साथ मिलकर कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने होंगे। जसप्रीत बुमराह को पांच टेस्ट में से तीन टेस्ट खेलने है। लेकिन यह स्पष्ट नहीं हुआ है कि वह कौन से तीन मैचों में खेलेंगे। इसके अलावा साई सुदर्शन और वापसी कर रहे करुण नायर के हालिया प्रदर्शन को देखते हुए विकल्पों पर विचार करना होगा।ध्रुव जुरेल और अभिमन्यु ईश्वरन भी अच्छी फॉर्म में हैं। नीतीश कुमार रेड्डी और शार्दुल ठाकुर के बीच भी चयन को लेकर भी फैसला लेना होगा।

चौगान स्टेडियम में ग्रीष्मकालीन क्रीड़ा प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन

जयपुर, 16 जून। ग्रीष्म कालीन क्रीडा प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि स्वामी बाल मुकुंद आचार्य विधायक हवा महल विधानसभा क्षेत्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ में खेल अधिकारी

मानसिंह द्वारा 16 जून से 30 जून तक आयोजित होने वाले प्रशिक्षण शिविर के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि कैंप के माध्यम से सभी खेलों के प्रतिभावान खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। कैंप के समापन समारोह में चयनित प्रतिभावान खिलाड़ियों को पुरस्कार दिया जाएगा। खेल अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि बालमुकुंद आचार्य का माल्यार्पण कर स्वागत किया गय। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सुरेश गुर्जर (जिला महामंत्री भा.ज.पा.), कैलाश महावर (पूर्व पार्षद), राजेंद्र पारीक एवं कई अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी उपस्थित हुए। सभी अतिथियों का खेल प्रशिक्षकों द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि द्वारा खिलाड़ियों को खेलों के महत्व के बारे में बताया गया एवं सरकारी योजनाओं का खिलाड़ियों के को अधिक से अधिक कैसे फायदा मिले उसके बारे में समझाया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि स्वामी बालमुकुंद आचार्य द्वारा ग्रीष्मकालीन क्रीडा प्रशिक्षण शिविर प्रतिभा खोज का विधिवत उद्घाटन की घोषणा की गई।

क्रिकेटर अंडर-23 टूर्नामेंट हेतु ट्रायल 18 जून से

जयपुर/दौसा, 16 जून। जिला क्रिकेट संघ दौसा के सचिव बृजकिशोर उपाध्याय ने बताया गया कि राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा अंडर -23 टूर्नामेंट 1 जुलाई से होना प्रस्तावित है । जिसके लिए जिला क्रिकेट संघ दौसा द्वारा 18 जून प्रातः 8 बजे से राजेश पायलट राजकीय स्टेडियम में ट्रायल रखी गई है । चयन ट्रायल में आने वाले खिलाड़ियों की आयु 1/9/2002 के बाद की होना आवश्यक है। सभी खिलाड़ियों को अपने मूल दस्तावेज लाना अनिवार्य है। पिछले 3 साल की मार्कशीट, कंप्यूटराइज बोनाफाइड सर्टिफिकेट ,जन्म प्रमाण पत्र ,आधार कार्ड स्वयं और माता पिता का साथ ही सभी दस्तावेज डिजिटल लाना अनिवार्य है । सचिव उपाध्याय ने बताया कि जिले की टीम का परिणाम आशनुरूप नहीं आ रहा है। हमने जिले के खिलाड़ियों को खूब मौके दिए है परन्तु खिलाड़ी अच्छा परिणाम नहीं दे पाये है इसलिए टीम में इस बार से प्रोफेशनल खिलाड़ी भी लिए जायेंगे । दौसा की टीम को मजबूत बनाने हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे है। टीम में चयन को पारदर्शी बनाने हेतु जिले से बाहर के कोच से ट्रायल में सिलेक्शन किया जाएगा। ट्रायल के बाद खिलाड़ियों को शॉर्ट लिस्ट कर ,जिस फॉर्मेट में टूर्नामेंट होगा उसी फॉर्मेट के हिसाब से खिलाड़ियों की टीम बनाकर अधिक से अधिक मैच कराए जाएंगे। उन मैच की परफॉर्मेंस के हिसाब से चयन समिति द्वारा जिले की टीम घोषित की जाएगी।

इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में यशस्वी के पास इतिहास रचने का मौका

लंदन, 16 जून। 20 जून से शुरू हो रहे पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में इंग्लैंड के खिलाफ भारतीय युवा खिलाड़ीयशस्वी जायसवाल इतिहास रच सकते हैं। दरअसल, यशस्वी रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराने और वीरेंद्र सहवाग और राहुल द्रविड़ जैसे दिग्गजों को पीछे छोड़ने के कगार पर हैं। टेस्ट क्रिकेट में 2023 में डेब्यू के बाद से ही ये युवा खिलाड़ी ने अपनी छाप छोड़ी है।

उन्हें पहले से ही दुनिया के बेहतरीन युवा खिलाड़ियों में गिना जाता है। बाएं हाथ का ये बल्लेबाज रिकॉर्ड बुक में अपना नाम और दर्ज करा सकता है। उसके पास टेस्ट में सबसे तेज 2000 रन बनाने वाले भारतीय बनने का सुनहरा मौका है। यशस्वी जायसवाल ने फिलहा 19 मैच की 36 पारियों में 52.88 के औसत से 1789 रन बनाए हैं। इसमें उनके नाम चार शतक और दस अर्द्धशतक हैं। अगर वह अगली तीन पारियों में 2000 रन का आंकड़ा पूरा करने में सफल हो जाते हैं तो वह टेस्ट में भारत के लिए सबसे तेज 2000 रन बनाने के मामले में राहुल द्रविड़ और वीरेंद्र सहवाग को पछाड़ सकते हैं।

बुमराह-सिराज और जडेजा रच सकते हैं इतिहास

लंदन, 16 जून। स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा और विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत शामिल हैं।वहीं इंग्लैंड के खिलाफ पहले ही टेस्ट में भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज और रविंद्र जडेजा के पास लीड्स में इतिहास रचने का मौका है। संयोग से ये तीनों ही यहां एक-एक मैच खेले हैं और तीनों ने ही दो-दो विकेट अपने नाम किए हैं। अगर इन तीनों में से जो भी 20 जून से खेले जाने वाले टेस्ट में 6 विकेट लेने में सफल हो जाते हैं तो वह भारत के लिए लीड्स में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाला गेंदबाज बन जाएगा।

73 साल का महारिकॉर्ड पर निगाहें

लीड्स में 73 साल पहले भारतीय गेंदबाज गुलाम अहमद ने बनाया था। उन्होंने 1952 में खेले गए एक ही मैच में सात विकेट चटकाए थे। इसके बाद रोजर बिन्नी ने 1996 में सात विकेट अपने नाम कर गुलाम अहमद के रिकॉर्ड की बराबरी की। इसके बाद 2002 में अनिल कुंबले सात विकेट चटकाते हुए भारत को आखिरी बार यहां जिताया। इस तरह रोजर बिन्नी और अनिल कुंबले ने गुलाम अहमद के रिकॉर्ड की बराबरी तो की लेकिन उनसे आगे नहीं निकल पाए।

राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड क्वार्टर फाइनल मैच

श्रीगंगानगर के सुमित गोदारा का शानदार दोहरा शतक

जयपुर, 16 जून।आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य विमल शर्माने बताया कि बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 की पूर्व तैयारियों की लिए आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीपबिहाणी के निर्देशानुसार राजस्थान क्रिकेट संघ द्वारा बीसीसीआई सीनियर रणजी ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेने वाली राजस्थान सीनियर टीम के संभावितों के चयन हेतु आरसीए के तत्वाधान में खेली जा रही राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड क्रिकेट प्रतियोगिता के एक दिवसीय लीग मैचों के सफल आयोजन के बाद आज से जयपुर में प्रतियोगिता के 2 दिवसीय क्वाटर फाइनल मैच शुरू हुए।

श्रीगंगानगर के सुमित गोदारा ने शानदार दोहरा शतक जमाया। आज शिवा चौहान, शोभित मिश्रा, राम मोहन, मनीष टांक, दिव्य प्रताप राजपुरोहित, मुकुल चौधरी के अर्धशतक।मनीष कुमार, दानिश भाम्भू, तनवीर की बढ़िया गेंदबाजीरही।

के एल सैनी स्टेडियम पर केक काटकर बनाया आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक जयदीप बिहाणी का जन्मदिन एडहॉक कमेटी सदस्य विमल शर्मा ने बताया कि आज

आरसीएएडहॉक कमेटी संयोजक व श्रीगंगानगर विधायक जयदीप बिहाणी के 60वे जन्मदिन के अवसर पर के एल सैनी स्टेडियम परआरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य विमल शर्मा, श्रीगंगानगर जिला क्रिकेट संघ सचिव विनोद सहारण, नागौर जिला क्रिकेट संघ सचिव राजेंद्र नांधू, टोंक जिला क्रिकेट संघ सचिव विवेक व्यास, डूंगरपुर जिला क्रिकेट संघ सचिव सुशील जैन, बूंदी जिला क्रिकेट संघ सचिव राजकुमार माथुर, आरसीए स्टाफ व राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड का क्वाटर फाइनल मैच खेल रही टीमों के सदस्यव मैच ऑफिशियल मौजूद थे।विमल के अनुसार जयदीप बिहाणी के जन्मदिन का केक आज के मैच में शानदार दोहरा शतक लगाने वाले श्रीगंगानगर के खिलाडी सुमित गोदारा ने काटा।

अजीज वेस्ट जोन के तीसरे नंबर व राष्ट्रीय खिलाड़ी महेंद्र ठाकुर को 2-0 से हराकर क्वार्टर फाइनल में

जयपुर, 16 जून। स्वर्गीय देवकी ठाकुर स्मृति जयपुर जिला ओपन रैंकिंग कैरम प्रतियोगिता के तीसरे दिन, चौगान स्टेडियम पर खेली जा रही इस प्रतियोगिता के पुरुषों के एकल मुकाबले में आशिक़ (साबिर क्लब) ने बिलाल (सईद) को, बॉबी (अली क्लब) ने नाज़िम को , प्रदीप ठाकुर ने दूसरे राउंड में अंकित शर्मा को , हिलाल ने आकिब को 2 -0 से, रमजान ने मोईन को, महेंद्र ठाकुर ने आयुष को 2 - 0 से, तनवीर ने हिशाम को 2 -0 से, जुनैद ने मेहराज को 2 -0 से हराया। एक शानदार हुए मैच में अज़ीज़ ने वेस्ट जोन के तीसरे नंबर व् राष्ट्रीय खिलाडी महेंद्र ठाकुर को 2 - 0 से हरा कर सभी क्वार्टर फाइनल में पहुंचे । महा सचिव जय प्रकाश ठाकुर ने बताया की सेमि फाइनल व् अन्य सभी कल प्रातः 9:30 से शुरू होकर 4 बजे तक ख़तम होकर, पुरुस्कार वितरण शाम 5 :30 होगा जिसमे मुख्य अतिथि भाजपा पूर्व कैबिनेट मंत्री व् लीडर राजेंद्र सिंह राठौर होंगे। अध्यक्ष पूर्व आईएएस अजय सिंह चित्तौरा, भाजपा पूर्व अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी व् जयपुर सांसद मंजू शर्मा होंगी।

आर.डी. बाहेती जिला बैडमिंटन में पदमजा ने चार, गरिमा व रक्षित ने 3-3 खिताब जीते

जयपुर, 16 जून। आर डी बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर जिला ओपन बैडमिंटन चैंपियनशिप में जिला बैडमिंटन में पद्मजा सिंह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए चार खिताब जीते, वहीं रक्षित सिंह मेहरा व गरिमा यादव ने तीन-तीन खिताब जीते। इनके अलावा भानु प्रताप जाटोलिया,अद्विका अग्रवाल, जयवर्धन सिंह, अन्वी राठौर, श्रेयांश चौधरी, अंश कटारा ने भी दो-दो खिताब जीते।

आज पांच फाइनल खेले गए जिसमें बॉयज सिंगल्स अंडर 11 फाइनल में रक्षित सिंह मेहरा ने नैतिक बंसल को 21- 9, 21 -14 हराया। बॉयज सिंगल्स अंडर 13 फाइनल में रक्षित सिंह नेहरा ने लक्ष्यराज सिंह नाथावत को 21 -10, 21 -10 से हराया। तीसरा फाइनल बायस सिंगल्स अंदर-19 में भानु प्रताप जाटोलिया ने 21-9 ,21-17 अम्बर चंद्रवंशी को हराया। बॉयज 13 डबल्स

में रक्षित सिंह नेहरा और लक्ष्यराज सिंह की जोड़ी ने और प्रणव- अनीश चाहर की जोड़ी को 21 -12 ,21- 19 से हराया।

बॉयज डबल अंडर-19 के फाइनल में प्रांजल कौशिक व अंबर चंद्रवंशी की जोड़ी ने भानु प्रताप व विशाल चौधरी की जोड़ी को लंबे कड़े संघर्ष के बाद 20-22 ,20- 21, 21-17 से 55 मिनट के कडे संघर्ष में परास्त किया। जिला सचिव मनोज दासोत के अनुसार पारितोषित वितरण मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक में पूर्व चिकित्सा मंत्री कालीचरण सराफ तथा विशिष्ट अतिथि आरडी बाहेती, प्रदीप बाहेती, रिटायर्ड चीफ जस्टिस एन के जैन, यश समिति के अध्यक्ष आशीष सराफ तथा एडिशनल एसपी पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ ने परितोषित वितरण किया इस मौके पर कालीचरण सराफ ने सभी खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया तथा खिलाड़ियों की खेल भावना की तारीफ की। वहीं प्रदीप बाहेती ने खिलाडियों की खेल भावना की तारीफ की।

आयोजन सचिव अतुल गुप्ता ने सभी को यह शानदार आयोजन के लिए बधाई दी। इस मौके पर बैडमिंटन से जुड़े अभय पुरोहित ,मधु कांत मोदी बीजेपी नेता ब्रहम कुमार सैनी, नटवर कुमावत, ललित भारद्वाज, राजपाल यादव, राजीव नागोरी, पराग लश्करी, डॉक्टर करण दीप सिंह आदि उपस्थित रहे।

34वीं सीनियर राष्ट्रीय वुशू प्रतियोगिता में आज राजस्थान के लिए मनोज एवं आनंद ने जीता कांस्य पदक

जयपुर,16 जून। भारतीय वुशू संघ व राजस्थान वुशू संघ के तत्वावधान मे दिनांक 14 से 19 जून तक पूर्णिमा यूनिवर्सिटी मे आयोजित हो रही 34वीं सीनियर राष्ट्रीय (पुरुष/महिला) वुशु प्रतियोगित के तीसरे दिन राजस्थान के लिए मनोज चित्तौडिया ने जिंगि क्वान एवं आनंद सैनी ने नन्क्वान में कांस्य पदक जीते। तीसरे दिन के समारोह के मुख्य अतिथि राहुल सिंघी, कॉफांउडर पूर्णिमा यूनिवर्सिटी, व विशिष्ठ अतिथि भागवान सहाय, जाटवा, ज्वाईंट डायरेक्टर, कृषि मंडी, जीतु शर्मा, निदेशक रामेश्वरम पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल, दीपक चौधरी निदेशक, सैंट विलियम्स सीनियर सैकण्डरी स्कूल, जयदेव मीणा, पार्षद नगर पालिका बगरू, रमेशा सिंह शर्मा, पार्षद, हनुमानराय चौधरी, डेयरी डायरेक्टर, रामनारायण थौरी, सरपंच रहे। हीरानंद कटारिया अध्यक्ष, राजस्थान वूशु संघ ने सभी अतिथियों का साफा पहनाकर व बूके, स्मृति चिन्ह भेट कर स्वागत अभिनन्दन किया।

21 दिवसीय केन्द्रीय आवासीय खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का समापन आज

डॉ. नीरज के. पवन, शासन सचिव युवा मामले एवं खेल विभाग व खेल परिषद अध्यक्ष होंगे मुख्य अतिथि

जयपुर, 16 जून। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद द्वारा जयपुर में आयोजित 21 दिवसीय केन्द्रीय आवासीय खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का मंगलवार को प्रातः 10 बजे सवाई मानसिंह स्टेडियम के इंडोर हॉल में समापन होगा। डॉ. नीरज के पवन, शासन सचिव युवा मामले एवं खेल विभाग व खेल परिषद अध्यक्ष समापन समारोह के मुख्य अतिथि होगें। खेल परिषद अध्यक्ष के अलावा समारोह की अध्यक्षता खेल परिषद के वित्तीय सलाहकार महावीर मीणा और विशिष्ठ अतिथि मुख्य शिविर निदेशक व मुख्य खेल अधिकारी वीरेन्द्र पूनिया होंगे।

21 दिवसीय शिविर 28 मई से आयोजित किया गया था, जिसका समापन मंगलवार को प्रातः होगा। शिविर में प्रदेशभर के खिलाडियों ने 21 दिन तक गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होने बताया कि प्रतिवर्ष मांउट आबू के अलावा जयपुर में केन्द्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान किया जाता है।

मुख्य खेल अधिकारी व मुख्य शिविर निदेशक वीरेन्द्र पूनिया ने बताया कि शिविर में 14 खेलों के बालक/बालिका खिलाडियों को गहन प्रशिक्षण दिया गया। परिषद के वरिष्ठ प्रशिक्षको द्वारा प्रातः काल व सायं काल खेल की बारिकियों व फिटनेस आदि के बारे में बताया गया। शिविर निदेशक व खेल प्रबन्धक रणविजय सिंह चाम्पावत ने बताया कि शिविर में 160 बालक व 135 बालिकाओं सहित कुल 295 खिलाडियों ने भाग लिया। खिलाडियों को शिविर में निःशुल्क आवास, भोजन और प्रशिक्षण मुहैया करवाई गई।

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- जो.वि.प्रा./जोधपुर/जोन पूर्व/RAJKAJ/15906751 दिनांक :- 13/06/2025

खुली निविदा सूचना संख्या :- पूर्व/02-03/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदार से सिविल कार्य हेतु मुहरबंद एवं निविदाएं बंद लिफाफे में आमंत्रित की जाती हैं। इन कार्यों की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्तें आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट www.jodhpurjda.org एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

NIB Code : JOD2526A0045, 49

UBN No. : JOD2526WSOB00112, 00116, 00117

राज.संवाद/सी/25/4326 अधिशाषी अभियंता

कार्यालय नगर परिषद बारां

E-Mail : nagarpalikabaran@gmail.com स्टेशन रोड, बारां (राज0) Phone : 07453-230106

क्रमांक :— नपबा / सफाई / 2025 / 1730 दिनांक :— 13.06.2025

निविदा सूचना संख्या : 10/2025-26

नगर परिषद बारां द्वारा वित्तिय वर्ष 2025-26 हेतु इस कार्यालय आवारा पशुओं को पकड़कर सरकारी अनुदान प्राप्त गौशाला एवं अन्य निर्जन स्थान जहॉ पर पर्याप्त चारा पानी उपलब्ध हो, उस स्थान पर छोडने का कार्य (श्रमिक सहित समस्त संसाधन) के लिए कार्य हेतु ऑनलाईन आमंत्रित की जाती है। इच्छुक संवेदक/फर्म निविदा से संबंधित नियम एवं शर्ते पोर्टल www.sppp.rajasthan.gov.in पर भी देख सकते है।

UBN No. DLB2526SSOB07871

आयुक्त नगर परिषद बारां

राज.संवाद / सी / 25 / 4368

कार्यालय नगरपालिका रामगंजमण्डी जिला-कोटा (राज0)

क्रमांक : न.पा.रा. / 2025 / 519 दिनांक 12.06.2025

ई-निविदा सूचना 03/2025-26

नगरपालिका रामगंजमंडी द्वारा कार्यो हेतु पालिका में पंजीकृत एवं विभागों में AA,A,B, Class एवं उपयुक्त श्रेणी संवेदको से लिफाफा पद्धति/ई-निविदा पद्धति से ऑनलाइन निविदा आमंत्रित की जाती है। कार्य की निविदा बेचे जाने की दिनांक 16.06.2025 से 29.06.2025 एवं अपलोड करने की दिनांक 16.06.2025 से 29.06.2025 सांय 6 बजे तक। ई.एम.डी./ निविदा शुल्क/प्रोसेसिंग फीस प्राप्त करने की तिथि : 30.06.2025 समय प्रातः 11.00 बजे तक। तकनीकी बिड खोलने कि दिनांक 30.06.2025 को दोप. 2.00 बजे बाद रहेगी। वित्तीय बिड तकनीकी परीक्षण उपरांत खोली जावेगी। निविदा शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण http//sppp.raj.nic.in, http//eproc.rajasthan.gov.in देखी जा सकती है।

SR.NO	NIB	UBN
1	DLB-2526A2466	DLB2526WSOB07786

अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका रामगंजमण्डी

राज.संवाद / सी / 25 / 4334

DR. BHIMRAO AMBEDKAR LAW UNIVERSITY

(A State Funded University of Rajasthan) Plot No. 08, Dehmi Kalan, JDA Institutional Scheme, Bagru, Tehsil- Sanganer, Distt- Jaipur-303007 (Rajasthan)

F.No. F4(24)Exam/ALU/2025-26/1001 Date :- 13/06/2025

NOTICE INVITING E-BID

डॉ भीमराव अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा परीक्षाओं व अन्य कार्यों हेतु विनिर्दिष्ट निविदादाताओं से खुली ई-निविदा "Hiring of Vehicles category wise on Annual Rate Contract on demand basis" दिनांक 27.06.2025 को अपरान्ह 02.30 बजे तक आमंत्रित की जाती है। विस्तृत निविदा सूचना एवं शर्तें, अनुमानित लागत, बिड प्राप्त करने एवं भरी हुई बिड प्रस्तुत करने की दिनांक, बिड शर्तें आदि का सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट http://www.sppp.rajasthan.gov.in, http://www.eproc.rajasthan.gov.in एवं विश्वविद्यालय की वेबसाईट http://www.alujaipur.ac.in पर देखी जा सकती है।

UBN : ALU2526SLRC00004

कुलसचिव डॉ. भीमराव अम्बेडकर विधि विश्वविद्यालय

राज.संवाद/सी/25/4352

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय

जोबनेर 303329, जिला जयपुर (राजस्थान) फोन नं. 01425-254988(का.) e-mail Id : comptroller@sknau.ac.in

क्रमांक :- एफ.03( )वि.नि./कोष./श्रीकनकृविवि/2025/ दिनांक :-

Proposal for Annual Rate Contract are invited up to 11.00 A.M. of 03.07.2025 for rate contract for purchase of glassware, plastic ware and other lab consumables. The details are available in the Bidding Documents which can be availed from the office of The Comptroller, Sri Karan Narendra Agriculture University, Jobner- 303 329 or can be accessed or downloaded from State Procurement Portal website "sppp.rajasthan.gov.in" or "https://eproc.rajasthan.gov.in" or website "www.sknau.ac.in". The bidding document after filling up properly can be uploaded on website "https://eproc.rajasthan.gov.in" along with payment of Rs. 2000/- through banker's cheque/demand draft in favour of The Comptroller, Sri Karan Narendra Agriculture University, Jobner-303329.

UBN is : SKN2526GLOB00100

Raj.Samwad/C/25/4318 Comptroller

कार्यालय नगरपालिका मण्डल, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)

नेशनल हाईवे नम्बर- 11, श्रीडूंगरगढ जिला- बीकानेर

Tel. : 01565-224766 E-mail id : nagarpalikadungargarh0@gmail.com

क्रमांक :-न.पा.श्रीडूं/ 1120 दिनांक :-13.06.2025

निविदा सूचना

नगरपालिका मंडल श्रीडूंगरगढ़ के द्वारा विभिन्न कार्यों के लिए पंजीकृत संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा की शर्तें व अन्य विवरण वेबसाइड sppp.rajasthan.gov.in व WWW.etenders.gov.in पर कर दिया गया हैं। जिसके युबीएन नम्बर निम्नानुसार है :-

क्रं.सं.	UBN NO
1.	DLB2526GSOB07776
2.	DLB2526GSOB07778
3.	DLB2526GSOB07785
4.	DLB2526GSOB07782

अध्यक्ष नगरपालिका श्रीडूंगरगढ अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका श्रीडूंगरगढ

राज.संवाद / सी / 25 / 4355

जयपुर विकास प्राधिकरण

इन्दिरा सर्किल, जवाहर लाल नेहरु मार्ग, जयपुर-302004

क्रमांक : जविप्रा / व.उ.वि. / 2025-26 / 09-14 दिनांकः 13.06.2025

पूर्णकालीन बिड सूचना सं.-जविप्रा/व.उ.वि./2025-26/09-14

आयुक्त, जयपुर विकास प्राधिकरण की ओर से प्राधिकरण के उद्यानिकी प्रवर्ग की उचित श्रेणी में पंजीकृत बोलीदाताओं एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के सभी विभागों में 'अअ' व 'अ' श्रेणी में पंजीकृत बोलीदाताओं से ई-विड (E-Procurement) निम्न विवरणानुसार आमन्त्रित की जाती है:-

S. N.	NIB No.	Name of Work	Tender Amount (In lakh)	Sale/Download Date and End Date	Open Date	Job No
1	09	Development and maintenance of Mahima Panash Road Airport road to maharana Pratap circle for 2 year in H. zone-I UBN No.: JDA2526WSOB00231	108.64	14.06.25 23.06.25	26.06.25	114/2025-26
2	10	Development and Maintenance of Median and Greenbelt Bharat mata circle to Narayan vihar, (Narayan vihar 200 ft road) and Narayan vihar 200 ft road to Narayan sagar A Block for 2 year in H. zone-I UBN No.: JDA2526WSOB00232	91.69	14.06.25 23.06.25	26.06.25	123/2025-26
3	11	Development and maintenance of Mahal Road to Housing Board (Rana Sanga Marg JDA area) and Abkari Thana to NRI Road for 2 year in H. zone-I UBN No.: JDA2526WSOB00234	86.68	14.06.25 23.06.25	26.06.25	121/2025-26
4	12	Development and Maintenance of H T Line Greenbelt Narayan vihar 200 ft road to vande matram road for 2 year in H. zone-II UBN No.: JDA2526WSOB00235	104.18	14.06.25 23.06.25	26.06.25	125/2025-26
5	13	Maintenance of Median and Greenbelt of Airport Road mahal road to cheelgadi restaurent for 2 year in H. zone-I UBN No.: JDA2526WSOB00236	86.67	14.06.25 23.06.25	26.06.25	124/2025-26
6	14	Development and Maintenance of Median and Greenbelt of Prbhu Dayal marg sanganer flyover to hotel runway for 2 year in H. zone-I UBN No.: JDA2526WSOB00237	63.14	14.06.25 23.06.25	26.06.25	122/2025-26

नोट :-
1. बिड को बिना कारण बताये निरस्त किया जा सकता है।
2. बिड E-Procurement के जरिए प्राप्त की जायेगी। बोलीदाता द्वारा पंजीयन प्रमाण-पत्र की प्रति प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है।
3. बिड से सम्बन्धित शर्ते वेबसाईट www.jda.rajasthan.gov.in, http:/eproc.rajasthan.gov.in, sppp.rajasthan.gov.in पर अथवा वरिष्ठ उद्यानविज्ञ के कार्यालय (कमरा नं. NB SF-204) में देखी जा सकती है।

राज.संवाद/सी/25/4353 वरिष्ठ उद्यानविज्ञ

'प्रवासी राजस्थानी सम्मेलन 10 दिसम्बर को आयोजित होगा

मुख्यमंत्री भजनलाल ने सम्मेलन की कार्ययोजना तैयार करने के लिए बैठक ली

जयपुर, 16 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थानियों ने अपने सामर्थ्य की बदौलत विश्वभर में प्रदेश का मान बढ़ाया है। उन्होंने अपनी कर्मभूमि पर काम करते हुए मातृभूमि पर सामाजिक सरोकारों के कार्यों में पूर्ण रूप से समर्पित होकर कार्य किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रवासी राजस्थानियों के योगदान के सम्मान में राज्य सरकार आगामी 10 दिसम्बर को प्रवासी राजस्थानी सम्मेलन का आयोजन करने जा रही है।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर प्रवासी राजस्थानी सम्मेलन-2025 की कार्ययोजना के संबंध में आयोजित बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रवासी राजस्थानियों की सहूलियत और उनके मुद्दों के लिए राज्य सरकार एक नए विभाग का गठन करने जा रही है। साथ ही, सभी जिलों में अतिरिक्त जिला कलक्टर को प्रवासी राजस्थानियों से संबंधित मुद्दों के समाधान के लिए नोडल अधिकारी बनाने के संबंध में आदेश एवं गाइडलाइन भी जारी हो चुकी है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को प्रवासी राजस्थानी सम्मेलन-2025 की कार्ययोजना के संबंध में आयोजित बैठक को संबोधित किया। उन्होंने 10 दिसम्बर को होने वाले इस आयोजन को सफल बनाने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिये।

> ■ **मुख्यमंत्री भजनलाल ने राजस्थान फाउन्डेशन के 14 नये चैप्टर्स की कार्यकारिणी का गठन कर सक्रिय लोगों को जोड़ने के निर्देश दिए। उन्होंने यह भी कहा कि फाउन्डेशन अपने विभिन्न चैप्टर्स की बैठक आयोजित कर नियमित संवाद करे।**

शर्मा ने कहा कि "आपणो अग्रणी राजस्थान" के लक्ष्य की प्राप्ति के क्रम में, प्रदेश में निवेश बढ़ाने के लिए प्रवासी राजस्थानियों का सहयोग लिया जाए। अधिकारी, प्रवासी राजस्थानियों से नियमित संपर्क करें और उन्हें प्रदेश में निवेश के लिए प्रोत्साहित करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान फाउंडेशन के 14 नए चैप्टर्स के मनोनीत अध्यक्ष कार्यकारिणी के गठन की प्रक्रिया शीघ्र प्रारंभ कर सक्रिय लोगों को जोड़ें। फाउंडेशन अपने विभिन्न चैप्टर्स की बैठक आयोजित कर निरंतर संवाद भी करे। बैठक में संबंधित विभागों के उच्च अधिकारीगण उपस्थित थे।

हाँगकाँग से दिल्ली आ रहे ड्रीम लाइनर विमान में तकनीकी खराबी

नयी दिल्ली, 16 जून। अहमदाबाद लंदन एयर इंडिया विमान हादसे के चार दिन बाद हांगकांग से दिल्ली आ रहे एयर इंडिया के एक और बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर विमान में उड़ान भरने के चंद मिनट बाद तकनीकी समस्या का पता लगने पर उसे वापस हांगकांग लौटना पड़ा।

सूत्रों के अनुसार हांगकांग से दिल्ली आने वाली एयर इंडिया की उड़ान एआई315 बीती रात 11 बज कर 59 मिनट पर हांगकांग से रवाना हुई थी। रिकार्ड के अनुसार यह उड़ान तीन घंटे नौ मिनट के विलंब से रवाना हुई थी। उड़ान भरने के बाद पायलट को हवा में ही तकनीकी समस्या का संदेह हुआ। इस पर पायलट ने विमान को समुद्र के ऊपर कुछ देर उड़ाया और जब दिक्कत दूर नहीं हुई तो वापस लौटने का फैसला किया।

> ■ **लगभग एक घंटे की उड़ान के बाद एयर इंडिया के इस विमान को पुन हाँगकाँग लौटाया गया, जहां उसकी जांच की जा रही है।**

इसके बाद विमान करीब एक घंटे 19 मिनट बाद अपने मूल स्थान यानी हांगकांग हवाई अड्डे पर वापस लौट आया। विमान स्थानीय समयानुसार एक बज कर 18 मिनट पर हांगकांग हवाई अड्डे पर उतरा। जहां उसकी गहन तकनीकी जांच की जा रही है।

जज की पोस्ट के लिए तीन साल लॉ प्रैक्टिस की अनिवार्यता के खिलाफ याचिका दर्ज

याचिका दायरकर्ता ने इस अनिवार्यता को अनुच्छेद 14 व 16 के तहत मूल अधिकारों का हनन बताया

नयी दिल्ली, 16 जून। सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के लिए तीन साल की वकालत अनिवार्य करने के उच्चतम न्यायालय के फैसले के खिलाफ समीक्षा याचिका दायर की गई है।

न्यायिक सेवा के इच्छुक याचिकाकर्ता अधिवक्ता चंद्रसेन यादव शीर्ष अदालत के 20 मई, 2025 के उस फैसले की समीक्षा की मांग की है, जिसमें सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के पद के लिए परीक्षा में बैठने के वास्ते बार में कम से कम तीन साल की प्रैक्टिस अनिवार्य की गई है।

शीर्ष अदालत ने अपने फैसले में देश के सभी उच्च न्यायालयों और राज्य सरकारों को संबंधित सेवा नियमों में संशोधन करने का निर्देश दिया था, जिसके तहत सिविल जज (जूनियर डिवीजन) के रूप में न्यायिक सेवाओं में शामिल होने इच्छुक अभ्यार्थियों को अब अधिवक्ता के रूप में तीन साल का अनुभव अनिवार्य करने का प्रावधान करने को कहा था।

समीक्षा याचिका में यादव ने तर्क दिया कि बार में तीन साल की प्रैक्टिस अनिवार्य करने की मनमानी और अनुचित शर्त लगाने के कारण संविधान के अनुच्छेद 14 और 16 के तहत उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन हुआ है।

उन्होंने दलील दी कि न्यायाधीश पद पर नियुक्ति आवेदक के लिए नए प्रावधान के कारण उनके समान अवसर और सार्वजनिक रोजगार तक उचित पहुंच के अधिकार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

> ■ **अधिवक्ता चंद्रसेन यादव ने याचिका दायर की और यह भी कहा कि तीन साल की अनिवार्यता महिलाओं, पहली पीढ़ी के वकीलों व आर्थिक रुप से कमजोर अभ्यर्थियों को हतोत्साहित कर सकती है।**

अधिवक्ता कुनाल यादव के माध्यम से दायर याचिका में कहा गया है कि तीन साल की अनिवार्य वकालत के नियम अभी नहीं, बल्कि उसे वर्ष 2027 से ही लागू किया जाना चाहिए। इससे हाल ही में विधि स्नातक हुए (2023-2025) विद्यार्थी अनुचित तौर पर प्रभावित नहीं होंगे, जिन्होंने पिछले पात्रता मानदंडों के अनुसार तैयारी की थी।

शीर्ष अदालत के फैसले पर याचिका में कहा गया,ऐसे नए विधि स्नातकों की संख्या या सफलता दर पर कोई विचार नहीं किया गया, जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से न्यायिक सेवाओं में अच्छा प्रदर्शन किया है और प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद न्यायपालिका में प्रभावी ढंग से काम किया है। ऐसे तथ्य के अभाव में, यह निर्णय (शीर्ष अदालत का) संवैधानिक आवश्यकता का उल्लंघन करता है।

याचिकाकर्ता ने यह भी तर्क दिया कि तीन साल की आवश्यकता महिलाओं, पहली पीढ़ी के वकीलों और आर्थिक रूप से कमजोर उम्मीदवारों को हतोत्साहित कर सकती है, जिनके पास स्थिर न्यायिक पद हासिल करने से पहले अनिश्चित वकालत (कानूनी अभ्यास) को बनाए रखने के साधन नहीं हो सकते हैं।

याचिका में कहा गया,न्यायालय को शेट्टी आयोग की सिफारिशों की उचित रूप से सराहना करनी चाहिए थी, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि यदि युवा और मेधावी विधि स्नातकों को गहन प्रशिक्षण दिया जाता है, तो न्यायिक सेवा में प्रवेश के लिए बार में तीन साल के अभ्यास को पूर्व शर्त के रूप में निर्धारित करना आवश्यक नहीं हो सकता है।

याचिका में यह भी तर्क दिया गया कि इस निर्णय ने विधि स्नातकों के एक पूरे वर्ग को पूरी तरह से अयोग्य घोषित कर दिया जबकि यह प्रमाणित नहीं किया गया कि तीन साल के अभ्यास के बिना प्रत्येक विधि स्नातक को न्यायिक सेवा में प्रवेश के आवेदन के लिए अयोग्य माना जाए।

प्र.मंत्री मोदी आज कैनडा पहुंचेंगे

निकोसिया, 16 जून। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी साइप्रस की यात्रा पूरी करके आज शाम कैनडा के कैलगिरी के लिए रवाना हो गये। मोदी ने लार्नाका अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के पहले एक्स पर साइप्रस के नेताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने एक्स पर लिखा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साइप्रस की यादगार यात्रा पूरी की। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडोलिड्स और साइप्रस के लोगों को उनकी असाधारण गर्मजोशी और आतिथ्य के लिए धन्यवाद दिया। जायसवाल ने बताया कि प्रधानमंत्री जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए कैनडा जा रहे हैं।

> ■ **प्र.मंत्री कैलगिरी में आयोजित हो रही जी-7 शिखर वार्ता में शिरकत करेंगे।**

हर माह औसतन 17 बाघों की मौत हो रही है

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के डेटा के अनुसार, गत साढ़े 5 महीनों में 91 बाघ मारे गए हैं

नई दिल्ली, 16 जून।भारत में इस साल अवैध शिकार, क्षेत्रीय विवाद, मानव-वन्यजीव संघर्ष, ट्रेन दुर्घटनाओं और प्राकृतिक कारणों से अब तक 91 शाही बाघों की मौत हो चुकी है। यह एक खतरनाक आंकड़ा है जिसके मुताबिक देश में हर महीने औसतन लगभग 17 बाघों की मौत हो रही है।

राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) के आंकड़ों के अनुसार पिछले साढ़े पांच महीनों में अवैध शिकार, क्षेत्रीय विवाद, मानव-वन्यजीव संघर्ष, ट्रेन दुर्घटनाओं और प्राकृतिक कारणों से 91 बाघ मारे गए हैं। यह खतरनाक आंकड़ा बताता है कि हर महीने देश में औसतन 17 बाघ मौत के मुंह में समा रहे हैं।

अगर यही सिलसिला जारी रहता है तो इस साल बाघों की मौत के कुल मामलों की संख्या पिछले साल के 126 के आंकड़े को पार कर सकती है।

> ■ **प्राधिकरण के अनुसार बाघों की मौत के लिए अवैध शिकार, क्षेत्राधिकार की लड़ाई, मानव-वन्यजीव संघर्ष, ट्रेन हादसे तथा प्राकृतिक कारण जिम्मेवार हैं।**

गौरतलब है कि 2019 से 2023 तक की पांच साल की अवधि में समूचे भारत में कुल 628 बाघ मारे गए हैं।

इस बीच 2025 के पहले पांच महीनों में बाघो की मौत से जुड़े आंकड़े हर राज्य में असमान ही है जिसमें आधे से अधिक यानी 49 मौतें मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में हुई हैं जहाँ ट्रेन दुर्घटनाएँ और संक्रामक रोग भी इनकी मौत के जिम्मेदार पाये गये हैं1

अकेले महाराष्ट्र में ही 26 बाघों की मौत की सूचना है। उसके बाद मध्य प्रदेश में 24 बाघों की मौत हुई। अन्य प्रभावित राज्यों में केरल (नौ), असम (आठ), उत्तराखंड (सात), कर्नाटक और उत्तर प्रदेश (चार-चार) और तेलंगाना (एक) शामिल हैं।

आंकड़ो से जानकारी मिली है कि 42 बाघ अपने अपने संरक्षित स्थानों के अंदर ही मृत पाए गए जो प्राकृतिक कारणों या क्षेत्रीय लड़ाई के कारण हो सकते हैं। वहीं 35 बाघ इन संरक्षित क्षेत्रों के बाहर मरे पाए गए।

इस क्षेत्र में काम कर रहे एक गैर सरकारी संगठन 'भारतीय वन्यजीव संरक्षण सोसायटी' (डब्ल्यूपीएसआई) से उपलब्ध डेटा अधिक चिंताजनक है। यह दर्शाता है कि 2025 में बाघों की मौतों में वृद्धि हुई है जिसमें अब तक 120 मौतें दर्ज की गई हैं।

'बार-बार निरुत्साहित ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हाईकोर्ट में विचाराधीन है। इसलिए उन्होंने उनके मुवक्किल को अंतरिम जमानत देने की मांग की। इस पर कोर्ट ने स्पष्ट किया कि इसी तरह की याचिका पहले ही सुप्रीम कोर्ट की तीन-न्यायाधीशों वाली पीठ द्वारा खारिज की जा चुकी है। जस्टिस मेहता ने कहा, "हम इस याचिका के पीछे की रणनीति तथा दलीलों से कतई प्रभावित नहीं हैं। आपकी एसएलपी इस कोर्ट के तीन जजों की बैंच द्वारा पहले ही खारिज की जा चुकी है और अब आप अवकाश के दौरान एक बार खारिज किये जा चुके मामले में उसी राहत को फिर से पाने की कोशिश कर रहे हैं।" जब कोर्ट ने आदेश लिखवाना शुरू किया, तब रोहतगी ने याचिका वापस लेने की अनुमति मांगी, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया और याचिका वापस ले ली गई।

आरएएस मुख्य ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

की जा रही थी, पर परीक्षा स्थगित नहीं होने पर, अंतिम समय पर याचिका दायर की गई है। याचिका में यह भी कहा गया कि भारत-पाक के बीच टकराव के दौरान बॉर्डर एरिया में इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रभावित रही, लाइब्रेरी आदि को भी बंद कर दिया गया, जिससे अभ्यर्थी भी प्रभावित हुए। वहीं, एक्स सर्विसमैन कोटे में आवेदन करने वाले कई अभ्यर्थियों को पुनः ड्यूटी पर बुलाया गया था। इस लिए उन्हें भी अध्ययन का मौका नहीं मिला। याचिका में कहा गया कि आरपीएससी पूर्व में भी कई बार मुख्य परीक्षा को स्थगित कर चुकी है। एक भर्ती में तो मुख्य परीक्षा की तिथि से दो दिन पूर्व ही भर्ती स्थगित की गई थी। ऐसे में अभ्यर्थियों के हितों को देखते हुए, मंगलवार से होने वाली मुख्य परीक्षा को स्थगित किया जाए। वहीं, दूसरी ओर अदालत ने आरएएस भर्ती-2023 के साक्षात्कार में याचिकाकर्ता सुरेश मीणा को शामिल करने को कहा है।

सोनिया ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इसी प्रकार आईजीएमजी के डिप्टी मैडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. अमन चौहान ने भी आश्वस्त करते हुए कहा, "उनका ब्लड प्रेशर थोड़ा बढ़ा हुआ था, लेकिन कोई गंभीर बात नहीं थी। केवल सामान्य जाँचें की गईं तथा किसी विशेष जाँच या इलाज की आवश्यकता नहीं पड़ी।" हाल ही में, सोनिया गांधी के प्रायः अस्पताल जाने की खबरें देश भर में सुर्खियों में रही हैं, क्योंकि वे दशकों से भारतीय राजनीति का एक प्रमुख चेहरा रही हैं। हालांकि चिंता की कुछ खबरें सामने आईं, लेकिन दिल्ली और शिमला दोनों जगह से मिले चिकित्सकीय अपडेट यह दर्शाते हैं कि घबराने की कोई बात नहीं है।

करोना संक्रमण ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

छत्तीसगढ़ , दिल्ली, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में एक-एक मरीज की मौत हो गयी है। पिछले 24 घंटों में उत्तर प्रदेश, राजस्थान और कर्नाटक में जहां ज्यादा सक्रिय मामले सामने आये हैं वहीं राष्ट्रीय राजधानी, केरल, तमिलनाडु और गुजरात में सक्रिय मामलों में कमी आयी है। गत 22 मई को देश में कोराना के सिर्फ़ 257 एक्टिव थे जो आज बढ़ कर 7264 तक पहुंच गए। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक इस दौरान 13604 मरीज करोना के संक्रमण से ठीक हो गये हैं। पिछले 24 घंटों में करोना संक्रमण के सबसे अधिक सक्रिय मामले उत्तर प्रदेश से 37, राजस्थान से 30 और कर्नाटक से 18 मामले सामने आये हैं और दिल्ली में 33, केरल में 87 और महाराष्ट्र में 38 मामले कम हुए हैं।

भाजपा ने बांग्लादेश उच्चायोग पर प्रदर्शन किया

नयी दिल्ली, 16 जून। नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर के बंगलादेश स्थित पैतृक मकान में तोड़फोड़ के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कार्यकर्ताओं ने यहां सोमवार को प्रदर्शन किया।

गौरतलब है कि बंगलादेश के सिराजगंज जिले में स्थित टैगोर का घर अब एक संग्रहालय है। रविवार को एक विवाद के बाद भीड़ ने वहां तोड़-फोड़ की थी।

दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा के नेतृत्व में पार्टी कार्यकर्ताओं ने यहां स्थित बंगलादेश उच्चायोग के बाहर प्रदर्शन किया।

भाजपा कार्यकर्ता तीन मूर्ति चौक स्थित प्रधानमंत्री संग्रहालय पर एकत्र हुए और दो पुलिस बैरिकेड्स तोड़ते हुए बंगलादेश उच्चायोग की ओर बढ़ ने लगे, तो पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोका और चाणक्य पुरी थाने ले गयी। करीब आधे घंटे बाद सभी को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। इस मौके पर सचदेवा ने कहा कि भारत और बंगलादेश दोनों के ही राष्ट्रगान रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखे हैं।

> ■ **बांग्लादेश में टैगोर के पैतृक आवास पर की गई तोड़फोड़ के खिलाफ यह प्रदर्शन किया गया, भाजपा नेताओं ने कहा, बांग्ला संस्कृति का अपमान बर्दाश्त नहीं है।**

इज़रायल का "आयरन डोम" ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भारत लंबे समय से इज़राइली रक्षा तकनीक को मजबूत, युद्ध-परीक्षित और रणनीतिक रूप से विश्वसनीय मानता आया है। यह छवि अब भी काफी हद तक बरकरार है, लेकिन यह घटना स्पष्ट करती है कि कोई भी प्रणाली अचूक नहीं होती। किसी भी एक डिफैंस लेयर, चाहे वह इज़राइली हो, अमेरिकी हो, रूसी हो या स्वदेशी हो, पर अत्यधिक निर्भरता खतरनाक हो सकती है। भारत को इज़राइली मिसाइल रक्षा के अधिग्रहण को अब एक वास्तविक बहु-स्तरीय और अनुकूलनशील रक्षा ढांचे के निर्माण की आवश्यकता के साथ संतुलित करना होगा।

यह घटना स्वदेशी अनुसंधान और विकास (जैसे डीआरडीओ की आकाश और क्यूआरएसएम प्रणालियाँ) की महत्ता और आयातित व स्वदेशी प्लेटफार्मों के बीच तालमेल की जरूरत को भी रेखांकित करती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह भारत की अपनी कमजोरियों को भी उजागर करती है, विशेषकर इसके वायु सैन्य अड्डों, शहरी केन्द्रों और पश्चिमी व उत्तरी सीमाओं पर स्थित रणनीतिक परिसंपत्तियों पर सैचुरेशन हमलों के प्रति।

भारत को भविष्य की प्रौद्योगिकी-आधारित प्रतिरोध क्षमताओं में भी निवेश करना होगा, जैसे उच्च-ऊर्जा लेज़र, ड्रोन स्वार्म, एआई, संचालित हवाई क्षेत्र प्रबंधन, और इलैक्ट्रो मैगनैटिक युद्ध प्रणाली, जो पारंपरिक इंटरसेप्टर मिसाइलों की तुलना में अधिक तेज़ी से खतरों का जवाब दे सकती हैं।

इज़राइल-ईरान संघर्ष अब एक बेहद खतरनाक और अभूतपूर्व चरण में प्रवेश कर चुका है, जहाँ सीधे सैन्य हमले और लक्षित हत्याएँ सामने आ रही हैं, और यह इस क्षेत्र, और संभवतः विश्व, को एक बड़े संघर्ष की ओर ले जा सकता है।

13 जून 2025 को, इज़राइल ने "ऑपरेशन राइज़िंग लायन" लॉन्च किया, यह एक व्यापक हवाई हमला था, जिसमें ईरान के भीतर 100 से अधिक ठिकानों को निशाना बनाया गया। इनमें नतांज जैसे परमाणु संवर्धन केन्द्र, भूमिगत सैन्य परिसर, और प्रमुख कमांड सैंटर शामिल थे। यह हमला केवल रणनीतिक नहीं, बल्कि व्यक्तिगत भी था। इस हमले में ईरान के शीर्ष सैन्य अधिकारी मारे गए, जैसे आईआरजीसी कमांडर होसैन सलामी, सशस्त्र बलों के चीफ ऑफ स्टाफ मेजर जनरल मोहम्मद बाघेरी, वरिष्ठ रणनीतिकार गोलाम अली राशिद, और कई परमाणु वैज्ञानिक। ईरान ने इस हमले को राष्ट्रीय नायकों की सामूहिक हत्या बताया और कम से कम 78 लोगों की मौत तथा 320 से अधिक के घायल होने की पुष्टि की।

इसके जवाब में, ईरान ने मिसाइलों और ड्रोन से समन्वित हमला किया, जिसमें, कुछ रिपोर्टों के अनुसार, 100 से 200 प्रक्षेपास्त्र शामिल थे। इनके लक्ष्य थे, तेल अवीव और यरूशलेम जैसे शहरों का केंद्र और प्रमुख रक्षा प्रतिष्ठान। यह जवाबी हमला इज़राइल की प्रसिद्ध आयरन डोम प्रणाली में एक बड़ी सेंध था। कई मिसाइलें इंटरसेप्ट से बच निकलीं और सीधे शहरी व सैन्य ठिकानों को भेद गईं, जिनमें किरिया कंपाउंड (जो इज़राइल का पेंटागन कहा जाता है) भी शामिल है।

इसका मनोवैज्ञानिक असर तात्कालिक था। इज़राइली शहरों में सायरन गूंज उठे, नागरिक बंकरों में भागे, और आयरन डोम की अजेयता का भ्रम चकनाचूर हो गया।

ट्रंप, इज़रायल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अराग़ची ने भी, अपने एक कथन से इन राजनीतिक प्रयासों की पुष्टि की, जिसमें उन्होंने कहा कि ईरान अब भी परमाणु समझौते पर बातचीत के लिए तैयार है, यह ट्रंप के उस बयान का संभावित जवाब है जिसमें उन्होंने ईरान से परमाणु वार्ता की मेज पर लौटने को कहा था।

अराग़ची ने तेहरान में विदेशी डिप्लोमैट्स से कहा, "हम किसी भी ऐसे समझौते के लिए तैयार हैं जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना हो कि ईरान परमाणु हथियार न बनाए।"

1,500 कश्मीरी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

होगी, बल्कि यह भी साबित करेगी कि वह अपने नागरिकों, विशेष रूप से कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के लोगों, की सुरक्षा को कितनी प्राथमिकता देता है।

सहायता के लिए, ईरान में मौजूद भारतीय नागरिक भारतीय दूतावास की 24X7 आपातकालीन हेल्पलाइन पर संपर्क कर सकते है, या, विदेशों में भारतीय नागरिकों के लिए आधिकारिक पोर्टल के माध्यम से, अपनी स्थिति और संपर्क विवरण पंजीकृत कर सकते हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908